राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 6] तेरहवीं विधान सभा के छठे सत्र का पांचवां दिवस [संख्या : 4

शनिवार,

19 फरवरी, 2011

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे

राजस्थान विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत, अध्यक्ष, पदासीन)

अनुरोध

ओलावृष्टि से हुए नुकसान का आकलन

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): अध्यक्ष महोदय, ओलावृष्टि से राजस्थान के सैकड़ों गांवों में जो .....

श्री अध्यक्ष: मैं आपको निवेदन कर चुका हूं।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): नहीं, अध्यक्ष महोदय, संसदीय कार्य मंत्रीजी ने यहां विश्वास दिलाया था कि कल स्टेटमेंट होगा।

श्री अध्यक्ष: मुझे ध्यान है। मुझे ध्यान है, हम लोग समय निश्चित कर देंगे, आप निश्चित रहें।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): अध्यक्ष महोदय, समय आज तय करें।

श्री अध्यक्ष: आज उसके लिये समय नहीं है, समय उसके लिये निश्चित कर देंगे।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): अध्यक्ष महोदय, फिर तो अपन 23 तारीख को दुबारा मिलेंगे और जिनकी लाखों रुपये की फसल पूरी की पूरी चौपट हो गई, मैं समझता हूं कि...

श्री अध्यक्ष: सर्वे करवा कर सरकार के पास भेजा है, समय लगेगा। (व्यवधान) विराजें प्लीज, अंकित नहीं होगा।

श्री बंशीधर खण्डेला (खण्डेला): ×××

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): ×××

श्री अध्यक्ष: इस संबंध में सरकार को जानकारी प्राप्त करने के लिये निर्देश जा चुके हैं। पूरे राजस्थान का मामला है, सर्वे करने के लिये भी वह अपना प्रयास कर रहे हैं, आपके लिये समय निश्चित कर दिया जाएगा। मैं

(श्री अध्यक्ष)
आपको आश्वासन दे चुका हूं, कृपया इसमें समय खराब नहीं करें। श्री कालीचरण सराफ।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): आन ए पाइंट आफ इन्फोर्मेशन, साहब।

श्री अध्यक्ष: पाइंट आफ इन्फोर्मेशन के लिये व्यवस्था दी जा चुकी है, पहले आप स्लिप से बता दीजिए, किस पर बोलेंगे। पाइंट आफ इन्फार्मेशन के नाम पर चाहे जो बोलना, वह मैं अलाउ नहीं करूंगा। पहले आप पर्ची लिख कर देते हैं, उस पर विचार किया जा सकता है। अंकित नहीं होगा।

श्री मोहनलाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री अध्यक्ष: अंकित नहीं हो रहा है। अंकित नहीं हो रहा है। आप मुझे पहले स्लिप पर लिख कर दीजिए। मैं व्यवस्था दे चुका हूं, फिर भी आप बोलेंगे तो अंकित नहीं होगा।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री अध्यक्ष: अंकित नहीं हो रहा, माननीय सदस्य, अंकित नहीं हो रहा।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री अध्यक्ष: कब दी मैंने परमिशन, किस को दी, कहां दी? श्री कालीचरण सराफ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री अध्यक्ष: श्री कालीचरण सराफ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री पेमाराम (धोद): ×××

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): अध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के सचेतक लगातार अध्यक्षीय व्यवस्था को चैलेंज कर बोले जा रहे हैं और सदन का समय जाया कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के सचेतक महोदय को पाबंद करें। (व्यवधान)

श्री पेमाराम (धोद): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): ×××

घोषणा

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद के लिए शेष समय

श्री अध्यक्ष: विराजो, विराजो। एक निवेदन करना चाहता हूं, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर इंडियन नेशनल कांग्रेस को 7 घंटे 37 मिनट का समय आबंटित था, जिसमें से 4 घंटे 11 मिनट ले चुके हैं, 3 घंटे 26 मिनट बाकी हैं। भारतीय जनता पार्टी को 5 घंटे 55 मिनट आबंटित था, 5 घंटे ले चुके हैं, 55 मिनट शेष हैं। (व्यवधान) कृपया शांति रखें। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के 14 मिनट थे, 22 मिनट ले लिये हैं, समय शेष नहीं है। (व्यवधान) विराजो तो सही। आपने 14 मिनट में से 22 ले लिये हैं।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): समय इनका तो बीत गया। इनका बीत गया।

श्री अध्यक्ष: समय तो इनका ही है तो। इन दोनों का ही है समय। जनता दल (यू) के पास 5 मिनट थे, 5 मिनट शेष हैं। समाजवादी पार्टी के पास 5 मिनट थे, 5 मिनट शेष हैं। लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के पास 5 मिनट थे, 5 मिनट शेष हैं। निर्दलीयों के 59 मिनट में से 59 मिनट काम में ले चुके हैं। इसको यदि अपन मद्देनजर रखें तो इस दृष्टि से भारतीय जनता पार्टी के 11 लोगों की सूची आज है और आपके उप नेता कल बोलेंगे, 55 मिनट के हिसाब से केवल इन 11 को भी जोड़ूं तो 4-4 मिनट पाती आता है। (व्यवधान) उसमें तिवाड़ीजी का कल का अलग रह जाता है तब यह स्थिति है 4 मिनट की। कांग्रेस के पास में जो समय है उसमें आज जो 11 लोगों की सूची इन्होंने दी है, इसके हिसाब से इनका समय बैठता है 10 मिनट।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): साहब, आज तक ऐसा होता आया है कि एक इधर से बोलता है और एक उधर से बोलता है।

श्री अध्यक्ष: हां, हां। टाइम का तो जितना है उतना बता रहा हूं मैं तो, इसलिए कि आपको ध्यान रहे।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): आज तक यह टाइम की पाबंदी नहीं रही, साहब।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): आपकी मेहरबानी रही थी पांच साल तक।

श्री अध्यक्ष: अगर आप होने दो तो। ...(व्यवधान) आपके समझ में नहीं आएगा। आपके समझ में नहीं आएगी यह बात, विराजो।

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): माननीय सदस्यों को आप मौका दें बोलने का। हमारे अधिकारों को आप प्रोटेक्ट नहीं करेंगे तो कौन करेगा? यह कह कर आप छुट्टी मत करो, डिस्क्वालिफाई मत करो विधायकों की भावनाओं को।

श्री अध्यक्ष: आप मर्यादाओं का भी ध्यान रखें।

अभिभाषण

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर पिछले 2 दिन से सदन में चर्चा चल रही है, मैं भी उसमें अपने आप को शामिल करना चाहूंगा। अध्यक्ष महोदय, दो साल पहले जब प्रदेश में विधान सभा चुनाव के बाद कांग्रेस की सरकार बनी और माननीय अशोकजी गहलोत राजस्थान के मुख्य मंत्री बने, तब उन्होंने यह घोषणा की थी कि प्रदेश में भ्रष्टाचार मुक्त और गतिशील सुशासन की स्थापना की जाएगी। 3 जनवरी, 2009 को महामहिम ने जो अभिभाषण विधान सभा में पढ़ा, उसमें भी उनके श्रीमुख से यह कहलवाया गया कि राज्य में सुशासन एवं विकास हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। अध्यक्ष महोदय, सरकार को दो साल से अधिक हो गये, मैं पूछना चाहता हूं सरकार के नुमाइंदों से, दिल पर हाथ रख कर यह बात बताएं, कि क्या प्रदेश में भ्रष्टाचार मुक्त सुशासन की स्थापना हो गयी? क्या गतिशील सुशासन की स्थापना प्रदेश में हो गयी? आज यदि समीक्षा की जाए। दो साल के शासन की तो यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सरकार भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी हुई है। माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री की न तो कोई मंत्री सुनता है, न नौकरशाही के लोग सुनते हैं और ऐसा लगता है कि प्रदेश में कोई सरकार है भी या नहीं है। पिछले दिनों के माननीय मुख्य मंत्रीजी के बयानों से तो ऐसा लगता है कि हमारे प्रदेश के मुखिया कितने बेबस हैं, कितने लाचार हैं कि उनकी कोई सुनता नहीं है। कुछ भी करने की स्थिति में वह नहीं हैं। 15 सितम्बर को स्वास्थ्य चेतना यात्रा में माननीय

(श्री कालीचरण सराफ)

मुख्य मंत्रीजी ने कहा, निजी अस्पताल मरीजों को लूट रहे हैं। बिल बढ़ाने के लिये मरने के बाद भी मरीज को वेंटिलेटर पर रख लेते हैं। फिर पैसे बिना शव नहीं देते। कई बार तो मरीज जिन्दा नहीं रहा, फिर भी उसे वेंटिलेटर पर रखते हैं जिससे ज्यादा बिल बने। मैं पूछना चाहता हूं, सरकार के मुखिया हैं मुख्य मंत्रीजी, ऐसे डाक्टर्स की उनके पास सूचना है तो ऐसे डाक्टर्स के खिलाफ उन्होंने क्या कार्यवाही की? कोई कार्यवाही नहीं की। माननीय अध्यक्ष महोदय, 20 नवम्बर को प्रशासन गांवों के संग दूदू में शिविर हुआ था, उसमें मुख्य मंत्रीजी फर्माते हैं कि मिलावट कर लोगों की जिन्दगी से खिलवाड़ करने वालों को फांसी की सज़ा मिलनी चाहिये। ये लोग क्षमा योग्य नहीं हैं। 16 सितम्बर को एक वर्कशॉप में कहा, पेंशन के लिये चक्कर कटाते हैं बाबू। 6 अक्टूबर को एस पी कान्फ्रेंस में कहा, कोटा के चेचट थाने में महिला कांस्टेबल से ज्यादती की घटना गम्भीर है। थाने में ऐसी घटना से शर्मनाक कोई बात नहीं हो सकती। और अभी कोई 15-20 दिन पहले कहा, थानेदारों को मालूम रहता है कि उसके क्षेत्र में किसने क्या अपराध घटित किया है, पर वे उनसे मिले हुए रहते हैं इसलिये उनको पकड़ते नहीं हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरी समझ में नहीं आता कि राजस्थान का मुखिया राजस्थान का मुख्य मंत्री जब इतना बेबस और लाचार होगा कि थाने में थानेदार मिले हुए हैं, कि वे उनकी सुनते नहीं हैं, कि डाक्टर्स वेंटिलेटर पर मरीज को रख देते हैं मरने के बाद भी पैसा वसूल करने के लिये, कि बाबू रिश्वत लेकर ही पेंशन कागज, बनाते हैं, तो आखिर यह सदन पूछना चाहेगा, प्रदेश की जनता उनसे यह जानकारी लेना चाहेगी कि इस प्रकार की घटनाओं की जब उनको जानकारी है तो उसके बारे में उन्होंने क्या-क्या एक्शन लिया ? जब मुख्य मंत्रीजी यहां रिप्लाई दें तो मैं यह चाहूंगा कि वह इन बातों की रिप्लाई भी यहां पर दें।

माननीय मुख्य मंत्रीजी ही बयानों में आगे हों, ऐसा नहीं है। यहां तो सब मंत्री जो चाहते हैं, वही बोल देते हैं। अभी हमारे गृह मंत्रीजी बोलते हैं, 6 अक्टूबर को एस पी कान्फ्रेंस में, कि शहरों के थाने भू-माफियाओं की शरण स्थली और प्रापर्टी डीलर्स के दफ्तर बन रहे हैं। एस पी थानों का निरीक्षण नहीं करते। तो आप काहे के गृह मंत्री हो ? एक्शन क्यों नहीं लेते?

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य, सही बात कह दें तो भी आपको ऐतराज है और नहीं कहें तो भी आपको ऐतराज होता है।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): यह नहीं है। मैं तो यह कह रहा हूं कि गृह मंत्री राजस्थान का यह कहे कि थाने भू-माफियाओं की शरण स्थली बने हुए हैं, प्रापर्टी डीलर्स के दफ्तर बने हुए हैं और एस पी उनका निरीक्षण नहीं करते, तो आखिर आप क्या कर रहे हो? क्यों नहीं एस पी को आप निर्देश देते हैं? या तो यह कहो कि एस पी हमारे निर्देश मानता नहीं, और यदि मानता है तो उनको कहिये कि यह शरण स्थली मत बनने दो, अपराधियों के दफ्तर मत बनने दो, निरीक्षण करो। जो इस प्रकार के दोषी अधिकारी हैं, उनके खिलाफ एक्शन लीजिये। केवल कहने से काम नहीं चलेगा।

अब आप देखिये, अमीन खांजी, एक वह मंत्री थे। उन्होंने तो कमाल कर दिया। उन्होंने कहा, जब वह मंत्री थे, कि पुलिस 7 लाख रुपये लेकर मर्डर को एक्सीडेण्ट में बदल देती है। हमें नहीं चाहिये ऐसी व्यवस्था। ऐसी व्यवस्था नहीं चाहिये तो आप इधर आ जाओ। उधर तो ऐसी ही व्यवस्था होगी।

हमारे संसदीय सचिव हैं गिर्राज सिंह मलिंगा, वह क्या बोलते हैं? धौलपुर एस डी ओ और डाक्टर्स से डकैत 51-51, उनको यह भी पता है, 51,000-51,000 रुपये वसूल रहे हैं। कार्यवाही से पहले डकैतों को उसकी सूचना पहुंच जाती है कि उनके खिलाफ कोई कार्यवाही होने वाली है। यह गिर्राज सिंहजी मलिंगा फर्मा रहे हैं। संसदीय सचिव हैं आपकी सरकार में। मतलब मेरी समझ में नहीं आता, इस प्रकार के गम्भीर आरोप सरकार में बैठने वाले लोग लगा रहे हैं...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: आप विराजें, माननीय सदस्य। आप इंटरवीन नहीं करें।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): डिस्टर्ब मत करो। हमारे शिक्षा मंत्रीजी, उनका तो कुछ कहना ही नहीं है। उनके खिलाफ तो एक पोस्टर छपा है। यह देखिये, पोस्टर छपा है। पहले तो वह बयान देते हैं और फिर कहते हैं कि गलती हो गयी, मैं माफी मांगता हूं। पहला बयान इन्होंने दिया, लुगाई के घाघरे के नाड़े के पास स्कूल खोल दूं। हद कर दी। यह शिक्षा मंत्रीजी कह रहे हैं। फिर दूसरा फर्माते हैं, प्रदेश में कोई गरीब ही नहीं है। दिन में तीन-तीन बार ड्रेस बदलते हैं, कारों में सफर करते हैं। फिर कहा कि मेरा मतलब यह नहीं था। पंचायत सम्मेलन में गये नागौर में तो वहां फर्माया कि नर्स बाई की चोटी अब आपके हाथ में है। मैं मुख्य मंत्रीजी को पूछना चाहता हूं, उनका

(श्री कालीचरण सराफ)

मंत्रिमंडल है कि कोई सर्कस, क्या है यह? मतलब जंचे तो बोल देते हैं। और उसके बाद मुख्य मंत्रीजी की तरफ से कोई जवाब नहीं आता..

श्री देवी सिंह भाटी (कोलायत): मुख्य मंत्रीजी ने जवाब दिया है न!

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): क्या जवाब दिया? अब आप देखिये हमारे खाद्य मंत्रीजी बाबूलालजी नागर, हमने जांच नहीं बैठायी, हमने मांग भी नहीं की, जब भ्रष्टाचार के इन पर आरोप लगे, प्रधानमंत्री कार्यालय से इनके खिलाफ ए सी डी जांच बैठायी गयी। अखबारों में आया। ए सी डी ने इनसे फाइल मंगायी, फाइल नहीं भेजी। उसके बाद भी हमारे मौनी बाबा, मुख्य मंत्रीजी ने कोई एक्शन नहीं लिया। इतने प्रिय हैं कि इनको वह हटा नहीं सकते, कोई दवाब है, तो कम से कम इनका विभाग ही बदल देते। कैसे निष्पक्ष जांच होगी? प्रधानमंत्री कार्यालय के निर्देश पर ए सी डी की जांच और उसके बाद भी कोई एक्शन नहीं!

हमारे परिवहन मंत्रीजी, उन्होंने तो कमाल ही कर दिया। परिवहन विभाग में पर्चियां चलना तो आम बात है लेकिन मंत्रिमंडल की मीटिंग में परिवहन मंत्रीजी बोलते हैं कि विभाग में नाम की पर्चियां भी चल रही हैं। उन्होंने मीटिंग में पर्ची भी पेश की मंत्रिमंडल में। उसकी जांच का क्या हुआ, क्या नहीं हुआ, वह पर्ची सही थी, गलत थी, इसके बारे में कोई पता नहीं। हमारे परिवहन मंत्री तो इतने लाचार हैं कि सार्वजनिक रूप से कहते हैं कि मेयर मेरी सुनती नहीं है। मैंने उनको फोन किया कि यह मेयर कांग्रेस की है या बी जे पी की है ? दुर्भाग्य तो यही है कि वह हमारी..

(समय-समाप्ति-सूचक घण्टी)

अभी तो शुरू ही नहीं किया, आपने तो घण्टी बजा दी?

श्री अध्यक्ष: 8 पर शुरू किया था, 17 हो गये। घड़ी मेरे सामने है।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): पहला वक्ता तो 15-20 मिनट बोलता है।

श्री अध्यक्ष: पहला, दूसरा थोड़े ही होता है! पहला तो हो चुका राजेन्द्र जी। पहला राजेन्द्र सिंहजी का हो चुका, आप बहुत लेट हो गये।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): प्रति दिन की बात होती है। प्रति दिन ही पहला होता है।

श्री अध्यक्ष: आप विराजो। पहला तो किसी का नम्बर आने ही नहीं देते यह। पहला तो इनका हो गया।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): अब, माननीय अध्यक्ष महोदय, एक नया शगूफा लाये हमारे मुख्य मंत्रीजी। उन्होंने कहा, सारे मंत्रियों को मैं निर्देश देता हूं कि वे अपनी सम्पत्ति की सार्वजनिक घोषणा करें। सम्पत्ति की सार्वजनिक घोषणा करो, बहुत बढ़िया बात है। हमने भी उसका स्वागत किया। पर वह सार्वजनिक घोषणा की, उसमें आपको मालूम है, 9 मंत्रियों ने दो साल पहले चुनाव लड़ने के समय जो एफीडेविट दिया था चुनाव आयोग में, उनकी एक पैसे की सम्पत्ति न तो घटी और न बढ़ी? उन्होंने उस समय सम्पत्ति का जो लेखा-जोखा पेश किया था...

श्री अध्यक्ष: तो आप घटाने में इंट्रेस्टेड थे कि बढ़ाने में ?

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): मैं बनिये का बेटा हूं, या तो 10 पैसे कम हो या 10 पैसे ज्यादा हो। बिलकुल इंटैक्ट वही रही। इससे ज्यादा मजाक क्या होगा? उनमें कौन-कौन मंत्री हैं? महीपालजी मदेरणा- न एक पैसा घटी, न एक पैसा बढ़ी। दूसरे बृजकिशोरजी शर्मा, गुरमीत सिंहजी कुन्नर, मुरारी लालजी मीणा, बीना काक, बाबूलाल जी नागर, भरोसी लालजी जाटव, डाक्टर जितेन्द्र सिंह और प्रमोद जैन....

श्री शांती कुमार धारीवाल (गृह मंत्री): आप सराफ हो, आपका शुभ नाम है कालीचरण सराफ और सराफ के पास जब कस्टमर आता है, कहता है कि पूरा एक तोला इसमें डालना तो पूरा एक तोला डाला जाता है। घटने और बढ़ने का क्या सवाल है ?

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): पर आपने न तो खाना खाया, न आप गाड़ी में घूमे, आपकी सम्पत्ति वैसी की वैसी? क्या तिजोरी में रख रखी है? वाह-वाह, क्या बात है! अध्यक्ष महोदय, इतना बड़ा मजाक! यानि जनता को...

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): कालीचरणजी, खाना खिलाने वाले और घुमाने वाले बहुत लोग हैं, उस सम्पत्ति को खर्च करेंगे क्या आपके लिये।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरा यह सुशासन की बात करते हैं। अपनी ब्यूरोक्रेसी पर इनको विश्वास नहीं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि 33 जिले हैं राजस्थान में और दो साल में 111 बार कलक्टरों का ट्रांसफर। कई तो ऐसे कलक्टर हैं जो 15 दिन

(श्री कालीचरण सराफ)

रहे। कोई एक महीना रहा, कोई दो महीने रहे। अभी हमने पढ़ा कि नागौर के कलक्टर थे सुमित शर्माजी, उनका ट्रांसफर कर दिया। वह क्यों कर दिया, पता नहीं। वहां की जनता ने आन्दोलन किया कि यह ईमानदार अधिकारी हैं, इनको यहीं पर रखो। बंद का आह्वान किया, पर कुछ नहीं। अभी झुंझुनूं में मुग्धा सिन्हा, हमारे सूरजगढ़ से आने वाले माननीय विधायक हैं, उन्होंने अख़बार में कहा कि हां, मैंने करवाया है ट्रांसफर, मेरे से अटक गई थी तो मैंने ट्रांसफर करवा दिया। यह राजनीतिक दखलंदाजी यदि प्रशासनिक कामों में चलेगी तो बताने की आवश्यकता नहीं है कि किस प्रकार की व्यवस्था हम इस प्रदेश में करना चाहते हैं। सुशासन की बात करते हैं, अब आप देखिये, अधिकारियों की क्या स्थिति है।

श्री अध्यक्ष: कृपया समाप्त करें।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): बोलने दें, साहब।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): अधिकारियों के वकील क्यों बन रहे हो, जनता के वकील बनो। अधिकारियों के वकील बन रहे हो, जनता के वकील बनो।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में अधिकारियों की क्या स्थिति है? 1700 अफसर होने चाहिए, उसमें से साढ़े तीन सौ पद अभी तक खाली हैं। इनको कैसे भरा जाएगा, क्या प्रक्रिया होगी, उसके बारे में सरकार चिंतित है कि नहीं है? आप देखिये, आई.ए.एस. अधिकारी, कुल 296 पद, 183 कार्यरत हैं, 113 पद खाली हैं। आई.पी.एस. के 205 पद हैं और 163 पद कार्यरत हैं, 42 पद खाली हैं। आई.एफ.एस. के 143 पद हैं, 96 भरे हुए हैं और 48 पद खाली हैं। आर.ए.एस. के 1050 पद हैं उसमें से 857 तो भरे हुए हैं और 193 खाली हैं। एक बात और जोरदार की हमारे मुख्य मंत्रीजी ने कि कई जगह आर.ए.एस. को कलक्टर बना दिया। अब जिले में कलक्टर तो आर.ए.एस. और उसके नीचे होता है जिला परिषद का सी.ई.ओ., वह आई.ए.एस.।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): कौन से जिले हैं, जरा जिले का नाम बताओ। (व्यवधान) माननीय सदस्य, ऐसा जिला कोई हो तो बताओ न प्लीज। (व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): विराजें आप। आपकी नालेज में तो है। (व्यवधान) विराजें आप। (व्यवधान) बैठो।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): आप सदन में बोल रहे हैं। सदन में बोल रहे हैं, बैठने की क्या बात है।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): कोटा।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): एक जिला भी ऐसा हो तो बताएं। नाम बताओ किसी जिले का।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): विराजें, विराजें, आप विराजें।

श्री बनवारीलाल सिंघल (अलवर शहर): दौसा।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): आपको जानकारी नहीं है। बहुत वरिष्ठ हैं आप। आप एक जिले का नाम बताओ।

श्री अध्यक्ष: विराजें, कृपया। आप कृपया विराजें।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): पता है इनको, बीच में डिस्टर्ब करना है इनको तो। सुशासन की बात करते हैं और एक लाख 33 हजार पद सरकारी कर्मचारियों के यहां पर खाली हैं। उनको कैसे भरा जाएगा? पिछले तीन साल से सुन रहे हैं 50 हजार लोगों को नौकरी दी जाएगी। फिर कहते हैं कभी, 30 हजार को नौकरी दी जाएगी। हमारे शिक्षा मंत्रीजी तो बोलते हैं, बस अब दे दी। मैं पूछना चाहता हूं कि पिछले 2 साल में आपने जो एक लाख 33 हजार पद खाली हैं, उनको भरने के लिये क्या कार्यवाही की, क्या नहीं की, इसके बारे में आप जरा बताइये।

श्री अध्यक्ष: अब आप समाप्त करें।

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): आपने मुझे समय दिया इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष: मैं एक निवेदन करुंगा। मेरे पास चार स्लिप पाइण्ट आफ इंफोर्मेशन के नाम पर आई हैं। मैं अलाऊ तो कर रहा हूं लेकिन इतना निवेदन कर दूं पाइण्ट आफ इंफोर्मेशन की एक लाइन में आपको सूचना देनी है, भाषण नहीं देना है। अगर भाषण देंगे तो मैं अंकित नहीं होने दूंगा। श्री सुखरामजी।

सूचना

बसेड़ी के बिलौनी गांव की महिलाओं का विधान सभा पर धरना

श्री सुखराम (बसेड़ी): अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र में बिलौनी गांव है, बिलौनी गांव की तीन महिलाएं आज इस समय विधान सभा

(श्री सुखराम)

के गेट पर धरने पर बैठी हैं माननीय सांसद किरोड़ीलालजी मीणा के साथ में। अध्यक्ष महोदय, 13 अप्रैल, 2010 को भंवर डकैत ने बिलौनी में आकर खदान के जो मजदूर थे, उन मजदूरों को धमकाया। उनके हाथ-पैरों में कील ठोकी और उन तीनों मजदूरों को करौली का मण्डरायल क्षेत्र है, उस मण्डरायल क्षेत्र में जाकर उनकी हत्या कर दी। जो लास्ट सैशन था, उसमें भी यह मामला उठा था। तत्कालीन एस.पी. से काफी गुहार करने के बावजूद भी उन्होंने कोई कार्यवाही नहीं की थी। अध्यक्ष महोदय, उसके बाद बण्टी जो उनका पुत्र था, उसकी भी हत्या कर दी और उसको लेकर भी आज तक कार्यवाही नहीं हुई है। अध्यक्ष महोदय, वे महिलाएं आज माननीय मुख्य मंत्री महोदय से इच्छा-मृत्यु की मांग कर रही हैं, मेरा आपसे करबद्ध निवेदन है कि उन महिलाओं को जल्दी से जल्दी न्याय दिलाया जाए।

श्री अध्यक्ष: श्री प्रभुलाल सैनी।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि एक थ्री-पी योजना...

श्री अध्यक्ष: आप ध्यान आकर्षित कर रहे हैं कि पाइण्ट आफ इंफोर्मेशन है?

अमानक बीजों का वितरण

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): मैं इंफोर्मेशन दे रहा हूं लेकिन आपका सम्मान कर रहा हूं, इसलिये संक्षेप में निवेदन कर रहा हूं।

श्री अध्यक्ष: आप सूचना दे दीजिए, बस।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): एक थ्री-पी योजना है-त्वरित दलहन-तिलहन उत्पादन योजना, इस योजना के तहत राजस्थान में लगभग सवा छह हजार किसानों को राज्य सरकार के द्वारा मिनीकिट्स उपलब्ध कराये गये। उनमें उड़द के बीजों की जांच विभाग के अधिकारियों के द्वारा की गई, विभाग के अधिकारियों की टीम ने माना है कि उसमें मात्र 20 से 30 प्रतिशत बीज शुद्ध हैं, 70 प्रतिशत अशुद्ध, यानी अमानक, यानी मिस-ब्राण्ड बीज किसानों को दिया गया है। राजस्थान के किसानों को, माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत ज्यादा नुकसान इन्होंने नि:शुल्क बीज बांटकर दिया है। बड़े घोटाले के साथ में इसमें अनियमितता हुई है, आप इसमें कार्यवाही करावें।

श्री अध्यक्ष: समाप्त करें। श्री मोहनलाल गुप्ता।

बसेड़ी के बिलौनी गांव की महिलाओं का विधान सभा पर धरना

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका संरक्षण चाहूंगा। माननीय किराड़ीलाल मीणाजी से मैं मिलकर आया था और पाइण्ट आफ इंफोर्मेशन की मैंने स्लिप पहले भेजी थी। आपका कोई आशीर्वाद नहीं मिला, कोई बात नहीं, आगे आप आशीर्वाद बनाये रखें।

किरोड़ीलालजी मीणा हमारे सांसद हैं और हमारी मंत्रीजी के पति हैं। वे विधवाओं को लेकर आज विधान सभा के बाहर धरने पर बैठे हुए हैं। हमारी सरकार यह कहती है, गृह मंत्रीजी कहते हैं कि कानून व्यवस्था की स्थिति राजस्थान में ठीक है, अच्छी है, पहले से बेहतर हुई है। यह क्या कानून व्यवस्था की स्थिति है कि 3-3 लोगों को डकैतों ने मार दिया? उनकी विधवाएं यहां बैठी हैं। जो कोर्ट में गवाही देने गया व्यक्ति, उसको भी ट्रक से कुचल दिया गया, और सरकार सोई हुई है। हमारे सांसद को यहां धरने पर बैठना पड़ा। मंत्री के पति को धरने पर बैठना पड़ा है। आपको इंफोर्मेशन तो है ही, मैं गृह मंत्री महोदय से कह रहा हूं, नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दे दें। मैं त्याग-पत्र की मांग करता हूं।

श्री अध्यक्ष: श्री राजकुमार रिणवां। विराजें, विराजें, हो गया।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं यह कहना चाहूंगा कि यह बहुत गम्भीर मामला है। एफ.आई.आर. के बावजूद भी, इतना गम्भीर मामला है...

श्री अध्यक्ष: बात हो गई, भाषण नहीं। अंकित नहीं होगा, अंकित नहीं होगा। श्री राजकुमार रिणवां।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री अध्यक्ष: श्री राजकुमार रिणवां। पाइण्ट आफ इंफार्मेशन में भाषण होते हैं क्या? (व्यवधान) पाइण्ट आफ इंफार्मेशन में भाषण नहीं होते हैं।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: श्री राजकुमार रिणवां। आपकी बात सुन ली है। आपने सूचना दे दी है। (व्यवधान) आपने सूचना दे दी है, कृषि मंत्रीजी ने सुन ली है। विराजें आप।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: भाषण नहीं, भाषण नहीं। केवल सूचना देनी थी।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: अंकित नहीं होगा। श्री राजकुमारजी।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: श्री राजकुमारजी। पाइण्ट आफ इंफोर्मेशन में कोई वक्तव्य होता है क्या?

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: प्लीज, प्लीज, मेहरबानी। आप सीनियर सदस्य हैं, प्लीज विराजें।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: आप सीनियर सदस्य हैं, प्लीज विराजें।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: प्लीज। श्री रिणवांजी, बोलना नहीं है आपको? रिणवाजी, आपको नहीं बोलना? (व्यवधान) बोलिये फिर। (व्यवधान) दूसरे तरीके से उठाइये। पाइंट आफ इंफोर्मेशन में आपको अलाउ करने का मतलब यह नहीं है कि भाषण शुरू हो जाए। विराजिए।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: तो आप दूसरे तरीके से उठा लीजिए। (व्यवधान) तो आप दूसरे तरीके से उठा लीजिए। पांइण्ट आफ इंफोर्मेशन की भी अपनी सीमा होती है। आज माननीय सदस्यों को, कई सदस्यों ने आग्रह किया, शादियों में जाना है, समय का ध्यान रखिये।

श्री प्रभुलाल सैनी (हिण्डौली): ×××

श्री अध्यक्ष: श्री रिणवांजी।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री अध्यक्षः मैं समझ रहा हूं गम्भीरता आपकी। रिणवांजी।

लीबिया में राजस्थान के मजदूरों पर अत्याचार

श्री राजकुमार रिणवां (रतनगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान के 20 मजदूर लीबिया में काम कर रहे हैं। 6 महीने से महावीर कम्पनी में जो काम कर रहे थे, उन्हें मजदूरी नहीं मिली। जब मजदूरी मांगी तो उन्हें 10 दिन जेल भेज दिया गया। जेल से आने के बाद में वे इंडियन एम्बेसी के आगे बैठ गये। वहां से उन्हें 70 किलोमीटर दूर जंगल में छोड़ दिया गया। सात दिन से उनके मुंह में एक अन्न का दाना नहीं गया है, मरने की स्थिति में वे बीस लोग हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि इंडियन एमबेसी को आप कैसे भी वहां पर व्यवस्था करने के लिए निवेदन करें या आदेश दें कि वे कैसे भी भारत पहुंचें और उनकी तनखाह छह महीने की मिले। यहां परिवार के सब लोग रो रहे हैं और उनकी मरणासन्न स्थिति वहां पर हो रही है, यही मेरा निवेदन है।

श्री अध्यक्षः थेंक्यू। श्री सुरेन्द्र जाड़ावत।

अभिभाषण

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के पक्ष में बोलूंगा और जो सरकार का आइना राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में रखा गया...(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): माननीय अध्यक्ष महोदय, चादर ओढा दी क्या आपने?

श्री अध्यक्षः क्या?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): चादर ओढा दी क्या उनको?

श्री अध्यक्षः किनको?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): जाड़ावात साहब को?

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): शाल है, चादर नहीं है।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): सर्दी लग रही है उनको।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): नहीं तो शाल ओढा दी? (व्यवधान)

श्री कैलाश चन्द्र त्रिवेदी (सहाड़ा): घनश्यामजी भाई साहब, इस चादर ओढ़ने में तो करोड़ों-अरबों खर्च करें तो भी नहीं मिलती।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): हां, नहीं मिलती, यही तो कह रहा हूं मैं। (व्यवधान)

श्री कैलाश चन्द्र त्रिवेदी (सहाड़ा): बड़ी मुश्किल से पंडित ओढ़ाते हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: उप नेता महोदय, देखिये, चादर ओढ़ाने में आपका भी मंत्रोच्चाद आवश्यक है। बिना आपकी कृपा के चादर कहां से ओढ़ेंगे जब तक मंत्रोचार आप नहीं करेंगे?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): मैं भी कोशिश करूंगा।

श्री अध्यक्ष: आपकी अपनी कोशिश तो नहीं चल रही है, दूसरों की क्या करेंगे आप कोशिश?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): मेरी तो चलेगी भी नहीं। मेरी तो चलेगी भी नहीं, पर दूसरों के लिए करेंगे।

श्री अध्यक्ष: आप अपनी कोशिश चलाओ पहले। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): नहीं, मेरे लिए नहीं चलेगी, दूसरों के लिए चलेगी मेरी। ...(व्यवधान)...

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के कई माननीय सदस्यों ने वर्तमान सरकार की जो एक स्वस्थ आलोचना होनी चाहिए वह आलोचना नहीं करके पूर्ववर्ती सरकार का महिमा मंडन, गुणगान किया। माननीय अध्यक्ष महोदय, कोई भी सरकार जब बनती है तब राजस्थान की जनता को या किसी भी राज्य की जनता को उससे उम्मीदें होती हैं कि सरकार आई है, कानून व्यवस्था अच्छी होगी, आपसी सामाजिक सौहार्द रहेगा, सरकार के ऊपर भ्रष्टाचार की उंगलियां नहीं उठेंगी। उस आधार पर सरकारें बनती हैं और बदलती हैं। कुछ सरकारें अच्छा काम कर रही हैं तो वहां वे रिपीट भी हो रही हैं। लेकिन आपकी सरकार का पिछले दो दिन से जिस तरह से माननीय सदस्यों ने कहा, पांच वर्ष का कार्यकाल अच्छा होता तो 2008 के अन्दर राजस्थान की जनता उनके पक्ष में फैसला करती। ऐसे कारनामे हुए जो राजस्थान की जनता को नागवार गुजरे। किस तरह का माहौल था? किसानों को पानी मांगने के ऊपर गोलीबारी हुई। चुनावी वादे पूरे नहीं करने पर गुर्जर समाज ने आन्दोलन किया, उन पर गोलियां चलाई गईं। रावला, घड़साना, सोहला के अन्दर किसानों के ऊपर गोलियां चलाई गईं। अनुसूचित जाति, जनजाति के लोगों के ऊपर गोलियां चलाई गईं। लगभग 96

(श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत)

व्यक्ति इस गोलीकांड के शिकार हुए जिसमें 70 गुर्जर समाज के लोग थे। या तो अंग्रेजों के राज में ही नरसंहार हुआ या पिछली भाजपा सरकार के अन्दर ही नरसंहार हुआ। जो सामाजिक सौहार्द गुर्जर और मीणा समाज के बीच में था, उसका ताना-बाना तोड़ दिया गया। किस तरह के फैसले उस वक्त हुआ करते थे, उसका प्रत्यक्ष प्रमाण वर्तमान सदन के अन्दर विराजे हुए लोग भी हैं। केबिनेट की जब बैठक होती थी, उनकी नाराजगियों के तहत वे केबिनेट की बैठक में शामिल नहीं होते थे, उसका बहिष्कार करते थे। मुख्य मंत्रीजी उनको फैसलों से अवगत कराती थीं। एक बाहरी व्यक्ति जो इस सदन का सदस्य नहीं है, मैं उसका नाम नहीं लेना चाहता, माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन फैसले वे करते थे। वे फैसले जो होते थे बहुत उच्च स्तर के ऊपर, केबिनेट के मंत्रियों को बताया जाता था कि तुम्हारी केबिनेट का फैसला यह हो चुका है। किस तरह से उस वक्त दहशत का माहौल था? क्या स्वायत्त शासन मंत्री की हालत की गई?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): अब तो दो साल हो गये आपको? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: बैठिये। आप बैठिये।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): अब तो यह विरुदावली बंद करो। दो साल हो गये, अब क्या कर रहे हो, वह बताओ न। ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष: विराजिए, माननीय सदस्य। आप व्यवधान डाल रहे हैं। (व्यवधान) इन्होंने किसी का नाम नहीं लिया।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): आप दो दिन से ...(व्यवधान) अभी आपके बोल रहे थे कि ...(व्यवधान)

श्री कालीचरण सराफ (मालवीय नगर): आप तो अपनी बोलो। हमने क्या किया, उससे क्या मतलब है?

श्री अध्यक्ष: बोलने दीजिए। बोलने दीजिए।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): अभी माननीय सदस्य बोल रहे थे कि मंत्री किस तरह से बोल रहे हैं। कटारिया साहब ने कहा कि मेरी एक सिपाही को बदलने के अन्दर नहीं चलती थी जब गृह मंत्री थे। किस तरह के हालात रहे हैं? भ्रष्टाचार की बात करते हैं। हमने आरोप नहीं लगाया, आपके ही दल के बहुत बड़े नेता ने आप पर आरोप लगाया। किस तरह से आमेर की हवेलियां बिकीं? पूरा राजस्थान जानता है कि 90 'बी' किस तरह से आई।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): तो फिर चुप क्यों बैठे हो? कराओ न जांच, अब तो सरकार लिए बैठे हो, क्यों हाथ पर हाथ धरे बैठे हो? क्या हुआ माथुर कमीशन का? कराओ न जांच। (व्यवधान)

(समय : 11.35 बजे)

(मेजर ओ.पी. यादव, सभापति, पदासीन)

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): आपके मंत्रियों की भाषा थी कि- 'जो आया है वह जाएगा।' तो, माननीय सभापति महोदय, दो दिन से एक ही चीज को बोले जा रहे हैं। स्वस्थ आलोचना होनी चाहिए। स्वस्थ आलोचना के माध्यम से प्रतिपक्ष का कर्तव्य बनता है कि वह सरकार की उन नीतियों के ऊपर कटाक्ष करे जिन नीतियों के तहत सरकार बनी है।

आदरणीय मुख्य मंत्री अशोकजी गहलोत बने, उन्होंने गांव, गरीब और किसान को समर्पित पांच वर्ष देने की बात कही। उन्होंने पारदर्शी, संवेदनशील और जवाबदेह सरकार की बात कही। उसमें वह खरा उतर रहे हैं। आज गांव, गरीब और किसान के हित के अन्दर फैसले हो रहे हैं। बनते ही अगर उनके नक्शे-कदम अच्छे नहीं होते तो लोक सभा के अन्दर 25 में से 20 सीटें राजस्थान की जनता नहीं देती। पंचायती-राज के अन्दर सफलता नहीं देती। स्वायत्त शासन के अन्दर सफलता नहीं देती। स्वायत्त शासन जो कि शहरों का प्रतिबिम्ब है, उसके अन्दर एक चरण नहीं, दो चरण नहीं, तीन चरणों के चुनाव के अन्दर शहरी जनता ने कांग्रेस के पक्ष के अन्दर फैसला दिया है, कांग्रेस के नुमाइंदों को जिताया है।

इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगा, माननीय सभापति महोदय, यह जिन नीतियों पर सरकार बनी है, उनके ऊपर चल रही है। मेरा प्रतिपक्ष के सभी सम्माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि आप स्वस्थ आलोचना करें ताकि सरकार की अगर कोई गलती है तो वह सही होकर ठीक काम कर सके। लेकिन केवल पुरानी बातों को दोहराना, आज, माननीय सभापति महोदय, मुख्य मंत्रीजी ने नब्ज पहचानी कि राजस्थान सबसे ज्यादा ऊर्जा के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। अगर ऊर्जा नहीं होगी तो न तो किसान ट्यूबवैल से पानी खेतों तक पहुंचा सकेगा, न कल-कारखाने लग सकेंगे और न औद्योगिक विकास हो सकेगा। उन्होंने केबिनेट का गठन नहीं हुआ, उसके पहले ही सुपर क्रिटिकल पावर सैक्टर के अन्दर फैसले किये, उन्होंने फैसला किया कि 635 मेगावाट के चार कारखाने लगाए जाएंगे- दो निजी क्षेत्र के अन्दर और दो सरकारी क्षेत्र के

(श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत)

अन्दर। अभी वह फैसला क्रियान्वित भी होने जा रहा है। बांसवाड़ा में जहां पर रेलवे लाइन नहीं जा पा रही है, वहां पर सरकार ने फैसला किया है कि सरकार अपने खर्चे के ऊपर रेलवे लाइन बिछाएगी। उन्होंने पिछले दो वर्ष के अन्दर दो हजार मेगावाट से अधिक ऊर्जा का उत्पादन किया है और इस वर्ष दो हजार मेगावाट के लगभग ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य हासिल करने सरकार जा रही है। 12वीं पंचवर्षीय योजना के अन्दर 11000 मेगावाट बिजली उत्पादन का सरकार ने लक्ष्य रखा है। उत्पादन के साथ-साथ तंत्र को मजबूत करने की बात भी कही है। 765 के दो सब स्टेशन सरकार बनाने जा रही है, ये राजस्थान में पहले होंगे। 440 के पांच, 132 के 11, 132 के 39 और 220 के 11 । पंचायतों को जोड़कर ग्रामीण तंत्र को मजबूत करने के लिए हजारों की संख्या के अन्दर 33 के वी के ग्रिड निर्माण करवाए जा रहे हैं। उत्पादन, और तंत्र को विकसित करने के बाद में आठ लाख लोगों को घरेलू कनेक्शन दिए गए हैं। डेढ़ लाख किसानों को कृषि कनेक्शन दिए गए हैं। 1654 ढाणियों का विद्युतीकरण किया गया है। तो ऊर्जा के क्षेत्र के अन्दर राजस्थान की सरकार ने ऐतिहासिक कार्य किया है। ऊर्जा होगी तो जो निवेश रुक गया था पिछले पांच वर्ष के अन्दर, वह निवेश अब राजस्थान के अन्दर धीरे-धीरे आ रहा है।

माननीय मुख्य मंत्री महोदय 'राना' के सम्मेलन में गये, वहां पर जो प्रवासी भारतीय थे, उनको आमंत्रित किया गया कि आप आकर राजस्थान के अन्दर उद्योग लगाएं। हमारे चित्तौड़ में निम्बाहेड़ा तहसील के अन्दर लाफार्ज का एक सीमेंट का औद्योगिक संयंत्र आ रहा है। इसके साथ में 32 लोगों ने अपने प्रार्थना पत्र दिये हैं कि हमको लाइसेंस दिए जाएं। इनके समय पर केवल, केवल; केवल यू.डी.बी. नाम की एक संस्था जो है, अच्छी तरह से उसकी सेहत जरूर मजबूत हुई। उस वक्त जो निवेश आमंत्रित हुआ, जमीनों का 90 'बी' का जो कारोबार चला, उसके तहत उनका उद्योग-धंधा फला-फूला है। उन उद्योगों पर ध्यान नहीं दिया गया जिन उद्योग धन्धों से राजस्थान का सर्वांगीण विकास हो सकता है। आज बात करते हैं राजस्व शिविर की...

श्री सभापति: कृपया आपस में बात न करें।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): राजस्व शिविर का मखौल उड़ाया गया। यह राजस्व शिविर गांव, गरीब और किसान को समर्पित था। अगर राजस्व शिविर अच्छे नहीं होते तो, सभापति महोदय, पूरे राजस्थान के अन्दर पंचायत मुख्यालय पर प्रदर्शन होते। मैं एक-एक पंचायत मुख्यालय पर

(श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत)

गया हूं, 45 ग्राम पंचायतें हैं, हर पंचायत मुख्यालय पर गया हूं। राजस्थान के मुख्य मंत्री ने हर जगह जाकर मानिटरिंग की है।

श्री सभापति: कृपया समाप्त करें।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): समाप्त कहां, साहब, अभी तो शुरू हुआ है। सभापति महोदय, मैं पहला वक्ता हूं, आप मेहरबानी करो। आप समय देंगे तो बोलूंगा, आप समय नहीं देंगे तो नहीं बोलूंगा। मैं आपसे निवेदन करूंगा, मैं पहला वक्ता हूं और यह परिपाटी है कि पहले वक्ता को बोलने का वक्त दिया जाए।

श्री रविन्द्र सिंह बोहरा (राजाखेड़ा): यह कैसा जवाब है? कल हम बोल रहे थे, आपने रोक दिया था। कल हम बोल रहे थे तब आपने रोक दिया था। समय नहीं था हमारे लिये। यह कैसा जवाब है?

श्री सभापति: अब क्या बात है?

श्री रविन्द्र सिंह बोहरा (राजाखेड़ा): सभापति महोदय, यह दो तरह का जवाब क्यों?

श्री अब्दुल सगीर खां (धौलपुर): सभापति महोदय, जब हम बोलते हैं तो आप हमें टोकते हैं। अब सभापति महोदय से आप टाइम मांग रहे हैं। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र सिंह बोहरा (राजाखेड़ा): मैंने आपसे बहुत विनती की थी।

श्री सभापति: आप कृपया विराजें। मैंने व्यवस्था दे दी है। आप जारी रखिये।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): राजस्व शिविर में 87 लाख 12 हजार लोगों को फायदा पहुंचा है। राजस्थान की 6 करोड़ जनता में से 87 लाख लोग अगर किसी शिविर में फायदा उठाते हैं तो यह एक ऐतिहासिक सफलता है राजस्व शिविर की। राजस्व शिविर में उन गरीबों को फायदा हुआ है जो अलग-अलग विभागों में दर-दर भटकते थे। एक ही छत के नीचे 18 विभाग आये। मैं राजस्थान के सभी सरकारी कर्मचारियों को भी धन्यवाद दूंगा, सभापति महोदय, कि मुख्य मंत्रीजी की भावना के अनुरूप उन्होंने सुबह नियत समय पर पहुंचकर काम किया। दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्रों में भी शिविर लगे हैं, लेकिन नियत समय पर पहुंचते थे और देर रात्रि तक अगर किसी पंचायत मुख्यालय पर बिजली गुल हो गयी तो लालटेन की रोशनी के अन्दर भी

(श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत)

उन्होंने काम सम्पादित किया। गरीब आदमी इस शिविर में आशा लेकर आया था। जब वह शिविर में आया तब उसकी आंखों में आंसू थे, आंसू इस बात के थे कि पहले भी शिविर लगे, लेकिन हमारे काम नहीं हुए। मुझसे लोग पूछते थे, क्या इस शिविर में काम होगा। पर जब वे जाते तो उनकी आंखों में खुशी के आंसू हुआ करते थे। सभापति महोदय, यह राजस्व शिविर की सफलता है।

श्री सभापति: कृपया समाप्त करें।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): फिर तो बोलूंगा ही क्या? सभापति महोदय, थोड़ा तो समय दें।

श्री सभापति: आपसे सहयोग की अपेक्षा ज्यादा है।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): आप थोड़ा तो समय दें।

श्री सभापति: आपसे सहयोग की अपेक्षा ज्यादा है।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): मैं सहयोग करूंगा, थोड़ा तो बोलने दो आप।

श्री सभापति: कृपया समाप्त करें।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): सभापति महोदय, मेरे किस तरह के काम हुए हैं? मेरे विधान सभा क्षेत्र के अन्दर सोनगर पंचायत है, उसके अन्दर एक गांव है बुजुर्गों की खेड़ी, उसके एक परिवार के 6 में से 5 व्यक्ति विकलांग थे, एक परिवार में 3 के 3 बच्चे मूक-बधिर थे। उनको मालूम ही नहीं था, सरकारी योजनाएं क्या होती हैं। आप खुद अन्दाजा लगा लें कि 6 में से 5 विकलांग हों तो उस परिवार की क्या स्थिति होगी। जिस परिवार के अन्दर 3 के 3 बच्चे मूक-बधिर हों, उस परिवार की क्या स्थिति होगी। उनके आस्था कार्ड बनाये गये। उनको मालूम पड़ा कि सरकार की कोई योजना है। इन योजनाओं की जानकारी देने के लिये राजस्व शिविर लगाये गये। हजारों लोगों के भूमि रूपान्तरण के केसेज बंद पड़े हुए थे। एक बिलया गांव है, सभापति महोदय, वहां के लोगों के 50 साल से आवासीय पट्टे नहीं बने। नबी पंचायत का गांव है, वहां 300 आदमियों का फैसला किया गया कि आवासीय पट्टे बनाये जाएंगे। राजस्व शिविर के अन्दर गांव, गरीब और किसान लोगों को फायदा हुआ है। इसी तरह, सभापति महोदय, पंचायती राज को मजबूत किया गया है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): सभापति महोदय, स्वायत्त शासन मंत्री और संसदीय कार्य मंत्री आसन और जो माननीय सदस्य बोल रहे हैं, उनके बीच में घूम रहे हैं। एक नहीं, तीन बार जैसे कोई रामनिवास बाग में घूम रहे हों, क्या है यह?

श्री शांती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन मंत्री): मैं तो सेंट्रल पार्क में जाता हूं।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): यह सेंट्रल पार्क नहीं है, यह विधान सभा है। विधान सभा की मर्यादा होती है।

श्री शांती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन मंत्री): आऊंगा तो सही न? आपके पास कोई और मसाले नहीं हैं क्या?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): हमारे पास तो आपकी कारगुजारियां ही हैं।

श्री शांती कुमार धारीवाल (स्वायत्त शासन मंत्री): कभी कारतूस, कभी क्या, कभी क्या, कोई मुद्दे ही नहीं हैं क्या आपके पास?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (सांगानेर): यह कारगुजारी पर्याप्त है इस सरकार के लिये आपकी। बहुत गलत बात है।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): सभापति महोदय, जो पंचायती राज पंगु बन चुका था, उसकी मजबूती के लिये पांच विभाग दिये गये। आज ये पांच विभाग हस्तान्तरित हो गये हैं और उन पांच विभागों का समन्वय कायम किया जा रहा है और इन पांच विभागों से गांव, गरीब और किसानों को बहुत बड़ा फायदा आने वाले वक्त के अन्दर होगा। आज नरेगा की प्रतिपक्ष के कुछ माननीय सदस्य आलोचना कर रहे थे कि मजदूरी 11 रुपये है। मैं मेरी विधान सभा का बताता हूं आपको, कि 15 हजार मजदूरों ने पिछले वक्त में नरेगा में काम किया गर्मियों में, उनकी मजदूरी 89 रूपये बैठी है। नरेगा के अंदर यह ऐतिहासिक काम हुआ है। नरेगा के अन्दर गांव की तस्वीर बदली है- गांव की सड़क बनी है, गांव के अन्दर तालाब बने हैं, गांव के अन्दर तलैया बनी हैं और 44 हजार टांके बनाये गये हैं। नरेगा की यह तस्वीर है। नरेगा के अन्दर आज आई.टी. सेंटर बन रहे हैं। आज आई.टी. सेंटर के माध्यम से आप देखियेगा, पंचायत मुख्यालय पर आई.टी. सेंटर बनेगा तो उस एक ही छत के नीचे बैंक भी होगा, उसमें वे सुविधाएं भी होंगी जो सुविधाएं वह शहर में जाकर प्राप्त कर सकता है। उन सारी की सारी सुविधाओं से इनको जोड़ा जाएगा।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

श्री सभापति: माननीय सदस्य, कृपया समाप्त करें।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): माननीय सभापति महोदय, चिकित्सा, शिक्षा, उद्योग, हर क्षेत्र के अन्दर मुख्य मंत्री की संवेदनशीलता का आपके कोई उदाहरण नहीं है। 8 फरवरी के दिन, सभापति महोदय, 4 हजार लोगों की प्रार्थना लेकर आये थे पूरे राजस्थान से, उनको बहुत अच्छे तरीके से सुना गया।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, आपसे सहयोग की अपेक्षा ज्यादा है, कृपया समाप्त करें।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): खींवाराम का प्रकरण उठाया गया।

श्री सभापति: मैं आदर करते हुए आपका नाम नहीं बोल रहा हूं, आप कृपया समाप्त करें।

श्री रघु शर्मा (केकड़ी): सभापति महोदय, यह भी पैनल में हैं।

श्री सभापति: नहीं, व्यवस्था तो सबके लिये बराबर होनी चाहिये आसन से तो।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): दो मिनट तो बोलने दो आप। दो मिनट तो और बोलने दो। मुझे अलाउ कर रहे हैं न?

संवेदनशीलता का उनका मुखौटा है। सभापति महोदय, संवेदनशीलता न तो पढ़ाने से आती है, न कोई इसका इलाज है। यह संवेदनशीलता आती है आदमी से, वह आदमी शुरू से गांधीजी के आदर्शों पर चले हैं, इसलिये संवेदनशीलता उनके अन्दर कूट-कूटकर भरी हुई है। मैं अपने विधान सभा क्षेत्र का आपको उदाहरण दूं। एक अरूण बरड़िया का अपहरण हो गया, मुख्य मंत्रीजी ने उसमें व्यक्तिगत रुचि दिखाकर जो विदेश में चला गया था, पहली बार राजस्थान की पुलिस विदेश के अन्दर गयी। अभी हाल ही में दीपेन्द्र सिंह राठौड़ नाम का एक हमारा नौजवान जिसके पिता बिड़ला सीमेंट में नौकरी करते हैं, उसका सोमालिया के दस्युओं ने अपहरण कर लिया मई, 2010 में। मैंने जब मुख्य मंत्रीजी को आकर पीड़ा बताई तो मुख्य मंत्रीजी ने व्यक्तिगत रुचि ली और वह व्यक्ति 20 दिसम्बर को सोमालिया के दस्युओं से मुक्त कराया गया। उन्होंने उच्च स्तर पर प्रयास किये, उसकी रिहाई कराई और आज वह सुरक्षित अपने घर पर लौट आया है। यह मुख्य मंत्रीजी की संवेदनशीलता है।

श्री नरपत सिंह राजवी (विद्याधर नगर): वह तो कम्पनी वालों ने पैसे दिये हैं, उसमें मुख्य मंत्रीजी ने कुछ नहीं किया है।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): मुख्य मंत्रीजी ने कुछ नहीं किया तो किसने किया? मुख्य मंत्रीजी ने व्यक्तिगत रुचि ली है।

श्री नरपत सिंह राजवी (विद्याधर नगर): यह सर्वविदित है, जर्मन कम्पनी के वह सर्वेन्ट थे, उस कम्पनी वाले ने वहां दिया है। सबका सब असत्य है। आप असत्य वाचन यहां पर कर रहे हैं।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): मैं आपको कहना नहीं चाहता, पूर्व उद्योग मंत्रीजी और चिकित्सा मंत्रीजी, आपके शासन में जो चित्तौड़ की हालत हुई, एक उद्योग आप लगा नहीं सके। आप हास्पिटल की क्या दुर्दशा करके गये। सीटी स्केन के लिये आपने कहा, मैं लगाऊंगा। ब्यावर से आ रही है सीटी स्कैन। वह सीटी स्कैन मशीन भी कांग्रेस शासन आने के बाद में मुख्य मंत्रीजी की कृपा से लगी है। बर्न यूनिट बनी है, रिहेबिलिटेशन सेंटर बना है। आप चिकित्सा मंत्री रहे थे, आज ...(व्यवधान)

श्री नरपत सिंह राजवी (विद्याधर नगर): वह कागजों में उद्‌घाटन कर रहे हैं। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: यह वाद-विवाद का समय है क्या?

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत (चित्तौड़गढ़): अपडेट किया हो तो आप बताइये। आपके टाइम में 108 भी नहीं आ सकी थी। वह भी इस शासन के आने के बाद में 108 आई है। आपके समय में उप खण्ड भदेसर बंद हो गया था।

श्री नरपत सिंह राजवी (विद्याधर नगर): वह पूरी योजना मैंने दी थी, क्या बात कर रहे हैं?

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

श्री सभापति: समाप्त करें। नहीं, अब आप समाप्त करें।

श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत(चित्तौड़गढ़): मुझे बहुत बोलना है। दो साल के अंदर इस सरकार के ऊपर, मुख्य मंत्रीजी की बात तो छोड़ दीजिये, भूतो न भविष्यति, कभी आरोप नहीं लगेगा, बल्कि मंत्रियों के ऊपर भी कोई भ्रष्टाचार का आरोप आज तक नहीं लग पाया है। बोल जाएं, कर जाएं लेकिन तथ्यात्मक प्रतिवेदन आज दो साल के अन्दर कोई नहीं दे सका है। जवाबदेह

(श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत)

सरकार है, पारदर्शी फैसले होते हैं। केबिनेट के सारे के सारे फैसले सामूहिक नेतृत्व के अन्दर होते हैं। कोई ऐसा फैसला नहीं है जो पर्दे के पीछे हुआ हो। मुख्य मंत्रीजी की मंशा है कि मंत्री भी पूरी सम्पत्ति का ब्यौरा दें। उन्होंने अधिकारियों को भी सलाह दी है। हम विधायकों की सम्पत्ति का ब्यौरा लिया जाना चाहिये ताकि सब दूध का दूध और पानी का पानी सामने आ सके। अशोक गहलोतजी के लिये कहते थे कि अशोक यानि अकाल, इतनी बारिश हुई, सभापति महोदय, कि खरीफ और रबी में पूरा राजस्थान हरियाली से पट गया है। पहली बार इतना खाद्यान्न उत्पन्न हुआ है राजस्थान के अन्दर, जो आज तक के इतिहास में पैदा नहीं हुआ। ऊपर का ईश्वर भी इनके ऊपर मेहरबान है। मैं अन्तिम एक शेर उनके लिये समर्पित करता हूं, सदन के नेता हैं-

'हजारों बरस नर्गिस अपनी बेनूर पे रोती है,

बड़ी मुश्किल से पैदा होता है चमन में दीदावर।

धन्यवाद।

श्री सभापति: श्री रोहिताश कुमार।

श्री रघु शर्मा (केकड़ी): सच-सच बोलना, आपसे यह सदन सच्चाई सुनने की उम्मीद रखता है।

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): माननीय सभापति महोदय, मैं आपका बहुत हृदय से आभारी हूं कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। माननीय सभापति महोदय, मुझे खुशी इस बात की है कि इस सदन के पक्ष के सदस्यों ने सभी ने कोई सुझाव न देकर, कोई अमैंडमेंट का संकेत न देकर भूरि-भूरि प्रशंसा की और विपक्ष ने अपनी विपक्ष की भूमिका को निभाते हुए अभिभाषण की आलोचना की। माननीय सभापति महोदय, यह गलत परम्परा पिछले एक दशक से इस सदन में पड़ती आ रही है, यह बड़ा चिन्ता का विषय है। माननीय सभापति महोदय, एक दशक पहले मंत्रिमण्डल के सदस्य या सत्तारूढ़ पार्टी का कोई सदस्य, राज्यपाल का अभिभाषण या बजट आता था और माननीय चन्दनमलजी बैद फाइनेंस मिनिस्टर होते थे, उनके खिलाफ उन्हीं की पार्टी के बहुत सारे सदस्य उसमें अमैंडमेंट कराते थे और तर्कसंगत बहस करते थे। मुझे खुशी थी इस बात की, राजस्थान की जनता बड़ी खुश हो रही थी कि इस 13वीं विधान सभा में केकड़ी

(श्री रोहिताश कुमार)

से आने वाले माननीय सदस्य ने पिछले पांच सत्रों में राजस्थान की जनता के सामने अमिट छाप छोड़ी। एक दशक से जो मामला पिछड़ रहा था, कोई बोल नहीं पा रहा था, हिम्मत नहीं कर पा रहा था, इस शख्स ने हिम्मत करके सत्तारूढ़ दल की जो गलतियां थीं, उनको बड़े साफ मन से, खुले हृदय से उजागर किया। परन्तु छठा सत्र आते-आते माननीय सदस्य का हृदय परिवर्तन हो गया। बहुत बड़ा हृदय परिवर्तन हुआ। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं मैंने भी इनको सुना, हालांकि हमारे मित्र हैं, पर मित्रता के पहले मैं सत्र को बहुत महत्व देता हूं। मैंने इनको राजस्थान के एक दिवंगत पूर्व माननीय सदस्य मोहन छंगाणीजी की संज्ञा दी, मैंने कहा, बड़ी खुशी है कि सदन में ऐसे बढ़िया वक्ता जो सही बात को कहते हैं, वह ..(व्यवधान)

(समय : 11.53 बजे)

(श्री सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत, सभापति, पदासीन)

श्री रघु शर्मा (केकड़ी): सभापति महोदय, कोई सत्र खतम हो गया क्या? माननीय, अभी तो दो दिन हुए हैं।

एक माननीय सदस्य: हृदय परिवर्तन फिर हो जाएगा।

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): मैं आपकी भावना का आदर करता हूं। माननीय सभापति महोदय, मैं मूल विषय पर आता हूं कि ...(व्यवधान) आप सुनिये।

माननीय सभापति महोदय, यह महामहिम राज्यपाल महोदय का अभिभाषण है, यूं कहिये कि कांग्रेस पार्टी के मुखिया और हमारे सदन के नेता के लिए सरकारी अधिकारियों द्वारा बनाया गया झूठ का पुलिन्दा जो कतई प्रैक्टिकल बातों पर आधारित नहीं है, इस सदन में महामहिम द्वारा पढ़ाया गया। केकड़ी से आने वाले माननीय सदस्य जिनमें राजस्थान की जनता को नई रोशनी, नई हिम्मत और नई दिशा नजर आ रही थी, उन्होंने सारे मामले को चौपट कर दिया। माननीय सभापति महोदय, इस अभिभाषण पर बहुत सारे सब्जेक्ट माननीय सदस्यों ने बोले। चिकित्सा पर बोले, शिक्षा पर बोले, नरेगा पर बोले, सड़क पर बोले, पर एक महत्वपूर्ण विषय ट्रांसपोर्टेशन, उस पर कोई बहस या चर्चा नहीं हुई। माननीय सभापति महोदय, इस विभाग का स्लोगन है चरैवेति-चरैवेति, चलते रहो, चलते रहो। अगर गति नहीं होगी, चलेगा नहीं तो राजस्थान तरक्की कैसे करेगा? ट्रांसपोर्टेशन नहीं होगा तो उद्योग कैसे लगेंगे?

(श्री रोहिताश कुमार)

ट्रांसपोर्टेशन का सिस्टम सही नहीं होगा तो व्यापारी लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे जा सकेंगे? समाज के लोग ब्याह-शादियां कैसे कर पाएंगे? इसकी एक निश्चित नीति होनी चाहिये। कांग्रेस पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में कहा था कि हम ट्रांसपोर्टेशन नीति लाएंगे, बहुत खुशी हुई थी, ट्रांसपोर्ट नीति निश्चित तौर पर बननी चाहिये। क्यों बननी चाहिये? तब 6 करोड़ के लगभग जनसंख्या थी और अब वर्ष 2010 है, मैं समझता हूं, पौने 7 करोड़ राजस्थान की जनता को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिये ट्रांसपोर्टेशन उपलब्ध होना चाहिये और उसकी निश्चित नीति बननी चाहिये। पर, माननीय सभापति महोदय, बड़े अफसोस की बात है कि इस सरकार का कार्यकाल उतरना शुरू हो गया, नीति की बात तो छोड़ो, परिवहन मंत्री यहां बैठे हैं, करीब 35 से 40 लाख यात्री एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते हैं, उनके ट्रांसपोर्टेशन की सुविधा के लिये इनके पास मात्र 4500 बसें हैं। 40-50 लाख यात्रियों के ट्रांसपोर्टेशन के लिये मात्र 4500 बसें, जिनमें भी खटारा और नाकारा बसें हैं। उनकी क्षमता कितनी है? 10-12 लाख पैसेंजर के लिये 4500 बसों की क्षमता नहीं है कि वे राजस्थान की गरीब जनता को ट्रांसपोर्ट मुहैया करा सकें। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, 35 लाख लोगों को आपने किसके भरोसे छोड़ रखा है? उनके पास साधन क्या है? एक तरफ इल्लीगल प्लाइंग के खिलाफ आपने अभियान चला रखा है। भंयकर अभियान चलाया। इल्लीगल प्लाइंग क्यों होता है? कोई लोग पागल हैं? इल्लीगल प्लाइंग इसलिये होता है कि जनता क्या करे। एक-एक जीप में 30-30, 40-40 आदमी बैठकर चलते हैं तो एक्सीडेंट भी होते हैं, लेकिन जान-बूझकर नहीं बैठते। वे इसलिये बैठते हैं क्योंकि उनको साधन मुहैया नहीं है। सरकार का ध्यान ही नहीं है इस ओर। यह इस राज्य के लिये एक महत्वपूर्ण समस्या है। अब आप बोलोगे, परिवहन मंत्री खड़े होकर यह जवाब देंगे कि हमारे पास प्राइवेट सैक्टर में बसें हैं। करीब 10-12 प्राइवेट सैक्टर में बसें स्टेट कैरिज परमिट पर चलती हैं। अधिकांश माननीय सदस्य गांव से आते हैं, कुछ शहर से जुड़े हैं पर 90 प्रतिशत लोग गांवों से आते हैं, आपको पता है, स्टेट कैरिज परमिट पर जो बसें चलती हैं, क्योंकि इनका रजिस्ट्रेशन नहीं होता इसलिये परमिट तो ये स्टेट कैरिज परमिट का लेते हैं लेकिन ये चलती हैं सारी बसें किस रोड पर? तो उन ग्रामीण लोगों का क्या होगा? आपने पेज 33 पर केवल पांच लाइनें लिख दीं

(श्री रोहिताश कुमार)

इस अभिभाषण में, कि 1300-1400 ग्राम पंचायतों को हम इसमें जोड़ेंगे। 9 हजार समथिंग ग्राम पंचायतें हैं, 978 को आप किनके भरोसे छोड़ेंगे?

(समय-समाप्ति-सूचक-घंटी)

(समय : 12.00 बजे)

सभापति महोदय, महत्वपूर्ण विषय पर बात कर रहा हूं। आप जब अपनी निर्धारित सीट से बोल रहे थे तब भी आसन से यही बात थी।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, साठ प्रतिशत ग्राम पंचायतें सड़कों से जुड़ी हुई हैं। एक लाख अस्सी हजार किलोमीटर सड़क राजस्थान की धरती पर साठ सालों में बनकर तैयार हो गयी, क्या आपने सोचा? 99 प्रतिशत ग्राम पंचायत हैडक्वार्टर सड़कों से जुड़ गये, क्या आपने ट्रांसपोर्टेशन की कभी सोची? आपका ध्यान कभी इस ओर गया? बिलकुल नहीं गया। मैं चाहता हूं इस सदन के माध्यम से, पक्ष हो या विपक्ष हो, सामूहिक रूप से सभी लोगों का दायित्व है कि सरकार पर दबाव बनाकर निश्चित ट्रांसपोर्ट नीति बनवानी चाहिए जिससे लोगों को साधन उपलब्ध हो सकें।

सभापति महोदय, मैं एक और निवेदन करना चाहता हूं कि बिजली के सैक्टर में बहुत बड़ी वाहवाही लूटी गयी। दो बार राजस्थान का बजट इस सरकार के माननीय मुख्य मंत्रीजी ने पेश किया, तीसरे की अब तैयारी है। प्रथम साल के बजट में 11वीं पंचवर्षीय योजना में आपने 18 हजार करोड़ के लगभग इस पवित्र सदन से ठप्पा लगवाया। 24 हजार करोड़ के लगभग चालू साल के बजट पर आपने ठप्पा लगवाया और बड़ी-बड़ी वाहवाही लूटी। वाहवाही किस बात की लूटी? कि हम राजस्थान को इतनी बिजली देंगे कि हमारे यहां तो वह खपत होगी ही होगी, जरूरतमंद लोगों को मिलेगी, वरन् इसको हम एक्सपोर्ट भी करेंगे। सरप्लस स्टेट घोषित करेंगे। कैसे सरप्लस स्टेट घोषित होगा? जब यह पंचवर्षीय योजना बनी, माननीय वसुन्धराजी ने 71 हजार के करीब का प्रारूप बनाकर तैयार किया। उसमें 35 पाइन्ट समथिंग का प्रावधान रखा बिजली के पेटे। आप क्या नयी बात कर रहे हैं? उसका सदुपयोग किया। वसुन्धराजी ने 11वां प्लान बनाते वक्त यह कहा था कि "At the end of 11th Plan, we will generate 12000 MW power at our own in this State. What happened? क्या होने जा रहा है? क्या हुआ उसका? आपके पास तो कोल लिंकेज की कोई व्यवस्था ही नहीं है, उसका अभाव है। कोल लिंकेज के अभाव से आप कहां से बिजली का टारगेट पूरा कर देंगे? आपने आंकड़ों में इन किताबों में तो

(श्री रोहिताश कुमार)

लिख दिया। बजट का कितना परसेंट एक्जीक्यूट हुआ? मुश्किल से 30-40 परसेंट हुआ। केकड़ी से आने वाले माननीय सदस्य और सिविल लाइन से आने वाले माननीय सदस्य आप दोनों जुझारू हो, खींच दो कन्धा और राजस्थान की गरीब जनता के भले की ठान लो, अगर नाम कमाना है, अगर आपको आगे की सीटों पर बैठना है तो। लेकिन फिर भी आप इतिहास नहीं रच पाओगे। इतिहास तो वही रचेगा जो वस्तुस्थिति के लिए राजस्थान की गरीब जनता का दर्पण बनकर यहां बैठेगा।

दूसरा मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि यह हमारी ब्यूरोक्रेसी पर डिपैण्ड करता है सारा। कोई नहीं है। ये सब बैठे हैं। हमारे गृह मंत्रीजी बहुत होशियार और इंटेलिजेंट हैं। घोड़ों की सवारी भी करना जानते हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जिस प्रकार जानवरों में सबसे तेज तर्रार और होशियार होता है अरबी घोड़ा, इसी प्रकार हमारी सोसायटी और सर्विसेज में सबसे इंटेलिजेंट और ताकतवर आई ए एस और आई पी एस होते हैं। हर कोई आदमी सवारी कर सकता है क्या? उठाकर धड़ाम से पटक देते हैं। शांति धारीवालजी जैसे घुड़सवार को भी। यह शाम को जब आते हैं तो हिलते-हिलते आते हैं। ये हिला देते हैं।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): शाम से आपका क्या मतलब है?

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): मैं यह कहना चाहता हूं कि आपके माननीय मुख्य मंत्रीजी की इन टाप क्लास सर्विस वालों पर कोई पकड़ नहीं है। उस पकड़ के अभाव में ये बरगलाते रहते हैं राजस्थान का झूठ का पुलिन्दा तैयार करके आप लोगों के द्वारा यहां पढ़वाकर और आप बेकार की वाहवाही लूट लेते हो।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): सभापति महोदय, आप एक बात और बता दो, आप मेरे बड़े भाई हो, पहले आप भी सरकार में मंत्री रह चुके हो। मैं समझता हूं, उस दौरान यह पुलिन्दा जब आया, वह जरूर आपसे सलाह करके बनाया गया होगा। (व्यवधान)

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): केकड़ी से आने वाले माननीय सदस्य, मुझे इस बात का गर्व है कि जिस शख्स के अण्डर में हम मंत्री थे, वह प्राइमरी स्कूल के हैडमास्टर की तरह मानिटरिंग करते थे। वह चाहे दिल्ली होते या मुम्बई, मंत्री की खाल खिंचाई कर देते थे इस असेम्बली में जो प्रोपर जबाव नहीं दे पाते थे। रात का खाना मंत्री लोग भूल जाते थे। सब कमेटियां

(श्री रोहिताश कुमार)

बना-बना कर बाकायदा हर विषय पर डिस्कस करते थे। मुझे गर्व है कि आज वह आदमी स्वर्ग में बैठा है, परन्तु उस आदमी ने इस राजस्थान की डेमोक्रेसी को, प्रजातंत्र को और गरीबों को देखा।

मैं एक और उदाहरण देना चाहता हूं, आपने जोरदार पाइन्ट उठा दिया। कभी भी शिड्यूल्ड कास्ट की बात आती थी, कैलाश मेघवालजी से बात नहीं करते थे। माननीय सुन्दर लालजी को उठाकर पूछते थे क्योंकि उनको पता था कि यह गरीब आदमी है और गांव का है। इसको गांव की असली सोच का पता है। कैलाशजी मेघवाल बड़े जरूर हैं लेकिन जरा ऊंची रीति-नीति के व्यक्ति हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि जब किसान की बात आती थी, उस समय बहुत सारे प्रोफेसर सांवर लाल जाट और कई बड़े बड़े नेता थे, लेकिन वह कभी उनसे नहीं पूछते थे। उनको पता था कि यह तो प्रोफेसर हैं, किताब पढ़कर विश्वविद्यालय पहुंच गये। जमींदार के घर में जरूर पैदा हुए हैं पर ये इकोनोमिक्स पढ़ते हैं या दूसरी किताबें पढ़ते हैं। वे सुजान सिंहजी से पूछते थे। ये सारी बातें हैं। कहा गया कि श्री राजेन्द्र राठौड़ और रोहिताश्वजी उनके सलाहकर थे। शर्म आनी चाहिए। हम उनके सलाहकार नहीं थे, हम तो उनके स्टेनलैस स्टील थे। मोहनजी छंगाणी और श्री कर्पूर चन्द कुलिशजी उनके सलाहकार थे। इतने बड़े-बड़े लोग उनके सलाहकार थे। मीडिया के लोगों से चर्चा करते थे तब जाकर वह बजट बनाते थे।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): सभापति महोदय, एक बात ईमानदारी से बता दो कि पिछली सरकार में स्टेनलैस कौन थे?

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): पिछली सरकार में मैं था नहीं, लेकिन इतना पता है कि पिछली सरकार के मुख्य मंत्री का विजन बहुत बड़ा था।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): स्टेनलैस। स्टेनलैस।

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): और ब्यूरोक्रेसी पर उनकी पूरी पकड़ थी।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): माननीय सदस्य, अभी आपने स्टेनलैस की बात कही, वह कौन था?

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): I don't know about anybody. I know only for me and my friend Rajendra Singh Rathor. We both were there as stainless steel of Hon'ble Bhairon Singh Shekhawat. I can only say this. सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं, गरीब जनता से संबंधित बात

(श्री रोहिताश कुमार)

है। माननीय धारीवालजी मैट्रो ट्रेन की बात कर रहे हैं, वह छह-सात किलोमीटर लम्बी चलेगी और उस पर 12 हजार करोड़ रुपये का खर्चा आएगा। यह पैसा कहां से आएगा। या तो आप कर्जा लेंगे या गरीब जनता पर टैक्स लगाएंगे। इस 12 हजार करोड़ रुपये से रोडवेज की बसें खरीदते तो जो रैस्ट आफ.... (व्यवधान)

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): यह बृज किशोरजी ने कहा क्या आपको?

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): बीस लाख पैसेंजर जिनका कोई धणी-धोरी नहीं है, उनके लिए रोडवेज की बसें खरीदते। गुजरात का हवाला मैं देना चाहता हूं, वहां पर कितनी रोडवेज बसें हैं? इसको आप प्रोफिट आर्गेनाइजेशन मत मानो। यह पब्लिक सैक्टर का एन्टरप्राइज है, यह राजस्थान की जनता की सुविधा के लिए है। इसको प्रोफिट आर्गेनाइजेशन मान लिया वर्तमान सरकार ने। इस प्रोफिट के चक्कर में गांव से सारी बसें विदड्रा कर लीं। आप मानो, आपके सैक्टर में गांव में कोई बसें नहीं हैं, सारी बसें विदड्रा करके प्रोफिटेबल रूट पर चलाने लग गये कि इसका मुनाफा आ जाएगा। इस मुनाफे से राजस्थान के खजाने का क्या होगा? खजाने में ऊंट के मुंह में जीरा। आप गरीब जनता को सुविधा दीजिए। माननीय मंत्री महोदय, आप संवेदनशील हैं, मैं आपको जानता हूं, आप एक ऐसे व्यक्ति के सुपुत्र हैं जिन्होंने राजस्थान क्या, इस देश को चलाया और हम जैसे नौजवानों को इस विधान सभा में बैठाया। आप उनके पुत्र हैं, आप समझिये राजस्थान की गरीब जनता की भावनाओं को।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): और धारीवाल साहब के बारे में क्या कहना है?

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): धारीवाल साहब, मैं जिन की तारीफ कर रहा हूं धारीवाल साहब भी उनको गुरु मानते हैं। Dhariwal Saheb, no doubt, is a very intelligent Minister. बहुत इन्टेलिजेंट मिनिस्टर हैं, कोई शक नहीं है। धारीवाल साहब में एक कमी है। कमी यह है कि इनके मन में तो कुछ है पर दबाव से, अण्डर प्रैशर यह जरा मन को मसोस कर चुप बैठे रहते हैं। विभाग तो इनको ऐसे दे दिये और अधिकारी इनकी मर्जी के खिलाफ लगा दिये जाते हैं। क्योंकि परफोरमेंस का आदमी है, कहीं यह परफोरमेंस नहीं दिखा दे, यह राजस्थान में छा नहीं जाए। इस पार्टी में मैं रहा हूं, मुझे पता है, यहां कटिंग सिस्टम चलता है, कटिंग सिस्टम।

(श्री रोहिताश कुमार)

मानननीय सभापति महोदय, अंत में मैं एक निवेदन हमारे अमीन खां जी के बारे में कहना चाहता हूं। अमीन खांजी के बारे में मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इन्होंने भावुकतावश चाहे कुछ भी कहा हो पर कल, मैं आपसे सही कहता हूं, इन्होंने दिल को अन्दर नहीं रखा, खोल कर रख दिया जैसे सर्जन हार्ट को बाहर निकाल देता है। खोल कर साफ-साफ बात कही। अमीन खांजी, मैं आज विश्वास दिलाना चाहता हूं, आज हम उस पार्टी में नहीं हैं लेकिन हम उस घर की परम्परा को जानते हैं, आपने यह दिल खोल कर जो विधान सभा में बात कही है, यह उस घर तक पहुंचेगी तो आप पुनः इस मंत्रिमण्डल में इन्डक्ट होंगे, यह मैं आज आपको बताता हूं। वो बड़ा दयालु है, मैं उन लोगों के बारे में जानता हूं। मैं भी आज जो यहां हूं, उसी घर की बदौलत हूं। मैं आपसे कहना चाहता हूं, चाहे मैं पार्टी में किसी में हूं पर मैं भी आज उस घर की बदौलत हूं। वफादार कार्यकर्ताओं का वहां गला नहीं घुटता, निश्चित तौर पर, आप संयम रखिये। आपका कोई भी नेता अगर आपको थोड़ा भी चाहने वाला है, वहां तक बात पहुंचेगी तो आप वापस मंत्रिमण्डल में शामिल होंगे। कल हमारे डाक्टर दिगम्बर सिंह ने भी इस बात को कहा।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): आपकी घर वापसी कब होगी, यह बताओ आप तो?

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): कभी वापसी की बात ही नहीं उठती। जिनके मर जाएं बादशाह, रोते फिरें वजीर। अब वो हमारे बादशाह ही नहीं रहे, अब हम वहां सोच भी नहीं सकते। लेकिन मेरा आदर है उस घर के प्रति, मैं उस आदर को भूलता नहीं। आज भी मेरे घर में इस परिवार के एक-एक बच्चे का फोटो लगा हुआ है जो शायद ही किसी कांग्रेसी के घर पर हो। मैं उस घर की ...(व्यवधान)

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): थोड़ा खुलासा कर दो न परिवार का।

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): मैं आप से अंत में निवेदन करना चाहता हूं (समय-समाप्ति-सूचक घंटी) मैं अंत में निवेदन करना चाहता हूं कि यह माननीय वसुन्धरा राजे (व्यवधान)

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): अधूरी रह जाएगी बात, माननीय सदस्य, थोड़ा खुलासा कर दो, आप बहुत उदारमन हैं, आपने खुल कर अपने दिल की बात कही है। (व्यवधान)

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): नहीं, मुझे कहना था जो मैंने कह दिया। मैं दूसरे विषय पर आना चाहता हूं।

डा. दिगम्बर सिंह (डीग-कुम्हेर): यह भारतीय जनता पार्टी के कर्मठ सिपाही हैं, हैं और रहेंगे। (व्यवधान)

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): नहीं, मुझे चिंता नहीं है। मुझे किसी बात की चिंता नहीं है। मेरा भाग्य पर भरोसा है। जब मुझे कांग्रेस का टिकट मिला, बानसूर की जनता ने हरा दिया। जब मैं निर्दलीय रहा तो बानसूर की जनता ने मुझे राजस्थान लेवल का नेता बना दिया। ये सब भाग्य के खेल हैं, इन बातों में कुछ नहीं रखा। माई डीयर, आप भी मेरे शिष्य हो, आप भी कहां से कहां पहुंच गये। यह सब भाग्य का खेल है, कोई नयी बात नहीं है।

श्री सभापति: माननीय सदस्य।

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): आखिर में मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं इस अभिभाषण का जो कि झूठ का पुलिंदा है, घोर विरोध करता हूं। और एक भविष्यवाणी करता हूं, हम ऋषि मुनियों की सन्तान हैं, हमने मन्दिरों में हजारों-हजारों साल पूजा की है, मैं एक भविष्यवाणी करता हूं, अगर यह झूठ का पुलिंदा लगातार दो बार और पेश होता रहा तो, उधर बैठने वाले माननीय सदस्यों, आप अभी से जगह इधर तलाश कर लो। मैं इतना ही कहना चाहता हूं, बहुत-बहुत धन्यवाद। जय भारत, जय हिन्द।

श्री सभापति: श्री रमेश खण्डेलवाल।

डा. दिगम्बर सिंह (डीग-कुम्हेर): जिन माननीय सदस्यों को भाषण पसंद नहीं आया हो वो शाम को डिनर पर आमंत्रित हैं।

श्री रमेश खण्डेलवाल (नीमकाथाना): माननीय सभापति महोदय, मैं राज्यपाल महोदय द्वारा 13वीं विधान सभा के छठे सत्र में दिये गये अभिभाषण के समर्थन में कहना चाहता हूं। मेरे से पूर्व वक्ता जो काफी सीनियर भी हैं, उन्होंने इस पूरे अभिभाषण को झूठ का पुलिंदा, सरकार की नाकामी और पता नहीं कितने तरह-तरह के आरोप लगा कर पूर्ण रूप से नकारने की कोशिश की। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि अभिभाषण में मुख्य मंत्रीजी की इच्छा शक्ति, उनकी सरकार को चलाने की संवेदनशीलता, पारदर्शिता, जवाबदेही झलकती है, या हम यह कहें कि एक जवाबदेही सरकार के कार्यकाल का एक प्रतिबिंब के रूप में हमारे राज्यपाल महोदय ने अपने भाषण में उल्लेख किया जिसको ये पूर्ण रूप से नकार रहे हैं।

(श्री रमेश खण्डेलवाल)

इनसे पूछा जाए, अभी जो सदस्य विराजमान हैं, विपक्ष के सभी माननीय सदस्यगण, कि 2300 मेगावाट बिजली बना कर किसानों को और उद्योगों को जो राहत दी गयी, क्या यह अपने आप में झूठ का पुलिंदा है? अगर यह झूठ का पुलिंदा है तो पीछे के इतिहास को उठा कर देखा जाए।

मेरे सामने हमारे साथी अमरारामजी विराजमान हैं जो बिजली की मांग को लेकर पिछले कार्यकाल में अक्सर पांच-पांच, दस-दस दिन तक अपने लवाजमे के साथ जयपुर में डेरा डाले रहते थे। आखिर वो लवाजमा उन्हें पिछले साल क्यों नहीं लाने की जरूरत पड़ी? यह अपने आप में प्रत्यक्ष प्रमाणित करता है कि सरकार ने उन बातों की तरफ, सरकार ने उन आवश्यकताओं की तरफ ध्यान दिया जो किसान की महती आवश्यकता थीं। बिजली हमारी प्रमुख आवश्यकता है, पूरी रबी की फसल निकल गयी, उससे पहले खरीफ की फसल निकल गयी, बिजली की सप्लाई में सरकार ने अपनी जिम्मेदारी को निभाया। आठ हजार मेगावाट की जो पूरी क्षमता तैयार हुई, उसके 25 परसेंट का प्रोडक्शन सिर्फ 2010 और 2011 में तैयार हुआ, यह अपने आप में शो करता है कि पिछले बजट में दिया गया 54 परसेंट बजट जो 12,434 करोड़ रुपये था, वो एक सार्थक बजट था और उसने सार्थकता को प्रमाणित किया।

माननीय सभापति महोदय, बिजली के उत्पादन के साथ-साथ मैं हमारे सभी माननीय विपक्ष के सदस्यगण से कहना चाहता हूं, आप इसको झूठ का पुलिंदा बता रहे हैं, महंगाई के बारे में बार-बार चर्चा कर रहे थे, महानरेगा योजना एक ऐसी अद्‌भुत योजना है जिसके बारे में कभी किसी ने सोचा भी नहीं था कि यह पूर्ण रूप से चल भी पाएगी। यह न-केवल चली बल्कि इस योजना ने कायाकल्प कर दिया देहात के क्षेत्रों का, राजस्थान के रिमोट क्षेत्रों का जहां लोगों के पास रोजगार नहीं था। हमारे और आस-पास के क्षेत्रों के लोग पलायन कर पंजाब और हरियाणा में भट्टों के ऊपर मजदूरी को जाते थे। जब वो जाते थे तब हम देखते थे, हमारी आत्मा रोती थी। उनके परिजन देखते थे और वो 407 और बड़े-बड़े ट्रकों के ऊपर अपना सामान डाल कर, खाटों को उलटी लगा-लगा कर डेरे के साथ अपने बच्चों और अपने परिवार के लोगों को लेकर मजदूरी करने के लिए जाते थे। मजदूरों का यह सब पलायन रुका और इस महानरेगा की वजह से रुका। न-केवल पलायन रुका बल्कि जिस तरीके से मानसून ने साथ दिया, जो जोहड़ों की खुदाई हुई, बाकी खुदाई हुई,

(श्री रमेश खण्डेलवाल)

उनमें पानी के भरने से पानी की हमारी रिजर्व क्षमता बढ़ी और उससे पेयजल और भू-जल दोनों में ही बढ़ोतरी हुई।

माननीय सभापति महोदय, अभी सोशल सिक्योरिटी के बारे में बात हो रही थी मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि सामाजिक सुरक्षा के तहत कोई कमी नहीं छोड़ी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने। न-केवल अशक्त जन पेंशन बल्कि विधवा पेंशन में भी उन्होंने भरपूर बढ़ोतरी की कोशिश की। बैठे हुए सभी माननीय सदस्यगण भी इस बात को महसूस कर रहे हैं। विधवा पेंशन में मैं मुख्य मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि विधवा शब्द अभिशाप का दूसरा नाम है। विधवा विधवा ही होती है, चाहे उसका बेटा 25 साल का हो चाहे उसका बेटा 18 साल का हो। यह राइडर पूर्ण रूप से खतम होना चाहिए। विधवा को पेंशन शुरू से लेकर आखिर तक मिलनी चाहिए। यह कहे कोई कि बेटा पच्चीस साल का होने के बाद विधवा सामर्थ्यवान हो जाती है, यह बिलकुल गलत है। वैस्टर्न कल्चर का इतना जबर्दस्त असर चल रहा है न केवल शहरों में बल्कि देहात में कि बेटा 25 साल तक तो अपनी मां के पास रहता है, सेवा करता है मां की और मां और बेटा मिलकर रोटी खाते हैं, लगन और मेहनत से काम करते हैं। लेकिन जब 25 साल का बेटा हो जाता है और ब्याहा जाता है तो बहू के आने के बाद बेटा अपना डेरा अलग जमा लेता है और विधवा बड़ी तकलीफ से दिन गुजारती है। इसलिए यह राइडर पूर्ण रूप से खतम होना चाहिए।

मैं मुख्य मंत्री महोदय से यह निवेदन करना चाहूंगा कि पैंसठ साल से ऊपर जितने भी बुजुर्ग हैं ये सीनियर सिटीजन के रूप में जाने जाते हैं, आप इनको भी मेहरबानी करके पेंशन देने की व्यवस्था करें। मैं जो अभी पहले बता रहा था, वैस्टर्न कल्चर में एक सिस्टम चल गया कि अपने बुजुर्ग मां-बाप को कोई नहीं चाहता कि पूर्ण रूप से उनकी सेवा करे, आर्थिक रूप से सेवा करे। जब भी बेटी घर में आती है तब मां और बाप ऐसी आंखों से देखते हैं अपने बच्चों की तरफ कि मेरी बेटी के लिए कुछ दे दे। उनको पेंशन 200 रुपये महीने की ही दी जाए या 250 रुपये ही दी जाए, अगर वह पैसा उनके पास होगा तो वह गरमी न केवल उन बुजुर्ग मां-बाप के काम आएगी बल्कि उनकी बेटी अगर टाइम-बे-टाइम मिलने के लिए आती है, अपने मां-बाप का दुःख-दर्द पूछने के लिए आती है तो उसके भी काम आएगी। मैं सोशल सुरक्षा के नाते मुख्य मंत्री महोदय से ये दो मांग करना चाहूंगा। सामने बार-बार कह रहे थे

(श्री रमेश खण्डेलवाल)

कि स्थान बदलेगा, हम पक्ष में आएंगे और आप विपक्ष में चले जाओगे। मैं कहता हूं, आपने मेहरबानी करके ये दो काम कर दिये तो स्थान तो क्या बदलेगा, 160 सीटों में कांग्रेस जीतकर आएगी और बाकी सीटों में ये रह जाएंगे। यहां हम लोगों का दायित्व बनता है कि हम सोशल सुरक्षा के तहत उन चीजों को लेकर चलें जिनसे वृद्ध आदमी और विधवा औरतें आज परेशान हैं।

अभी थोड़ी देर पहले बातें हो रही थीं कि प्याऊ तोड़ दी गयी, बाकी धर्म की कोई चीज नहीं तोड़ी गयी। मैं सामने वाले सभी सदस्यगण से कहना चाहूंगा, सरकार चलाने की नीति अपनी-अपनी होती है। लोकतांत्रिक ढांचे में ढली हुई और सामाजिक व्यवस्थाओं को मद्देनजर रखकर जो सरकार चलाते हैं, उनका दायित्व बनता है कि वे सभी धर्म, सब जाति और सब वर्ग को बराबर सम्मान देते हुए चलें। यह कोई बात नहीं हुई कि प्याऊ तोड़ दी गयी और वो नहीं तोड़ी। मैं तो आपसे यह कहना चाहूंगा, हमें गर्व है कि हम उस कांग्रेस पार्टी के नुमाइन्दे हैं जिस पार्टी में सभी धर्मो को समान लेकर चला जाता है, सभी धर्मो का समान आदर और सम्मान मान होता है। अगर सुबह के वक्त, हिज्र के वक्त खुदा की इबादत होती है, अल्लाह-औ-अकबर के साथ में ला इलाही इल्ललाही मोहम्मदु और रसूल इल्लाही अगर कोई करता है तो भी हम इबादत से सिर झुकाते हैं। अगर थोड़ी देर बाद ही कोई ब्राह्मण या कोई पुजारी ओम् सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। त्रयम्बके गौरी नारायणि नमस्तुते कहते हैं तो भी हम वो ही सजदे और इबादत के साथ अपना सिर झुकाते हैं। लेकिन इसी के साथ पुरूषार्थी होने के नाते हम गीता के उस वचन को भी नहीं भूलते कर्मण्ये वाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन, जिसके साथ हमें मेहनत और खुद्दारी के साथ आगे बढ़ने की, गरीबों की सेवा करने की प्रेरणा मिलती है।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मुख्य मंत्री महोदय के कार्य के प्रतिबिम्ब के रूप में राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में जो उल्लेख किया है, इसमें कोई दो राय नहीं है कि वह गरीबों के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है। गरीबों के प्रति जो ड्यूटी होनी चाहिए सरकार की, उसको दर्शाता है। विपक्ष में बैठे हुए लोगों का दायित्व बनता है कि वे विरोध करें, लेकिन विरोध करने के साथ-साथ वे कम से कम उन बातों को पहचान कर कहें तो जिन बातों में सच्चाई है। यह सरकार की बहुत बड़ी परीक्षा की एक घड़ी थी, पूरी

(श्री रमेश खण्डेलवाल)

कानून व्यवस्था की परीक्षा की घड़ी थी। मीडिया देख रहा था, आल ओवर वर्ल्ड मीडिया देख रहा था जब गुर्जर आन्दोलन स्टार्ट हुआ और वह भी हमारी सरकार के कार्यकाल में। विपक्ष में बैठे हुए सभी माननीय सदस्य देख रहे थे कि हमारे कार्यकाल में हमारी मुखिया से जो गलतियां हुईं, हमारी मुखिया ने अहंकार में आकर सामन्तवादी व्यवस्था के तहत, नकारात्मक सोच के तहत जो गलतियां कर दीं, वे गलतियां शायद यह सरकार भी करेगी। लेकिन यहां गांधीजी की विचारधारा का सम्मान करने वाले हमारे मुख्य मंत्री महोदय ने उन सब बातों को नकारते हुए, गांधीवादी विचारधारा पर चलते हुए गुर्जर आन्दोलन का जिस तरीके से समापन किया, वह अपने आप में अनुकरणीय है। अनुकरणीय ही नहीं, आने वाली पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा का स्रोत भी है कि अहिंसा के जरिये सारी बातों का समाधान हो सकता है। मुख्य मंत्री महोदय के कार्यकाल में पूरे साल में बिजली के क्षेत्र में, सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में, पानी के क्षेत्र में...(समय-समाप्ति-सूचक घंटी) आप देखिये, पिछली गरमी में मुख्य मंत्री महोदय ने मेरे अकेले नीमकाथाना में आठ-आठ सौ, सवा आठ-आठ सौ टैंकर दिये, यह कोई अपने आप में कम नहीं था। पानी की समस्या का समाधान करने के बाद आगे परमानेंट योजनाएं बना रहे हैं। मैं जलदाय मंत्री महोदय से कहना चाहूंगा कि नीमकाथाना क्षेत्र एकदम डार्क जोन में है, आप मेहरबानी करके नीमकाथाना की तरफ अवश्य ध्यान दें। पता नहीं क्या कारण है, नीमकाथाना को बजट क्यों नहीं दिया जा रहा है। मेरा आपसे निवेदन है कि डार्क जोन में हम संघर्ष कर रहे हैं, हमारा भी साथ देने की कोशिश करें।

माननीय सभापति महोदय, समय कम है, मैं तो आपको यही कहना चाहूंगा कि पूरा अभिभाषण जो दिया है राज्यपाल महोदय ने, वह एक संवेदनशील और जवाबदेह सरकार के मुखिया के द्वारा शांति, शालीनता, सरलता, सहजता और सजगता से किये गये कार्य का पूर्ण रूप से प्रतिबिम्ब था और मैं इसका समर्थन करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति: सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि थोड़ा समय सीमा का ध्यान रखेंगे तभी जाकर आज जो माननीय सदस्य बोलेंगे, वे बोल पाएंगे। कार्य सलाहकार समिति की भी यही सहमति बनी थी कि लगभग दो बजे तक सदन आज चलाना है, इसलिए प्रश्नकाल, शून्यकाल भी नहीं रखा गया। इसलिए मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है, मैं नहीं चाहता घण्टी

(श्री सभापति)

बजाना लेकिन मेरी भी अपनी सीमा है। इसलिए मैं निवेदन करूंगा कि समय सीमा का मेहरबानी करके ध्यान रखें।

श्री अमरारामजी।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर पिछले दो दिन से चर्चा चल रही है, इसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं। हमारी राजस्थान की सरकार का अभिभाषण महामहिम राज्यपाल महोदय ने यहां रखा, लेकिन जिस तरह से राजस्थान के मुख्य मंत्री अपनी लाचारी के बयान राजस्थान की छह करोड़ जनता के सामने दे रहे हैं, इससे एहसास होता है कि राजस्थान में मुख्य मंत्री जी की सरकार नहीं है, कोई और ही सरकार चला रहा है। चाहे बीमार लोगों की निजी अस्पतालों में लूट का सवाल हो, चाहे पुलिस के थानों का सवाल हो, चाहे मंहगाई का सवाल हो, चाहे भ्रष्टाचार का सवाल हो, मैं समझता हूं, यह सरकार अपनी लाचारी दिखा रही है। लगातार 1952 के बाद यहां अभिभाषण होते रहे हैं लेकिन राजस्थान की आज जो हालत है, आज भी राजस्थान के चालीस हजार गांवों में से 20,230 गांव ऐसे हैं जहां हम आज तक पीने का शुद्ध पानी नहीं पहुंचा पाये। आज भी आधी से ज्यादा आबादी के घर हैं जहां हम बिजली की रोशनी नहीं पहुंचा पाये। आज राजस्थान में एक-एक बूंद का महत्व है। सरकार केवल यह कहकर इतिश्री नहीं कर सकती कि राजस्थान में एक जल नीति बना दी गयी, जबकि जल के प्रति राजस्थान की सरकार संवेदनहीन है।

सभापति महोदय, राजस्थान में सबसे बड़ी सिंचाई और पेयजल की योजना इन्दिरा गांधी नहर है जो राजस्थान में ही नहीं पूरे देश में सबसे वृहत् योजना है, जहां दस जिलों को पेयजल का पानी दिया जाता है, काफी लाखों हैक्टेयर जमीन में जहां सिंचाई का पानी दिया जाता है। पोंग डैम में हमारा 52 प्रतिशत हिस्सा है, राजस्थान नहर 18,500 क्यूसेक्स की बनाई गयी, लेकिन अफसोस है कि जहां तक हरिके पत्तन से पानी लेने का सवाल है, चालीस साल में 18,500 क्यूसेक्स नहीं ले सकते, केवल मात्र 15,000 क्यूसेक्स ही ले पा रहे हैं। मैं समझता हूं, इससे ज्यादा अंधेरगर्दी नहीं हो सकती कि राजस्थान के हिस्से के 18,500 क्सूसेक्स के हिसाब से नहर बनायी जाए और नहर से निकासी केवल पन्द्रह हजार क्यूसेक्स की ही हो। आज राजस्थान में राजस्थान नहर के बाद चम्बल परियोजना है लेकिन वह भी नीति घोषित करने से,

(श्री अमराराम)

कागज पर लिखने से नहीं, राजनीतिक इच्छाशक्ति से पूर्ण होगी। राजस्थान में पैंतीस साल से चाहे यह सरकार हो चाहे वह सरकार हो, राजस्थान का आम आदमी एक-एक बूंद के लिए तरस रहा है लेकिन चम्बल नहर में आज तक भी चकबंदी और बाराबंदी नहीं है। आज जो मूढ पर बैठा है वह पानी को व्यर्थ बहा रहा है और जो टेल पर है वह डीकमांड हो रहा है। सभापति महोदय, आपने देखा, टोंक में एक बांध जिसकी लागत 300 करोड़ है, वह बन कर पहली बार पानी आने पर टूट जाता है। राजस्थान जहां एक-एक बूंद पानी के लिए व्यक्ति तरसता है, चाहे वृहत् सिंचाई योजना हो, चाहे मध्यम सिंचाई योजना हो या लघु सिंचाई योजना हो, एक भी योजना अपने नियत समय में नहीं बनी है। पांच एम ए एफ पानी जो पंजाब को सरेण्डर किया गया, आज तक हम नहीं ले पाये हैं। मैं समझता हूं, गरीब के लिए सोच न इस अभिभाषण में है न हमारी सोच में है।

63 साल की आजादी के बाद हमने रिकार्ड बना दिया, देश में उत्तरप्रदेश के बाद दलित अत्याचार में हमारा दूसरा नम्बर है। गरीब के लिए 1956 और 57 में सीलिंग कानून बना लेकिन 2010 में छह लाख एकड़ सीलिंग सरप्लस जमीन राजा और रानियों के पास है, जागीरदारों के पास है। वह छह लाख एकड़ जमीन राजस्थान में 1957 में इस विधान सभा द्वारा कानून पास करने के बाद भू स्वामियों से गरीब के पास पहुंचती तो यह अत्याचार जो सामन्ती संस्कृति का परिचायक है, यह बंद होता। आप आरोप लगाते हैं कि पूर्ववर्ती सरकार सामन्ती सरकार थी इसलिए उन्होंने गोलियां चलाई। लेकिन 63 साल में 75 प्रतिशत समय कांग्रेस का शासन रहा है, जो कांग्रेस गरीब की बात करती है, लेकिन वह गरीब का काम नहीं करती। दलित जो 90 प्रतिशत भूमिहीन हैं जिनका हक है उस छह लाख एकड़ जमीन पर, वह जमीन उस गरीब को मिलती तो दूसरी हालत होती उस परिवार की। मंहगाई से आज आम आदमी लूटा जा रहा है। किसान दो रुपये में प्याज पैदा करके देता है, सौ रुपये में बेचा जा रहा है। वह लहसुन दस रुपये-आठ रुपये में बेचता है और आम उपभोक्ता को 250 रुपये में मिलता है।

सभापति महोदय, अभिभाषण में कहा गया कि पूर्ववर्ती सरकार ने 96 लोगों को मौत के घाट उतारा। ग्राम की संवेदनशील और पारदर्शी सरकार की बात कर रहे हैं। लेकिन 1 नवम्बर को जब राजस्थान के नौ हजार से ज्यादा चुने हुए सरपंच हमारी विधान सभा के सामने अपने हक और अपनी मांग को

(श्री अमराराम)

लेकर आए तो राजस्थान की सरकार ने हमारे गृह मंत्रीजी बैठे हुए हैं उन्होंने, उन चुने हुए प्रतिनिधि, आम जनता नहीं, राजस्थान की ग्रामीण जनता, 75 प्रतिशत आबादी के चुने हुए प्रतिनिधियों पर निर्मम लाठीचार्ज किया, फायरिंग की। न केवल उन महिलाओं के साथ बुरा व्यवहार हुआ बल्कि लोगों की पगड़ी उछाल दी गयी। उसके बाद भी सरकार को अफसोस नहीं हुआ। सरकार ने तीन तारीख को रात को ढाई बजे निहत्थे, सोए हुए उन सरपंचजन को, चाहे वह महिलाएं थीं या पुरुष थे, गिरफ्तार करके थानों में बंद किया। पारदर्शी सरकार की बात कर रहे हैं।

हमारे शिक्षा मंत्रीजी के यहां कांग्रेस की जिला परिषद की चुनी हुई मैम्बर जाती हैं, उनके धक्के और मारपीट करके उनके घर से निकाला जाता है। इससे ज्यादा, वह दलित की बेटी जो पंचायती राज में चुनकर आती है, वह बयान देते हैं कि गरीब कौन है। दिन में तीन दफे कपड़े बदलते हैं, सब गरीब कार में घूमते हैं। यही नहीं, जिस जनता से चुनकर हम राजस्थान की विधान सभा में 200 माननीय सदस्य आते हैं, वह कहते हैं कि हाथी चलता है और लोग भोंकते हैं। जनतंत्र में जनता सर्वोपरि है उस जनता के लिए कहते हैं, हम हाथी तो चलते हैं और लोग ऐसे ही कुत्ते की तरह भोंकते हैं। उस जनता का जिस तरह से अपमान कर रहे हैं वह किसी भी तरह से वाजिब नहीं है। राजस्थान की सरकार में बैठे हुए लोग, कृषि विभाग पूरा का पूरा और दोनों कृषि विश्वविद्यालय मोनसेंटो कम्पनी के अधीन कर देते हैं और कृषि मंत्रीजी कहते हैं कि मुझे तो पता नहीं है। नकली बीज वितरण होता है, किसान की फसल तबाह होती है और हमारे कृषि मंत्री से पूछते हैं तो कहते हैं कि मुझे तो पता नहीं कहां वितरण हो रहा है। मैं समझता हूं, यह कांग्रेस पार्टी की सरकार नहीं राजस्थान में पोपाबाई का राज चल रहा है। इसलिए आज जिस जगह आवश्यकता है, इकबाल खतम हो गया। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी) सरकार की पुलिस जो रक्षा करने के लिए है, मैंने सवाल पूछा 2009 जनवरी से लेकर जुलाई, 2010 तक कितनी जगह पुलिस पिटी। आपको आश्चर्य होगा, 575 दिन के लिए पूछा और 659 बार राजस्थान की पुलिस जनता से पिटी। क्योंकि माफियाओं की सेवा करने में लगी हुई है। दारू माफिया, भू माफिया, खान माफिया, रायल्टी माफिया की सेवा में लगी हुई है, अनैतिक कार्य करती है और आम जनता में गुस्सा होता है और इसलिए पुलिस पिटती है। इकबाल पुलिस का खतम हो गया, सरकार का खतम हो गया। सरकार के मंत्री, उनके विभाग

(श्री अमराराम)

में क्या हो रहा है उनको पता नहीं। मुख्य मंत्री कहते हैं अस्पताल में लूट हो रही है, थानेदारों को पता है। इसलिये मैं तो आपके माध्यम से यही निवेदन करना चाहूंगा कि आप बड़ी बात कर रहे हैं...(समय-समाप्ति-सूचक घंटी) कि दो रुपये किलो राजस्थान के बी पी एल परिवारों को बड़ा तोहफा दे दिया। 35 किलो मिलता था, अभी 25 किलो 2 रुपये किलो से दे दिया। 35 किलो जब 4.60 रुपये में मिलता था तो 35 किलो गेहूं एक परिवार को 161 रुपये में पड़ता था। आज जब आप बड़ी शेखी बघार रहे हो 25 किलो 2 रुपये की 10 किलो गेहूं उसको 15 रुपये किलो में खरीदना पड़ता है। कुल 200 रुपये खर्च करना पड़ते हैं, 39 रुपये एक परिवार को एक्सट्रा देना पड़ता है। 13 लाख बी पी एल परिवार हैं। इसलिये यह केवल बात ही कह रहे हैं कि यह सरकार का विकास है।

बिजली का जहां तक सवाल है कि पैदावार बढ़ी है, निश्चित रूप से बढ़नी चाहिये। हजारों करोड़ रुपये लगाकर गांवों को भी शहर के बराबर बिजली मिले, घरेलू के लिये, अलग से सिस्टम पैदा किया गया, लेकिन आज भी वहां बिजली नहीं मिलती है। आजादी के बाद गांव, ढाणी, मजरे में बसे हुए किसान को अपने घर पर कनेक्शन लेने के लिये आज तक मनाही नहीं थी। 50 प्रतिशत से ज्यादा लोग वे हैं जो 63 साल की आजादी के बाद आज भी बिजली की रोशनी नहीं देख पाये, अगर बिजली के सहायक अभियन्ता कार्यालय में वे फार्म भरने के लिये जाएंगे तो उनका फार्म नहीं लिया जाएगा। यह राजस्थान में पहली बार है इस सरकार के आने के बाद दे देंगे तो वह रिजेक्ट हो जाएगा। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी) सरकार ने योजना बनायी कि ट्रांसफार्मर की 65,000 रुपये की पोस्ट एक घर के लिये दें..

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब समअप करें।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): एक ही मिनट में समाप्त कर रहा हूं। सभापति महोदय, बिजली पैदा हो गयी लेकिन वह गरीब के लिये नहीं है, वह बड़े पैसे वालों के लिये है। जिस तरह से भ्रष्टाचार हो रहा है, मैं तो आपके माध्यम से, सभापति महोदय, एक ही निवेदन करना चाहूंगा कि केवल कहने से नहीं राजनीतिक इच्छाशक्ति होनी चाहिये कि उस गरीब की झोंपड़ी में रोशनी जाए महंगाई से जो लुट रहा है। महंगाई बढ़ती है 10 परसेण्ट मान लें, लेकिन लेंगे 15 परसेण्ट, 50 गुना ज्यादा, यह तो लूट है। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी) और यह सरकार उन लुटेरों को मदद दे रही है। राजस्थान में सरकार नाम की

(श्री अमराराम)

चीज नहीं बची है, मैं इस अभिभाषण का प्रतिवाद और विरोध करता हूं। आपने समय दिया इसके लिये धन्यवाद देता हुआ अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री सभापति: श्रीमती सज्जन कटारा।

श्रीमती सज्जन कटारा (उदयपुर ग्रामीण): सभापति महोदय, मुझे राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के पक्ष में बोलने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं। हमारी सरकार नये राजस्थान के निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध है और मन में सुशासन का संकल्प संजोये हुए निरन्तर विकास पथ पर आगे बढ़ रही है। कई मायनों में जनता की आशाओं और अभिलाषाओं को पूरा करने में कामयाब रही है। मैं माननीय मुख्य मंत्री गहलोतजी का आभार व्यक्त करती हूं कि उन्होंने पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा, चिकित्सा, सिंचाई, पंचायती राज, ग्रामीण विकास और नगरीय विकास के विभिन्न क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यकों, महिलाओं, कमजोर एवं पिछड़े वर्ग के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के कई महत्वपूर्ण काम किये हैं।

सभापति महोदय, मैं मुख्य मंत्री का आभार व्यक्त करती हूं कि प्रशासन गांवों के संग अभियान के तहत वृद्धों, नि:शक्तजनों, विधवाओं, विकलांगों को पेंशन देकर सामाजिक सुरक्षा दी है और पालनहार योजना के तहत कई अबोध एवं अनाथ बालकों के लिए सरकार एक सहारा बनकर सामने आयी है। मैं आभार व्यक्त करती हूं सरकार का कि आस्था कार्ड के माध्यम से कई गरीब और कमजोर व्यक्तियों को लाभ पहुंचाने का काम किया है। सरकार बहुत अच्छा काम कर रही है।

सभापति महोदय, पंचायती राज को सुदृढ़ एवं मजबूती प्रदान करने के लिए 5 विभागों का पंचायती राज में हस्तांतरण किया गया है, इस व्यवस्था से बहुत ज्यादा पंचायती राज व्यवस्था मजबूत होगी और अच्छा काम करेगी।

सभापति महोदय, मुख्य मंत्रीजी की महत्वपूर्ण योजना हरित राजस्थान के तहत पूरे राजस्थान में वृक्षारोपण कर राजस्थान को हरा-भरा बनाने का एक लक्ष्य रखा गया है। इससे वनों एवं जंगलों के पनपने से निश्चित रूप से तापमान में कमी आएगी, वर्षा की मात्रा में वृद्धि होगी। प्रदेश में अमन-चैन आएगा, खुशहाली होगी और भू-जल स्तर ऊपर आएगा। हमारे प्रदेश में पानी का अच्छा प्रबंध होगा। सूखे से निपटने में अच्छी व्यवस्था होगी।

(श्रीमती सज्जन कटारा)

सभापति महोदय, मैं मुख्य मंत्रीजी का आभार व्यक्त करती हूं कि मुख्य मंत्रीजी ने महिलाओं का सशक्तिकरण करने के लिए अनेक कदम उठाये हैं। स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज में 50 प्रतिशत का आरक्षण देकर महिलाओं को राज में भागीदारी दी है, यह बहुत अच्छा कदम है। पुलिस में नवीन नियुक्तियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने हेतु 30 प्रतिशत पदों को आरक्षित किया है, यह महिलाओं को आगे बढ़ाने का बहुत अच्छा कदम है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम के अन्तर्गत 2 लाख गठित समूहों में से 1 लाख 66 हजार समूहों को 413 करोड़ 50 लाख रुपये का ऋण दिया गया है, इससे निश्चित रूप से महिलाएं आत्मनिर्भर बनेंगी और उनका सशक्तिकरण होगा।

सभापति महोदय, उदयपुर संभाग टीएसपी एरिये के अन्तर्गत किसानों की फसलों को बढ़ाने के लिए, फसल में वृद्धि करने के लिए हाई ब्रीड मक्का का बीज देकर फसल उत्पादन में चार गुना वृद्धि की है जिससे किसान आत्मनिर्भर बनने जा रहा है। सरकार ने फसल खराबे पर नकद राशि का भुगतान कर किसानों की सहायता की है तथा कई कृषि उपकरण टीएसपी इलाके में नि:शुल्क वितरित किये गये हैं। यह हमारे मुख्य मंत्रीजी की गरीब और किसान के प्रति अच्छी सोच का प्रतीक है, मैं मुख्य मंत्रीजी का इसके लिए आभार व्यक्त करती हूं।

सभापति महोदय, अपनी रसोई योजना के माध्यम से कृषि मंडियों में अपनी फसल लेकर आने वाले किसानों के लिए 6 रुपये थाली भोजन की व्यवस्था करके किसानों को सहायता प्रदान की है। यह भी सरकार ने बहुत अच्छी व्यवस्था की है। पूरे प्रदेश में प्लास्टिक पर पाबंदी लगाकर जहां पर्यावरण को अच्छा किया है, वहीं इससे रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। इसके लिए मैं मुख्य मंत्रीजी का बहुत आभार व्यक्त करती हूं।

सभापति महोदय, पूरे प्रदेश में सूचना तंत्र को मजबूत करने के लिए हमारी सरकार ने पंचायत स्तर पर राजीव गांधी सूचना केन्द्र बनाये हैं, उसके तहत ग्रामीण क्षेत्र में नरेगा योजना के अन्तर्गत काम करने वाले मजदूरों को सूचना मिलेगी, उनका लेखा-जोखा रहेगा। गरीब को इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। इस तरह से हमारी सरकार कई महत्वपूर्ण काम कर रही है। हमारी सरकार गरीबों की है, महिलाओं की है, कमजोर और पिछड़े वर्गों की है।

(श्रीमती सज्जन कटारा)

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से पुनः हमारे मुख्य मंत्रीजी का आभार व्यक्त करती हूं कि मुख्य मंत्रीजी ने सभी वर्गों को साथ लेकर राजस्थान के नये विकास में अहम भूमिका निभायी है। मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की बहुत-बहुत सराहना करती हूं। जय हिन्द।

श्री सभापति: श्री बाबूसिंह राठौड़।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण पर हमारे कई साथी वक्ताओं ने चर्चा करते हुए कहा कि महामहिम राज्यपाल का अभिभाषण विकास का पर्याय है, विकास का दस्तावेज है। यह सरकार संवेदनशील सरकार है, पारदर्शी सरकार है और जवाबदेही सरकार है।

सभापति महोदय, केकड़ी से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे कि भाजपा सरकार के समय में शराब संस्कृति को बढ़ावा मिला। लेकिन मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान में आज जोधपुर के जाये-जन्मे मुख्य मंत्री हैं और वहां के प्रभारी मंत्री आदरणीय आबकारी मंत्री हैं। सीकर की भी बात चल रही थी, वह वहां से जीतकर आते हैं। लेकिन हालत यह है कि अभी जोधपुर में 19 फरवरी को एक शराब दुखांतिका हुई, उस शराब दुखांतिका के अन्दर 25 लोग तो वहां मारे गये और पाली में मारे गये। आपके जवाब के अन्दर कल अख़बार में था कि 65 लोग 3 साल में मारे गये। मैं कह रहा हूं कि 3 साल में 65 नहीं सैकड़ों लोग मारे गये हैं।

सभापति महोदय, खुले आम मिथाइल अल्कोहल आ रहा है। भारत में ब्राजील से मिथाइल अल्कोहल आयात होता है, कांडला पर उतरता है और कांडला से गुजरात, आबू रोड, पाली, अजमेर, जयपुर, दिल्ली होते हुए उत्तराखंड, झारखंड जाता है। इसके लिए लाइसेंस मिले हुए हैं, गुजरात और दिल्ली को लाइसेंस मिले हुए हैं। आपको जानकारी होगी कि सितम्बर महीने में पाली के सैंदड़ा के पास मिथाइल अल्कोहल का टैंकर पलट गया था। जब वह मिथाइल अल्कोहल गिर गयी तो उसी से वहां के लोगों ने शराब बना ली, 12 लोग वहां उस मिथाइल अल्कोहल से मारे गये। अब यह मिथाइल अल्कोहल क्या है? मिथाइल अल्कोहल इंडस्ट्री के लिए एक केमिकल है, इंडस्ट्री के लिए काम आता है। स्पिरिट है और उसी स्पिरिट से सब जगह शराब बनायी जा रही है। उसकी कोई जांच नहीं कर रहा है। मिथाइल अल्कोहल से जो शराब बन रही

(श्री बाबूसिंह राठौड़)

है, उसकी भी कोई जानकारी नहीं है। मैं आपको कहना चाहूंगा अब जोधपुर जिले के क्या हालात हैं जहां के मुख्य मंत्री हैं। 'खुद के गम के आंसू हैं, अपने आंचल से पोंछ लो। यदि लोगों से कहेंगे तो हिसाब मांगेंगे।' आज बिहार और बंगाल से दो दिन पहले कोई मजदूर आता है, उसको तो पता है कि अवैध शराब कहां बिकती है। लेकिन सरकार को पता नहीं है, आबकारी विभाग को पता नहीं है। पुलिस को पता नहीं है।

सभापति महोदय, आबकारी विभाग की यह उदासीनता भारी पड़ गयी। आबकारी विभाग आयुक्त ने आदेश निकाल दिया कि जो दुकान 8 बजे बंद होती है, उसकी पुलिस जांच नहीं कर सकती है। पुलिस ने उसकी आड़ में क्या किया? पहले जो उसकी मंथली बंधी होती है, अब उसकी मंथली बंधी बढ़ गयी। अब वे शटर के नीचे से शराब बेचते हैं, दुकान के पीछे से बेचते हैं। जिसको लाइसेंस मिला हुआ है एक गांव के लिए, एक कस्बे के लिए, उस ठेकेदार ने गांव-गांव में दुकानें खोल दीं, कहा कि ये हमारी ब्रांचें हैं। उसके लिए उसने अलग से बंधियां आबकारी विभाग के लिए बांध दीं। छोटी-छोटी कार्यवाहियां होती हैं, शराब पकड़ी जाती है, विधि-विज्ञान प्रयोगशाला में उसकी जांच होती है। लेकिन वह जांच रिपोर्ट सही समय पर न्यायालय में नहीं पहुंचती है जिससे तस्कर बरी हो जाते हैं और पुनः अवैध काम करते हैं। इसी से यह अवैध व्यवसाय बढ़ा है।

सभापति महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि जोधपुर ही नहीं, पूरे मारवाड़ में खास तौर से पिछले दो सालों के अन्दर 50 अवैध फैक्ट्रियां पकड़ी गयीं जिसमें से जोधपुर संभाग में 39 और जोधपुर के अन्दर 27 पकड़ी गयीं। खेतों में यह अवैध कारोबार फल-फूल रहा है, वहां टैंकर गाड़े जा रहे हैं। वहां कालूराम जैसा बहुत बड़ा तस्कर है, जिसने अवैध शराब की तस्करियां कीं, उसकी पाउच बनाने की कम्पनी लगी है। माननीय मुख्य मंत्रीजी संवेदनशील हैं, सरकार संवेदनशील है और माननीय मुख्य मंत्रीजी अस्पताल में जाकर उन अवैध शराब पीने वालों से बात करते हैं और उनसे कहते हैं कि आप बीमार हो गये, अब तो शराब पीना छोड़ दो। तो मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी से और सरकार से यह कहना चाहूंगा कि अब आप शराब पिलाना छोड़ दो। आप शराब पिलाना छोड़ दो और पूर्णतया शराबबंदी करने का माद्दा रखो। शराब का अवैध कारोबार जगह-जगह चल रहा है, आपने रेस्टोरेंट बार दे दिये। अब रेस्टोरेंट तो नाम मात्र का है, उसके अन्दर शराब का कारोबार हो रहा है, अवैध कारोबार हो

(श्री बाबूसिंह राठौड़)

रहा है, अश्लील हरकतें हो रही हैं। गांवों में दुकानें खुल गई हैं। अण्डे का जो ठेला चलाता है, उसके पास भी दारू बिकती है। एनएच 14 पर बिकती है, रोड पर ढाबे लगाकर दारू बिकती है लेकिन उनको कोई पकड़ने वाला नहीं है। इस प्रकार की शराब प्रवृत्ति अगर बढ़ी है तो मैं कहना चाहूंगा कि इस राज के अन्दर बढ़ी है। हमारे सी एम साहब कहते हैं कि अधिकारियों को पता है, पुलिस को पता है और कोई नहीं पकड़ते हैं। न पकड़ने का कारण है कि जब एस ओ जी शराब के अवैध धंधे को पकड़ती है तो डायरी के अन्दर कांग्रेस के कई नेताओं के नाम आते हैं। जो मुलजिम पकड़े जाते हैं, उन मुलजिमों की डायरी में पीसीसी के मेम्बर्स के नाम होते हैं, ब्लाक अध्यक्षों के नाम होते हैं जिनकी अवैध दुकानें खुली हैं, उनमें कांग्रेस कार्यकर्ताओं के नाम होते हैं। मैं सदन को कहना चाहता हूं कि आपने यह अवैध कारोबार बढ़ा कर कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के लिए रोजगार के साधन पैदा किए हैं, उनके लिए रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। इस शराब के कारोबार को आपको रोकना चाहिए, यह मैं खास तौर से आपको कहना चाहता हूं।

मैं आदरणीय माननीय मुख्य मंत्रीजी से कहना चाहता हूं, पुलिस को पता है, वह निर्देश देते हैं तो पूरे जोधपुर जिले के अन्दर शराब पकड़ी जाती है। जब तक निर्देश नहीं देते हैं, कोई कार्यवाही नहीं होती है। इसका मतलब खुली मिलीभगत है। इस शराब की संस्कृति को आपको रोकना चाहिए। हमारे जिले के प्रभारी मंत्री आबकारी मंत्रीजी हैं, वह सीकर से चुनकर आते हैं, सीकर की वारदात कल आपने देखी, यह हालत सीकर की है। जोधपुर के मुख्य मंत्रीजी हैं, आबकारी मंत्रीजी वहां के जिला प्रभारी हैं लेकिन जोधपुर में हालत यह हो रही है। इसलिए इस संस्कृति को रोकने की जरूरत है। मैं कहना चाहता हूं :-

वह करता था बातें सहरा में गुल खिलाने की,
कहता था खुशियां ला देगा सारे जमाने की।
जब वक्त आया तो वह हमारे गमों से गाफिल निकला,
जिसे मुहाफिज समझा था हमने, वही हमारा कातिल निकला।

श्री सभापति: श्री महावीर प्रसाद जीनगर।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): माननीय सभापति महोदय, यह कह रहे हैं कि 65 मौतें हुई हैं, चार दिन तक एक विधवा महिला रोती रही, उसके चार संताने थीं, उसने कहा कि मेरा पति अवैध शराब पीने से चला गया, उसका

(श्री बाबूसिंह राठौड़)

मुकदमा तक दर्ज नहीं हुआ बासनी थाने में। आप तो मुकदमा ही दर्ज नहीं करते। सैकड़ों लोगों की जानें जा रही हैं और राजस्थान की सरकार के कानों पर जूं तक नहीं रेंग रही है।

माननीय सभापति महोदय, आप बात कर रहे हैं घोषणा पत्र की, उसको आप पढ़ें, इसके अन्दर आपने कहा कि घोषणा पत्र के अनुसार काम कर रहे हैं। मैंने तो फ्लैग लगाये हैं, समय नहीं मिला है लेकिन अब आप सब पढ़िये, इसको ले जाइए, आपके पास नहीं है तो हमारे पास से ले जाइए और इस घोषणा पत्र के अनुसार काम करिये। पानी, बिजली, सड़क, चिकित्सा, शिक्षा के लिए जनता...

श्री सभापति: अंकित न हो।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): ×××

श्री सभापति: आप विराज जाइए, अब अंकित नहीं हो रहा है। श्री महावीर प्रसाद जीनगर।

श्री महावीर प्रसाद जीनगर (शाहपुरा): माननीय सभापति महोदय, राजस्थान के महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा 13वीं विधान सभा के बजट सत्र में दिए गए अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर सदन में बोलने का आपने मुझे अवसर दिया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में सभी क्षेत्रों में विकास के कार्य हुए हैं जिससे आम जन को राहत मिली है चाहे वह शिक्षा हो, चिकित्सा हो, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता हो, बिजली, पानी, सड़क हो, सभी में आयाम स्थापित हुए हैं। गरीबों के दु:ख दर्द को महसूस करते हुए उनकी जितनी भी हो सके, ज्यादा से ज्यादा मदद करने के लिए सरकारी घोषणाओं के माध्यम से उन्हें राहत दिलाई गई। इसमें विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और बीपीएल के परिवारों का उत्थान हुआ है, यह हम सभी से छिपा हुआ नहीं है। इस सरकार का चाहे चुनाव घोषणा पत्र हो चाहे बजट घोषणा पत्र हो, सभी की क्रियान्विति सुनिश्चित हुई है। बीपीएल परिवारों को शिक्षा, चिकित्सा, बिजली, पानी, पेंशन, खाद्य सामग्री एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की योजनाओं से लाभान्वित किया गया है जिससे यह सिद्ध हो रहा है कि यह सरकार गांवों एवं गरीबों के विकास एवं उत्थान में कोई कोर कसर नहीं रखना चाहती है। हाल ही में दो बार गुर्जर आंदोलन हुए और पूरे प्रदेश में तनाव की स्थिति रही,

(श्री महावीर प्रसाद जीनगर)

लेकिन सरकार ने अपने धैर्य का परिचय देते हुए आपसी सामंजस्य के साथ आंदोलन को बिना किसी हिंसा के समाप्त करवाया है और क्रियाशीलता का एक परिचय पूरे प्रदेश की जनता को दिया है।

पूरे प्रदेश में 52 दिनों तक प्रशासन गांवों के संग अभियान चलाया गया जिसमें दूरदराज गांवों के गरीब किसान भाइयों के लिए गांव में ही सरकार के सभी विभागों ने कार्य किया है। गरीब किसानों की जमीनों के विवाद समाप्त हुए हैं। वर्षों से सरकारी भूमि पर जिन व्यक्तियों के कब्जे थे, उन कब्जों का नियमन हुआ है। सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त हुआ है। पेंशन के पात्र व्यक्तियों की हाथोंहाथ पेंशन स्वीकृत हुई है। मेरे विधान सभा क्षेत्र में भी राजस्व प्रकरणों का निस्तारण हुआ है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के माध्यम से करीब 1200 व्यक्तियों को पेंशन का लाभ प्राप्त हुआ है और करीब 950 व्यक्तियों को भूमि का आबंटन किया गया है। यह अभियान गरीब किसानों के लिए वरदान साबित हुआ है। इस अभियान की स्वयं माननीय मुख्य मंत्रीजी ने मानिटरिंग करके प्रत्येक दिन शिविरों का निरीक्षण किया। मेरे विधान सभा क्षेत्र में भी माननीय मुख्य मंत्रीजी शिविर में आये और वर्षों पुरानी हमारी मांग उच्च जलाशय की थी, उसकी टंकी बनाने की घोषणा करके क्षेत्र की जनता की मांग पूरी की, इसके लिए मैं और मेरे क्षेत्र की जनता उनकी आभारी रहेगी। जय हिन्द। धन्यवाद।

श्री सभापति: श्री हेमसिंह भड़ाना।

श्री हेमसिंह भड़ाना (थानागाजी): माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा सरकार के बनाए गए अभिभाषण को यहां सदन में पढ़ा गया, उस पर तीन दिन से लगातार चर्चा हो रही है। महामहिम द्वारा मिथ्या, असत्य और कागजी आंकड़ों के आधार पर जो अभिभाषण पढ़वाया गया, उसके ऊपर मैं क्या बोलूं, मेरा कोई बोलने का मन नहीं था। इन दो सालों में तीसरी बार इस झूठ के पुलिंदे को पेश किया गया। लेकिन एक बात मेरी समझ में आई कि जितने भी इसमें आंकड़े दिए हैं, वे सिर्फ आंकड़े हैं।

52 दिन तक प्रशासन गांवों के संग अभियान चलाया गया, उसमें 87 लाख लोगों के लाभान्वित होने के आंकड़े दिए हैं। कहीं बी पी एल के, कहीं विकलांगों को प्रमाण-पत्र के, निवास प्रमाण पत्र के आंकड़े दिए हैं। लेकिन यह एक सतत् प्रक्रिया है जो नियमित रूप से तहसीलदार बनाता है, एस डी एम बनाता है। आपने कोई मीर नहीं मारी। एक साल तक राजस्थान सरकार के

(श्री हेमसिंह भड़ाना)

कार्यालय खाली रहे और जहां-जहां पर मुख्य मंत्रीजी गए या मंत्रीजी गए, वहीं पर प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

मैं मेरे क्षेत्र में प्रशासन गांवों के संग अभियान के एक शिविर में पहुंचा, मैंने पूछा कि जहां मेरा थानागाजी का फोरेस्ट का क्षेत्र लगता है, यहां पर फोरेस्ट का अधिकारी कौन है। सम्बन्धित अधिकारी आना चाहिए था, डी एफ ओ, ए सी एफ, रेंजर आदि आने चाहिए थे वहां पर। लेकिन वहां पर दो लट्ठ लिए हुए कैटल गार्ड फोरेस्ट की ओर से बैठे थे। मैंने पूछा कि एस डी एम कहां हैं? तो उन्होंने कहा कि एस डी एम साहब वहां गए हैं जहां मुख्य मंत्रीजी आए हुए हैं। आपने राजस्थान की गरीब जनता के करोड़ों रुपए से प्रशासन गांवों के संग अभियान में झूठी और खोखली वाहवाही लूटने का काम किया है।

माननीय सभापति महोदय, एक बात अभी यहां आई कानून और व्यवस्था की। माननीय गृह मंत्रीजी नहीं हैं, आपके जमाने में कांग्रेस सरकार में थानों के अन्दर महिला पुलिसकर्मी से बलात्कार हो जाता है और खींचकर मार दिया जाता है, आप कानून व्यवस्था की बात कर रहे हैं। जेलों में जेलर सुरक्षित नहीं है, कौनसी कानून व्यवस्था की बात आप कर रहे हो? आपने कह दिया, गुर्जर आंदोलन, गुर्जर आंदोलन, गुर्जर आंदोलन, 318 बार, सुनते-सुनते मेरे कान बहरे हो गये। गुर्जरों ने आंदोलन किया, गुर्जर आंदोलन करेंगे। गुर्जर आंदोलन निपटा नहीं है, गुर्जर आपकी सरकार को निपटाने का काम करेंगे, यह आप कान खोल कर सुन लो। आपने पिछली सरकार के बारे में कहा कि 70 गुर्जरों की शहादत हुई। निश्चित रूप से सरकार वसुन्धराजी की थी, भारतीय जनता पार्टी के समय कानून व्यवस्था को सम्भालते समय कोई व्यवस्था बिगड़ी होगी। लेकिन उसके बाद जो समझौता हुआ उसमें हमारी भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने, वसुन्धराजी की सरकार ने गुर्जरों के साथ जो वादे किये, उनको शत-प्रतिशत पूरा निभाने का काम किया। हमने 5 प्रतिशत आरक्षण का विशेष पिछड़ा वर्ग के लिए बिल लाने का काम किया और सर्वसम्मति से लाये। कांग्रेस के नेता प्रतिपक्ष सीपी जोशीजी जो इनके यहां

(समय : 13.00 बजे)

पर नेता हैं, राष्ट्रीय पार्टी के प्रदेश के, उन्होंने सदन में कहा कि इससे बड़ा नहीं हो सकता और बाहर जाकर बयान देते हैं कि यह तो असंसदीय है।

(श्री हेमसिंह भड़ाना)

आपकी कथनी और करनी में अन्तर है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार के समय में 70 लोग मारे गये, निश्चित रूप से, लेकिन आपने तो उनके घर पर जाने का काम नहीं किया। क्या किया है आप लोगों ने? यही कहते रहे कि 70 लोग मार दिये, 70 लोग मार दिये। आपका दायित्व था, शुद्ध प्रशासन में अगर कोई गलती हुई है, कोई गलत काम हुआ है तो आपका नैतिक दायित्व बनता था, आप इस बैंच पर बैठते थे, आपको कहना चाहिए था कि गुर्जर के घर पर जाकर उनको सांत्वना दें। जोधपुर में हादसा हुआ मंदिर के अन्दर, वहां पर 20 श्रद्धालु मारे गये भीड़ के अन्दर, वहां पर आपकी राष्ट्रीय अध्यक्षा और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंहजी को पहुंचाया जाता है। लेकिन 20 दिन तक सिकन्दरा के अन्दर 20-20 गुर्जर सड़कों पर पड़े हैं, पीलूपुरा में पड़े हैं, एक भी कांग्रेसी नेता की हिम्मत नहीं हुई कि हम जाकर इस बात का कह दें। किस बात की गुर्जर आंदोलन की बात को रहे हो आप? और बड़े शर्म की बात आती है, मैं तो इन मुख्य मंत्रीजी को ...(व्यवधान) हां, तो सरकार को आपने दोषी ठहराया है न? लेकिन आप उससे ज्यादा दोषी हो। अन्याय करने वाला दोषी है। अन्याय देखने वाला भी दोषी है। ...(व्यवधान)... गोपालजी, बैठो। (व्यवधान) मैं तीन दिन से सुन रहा हूं ...(व्यवधान) आप सुनें, कर दिया तो मिलेगा न। हम बताएंगे अभी ...(व्यवधान)... आज आंदोलन समाप्त नहीं हुआ है। अभी पिछले दिनों ...(व्यवधान) एक मिनट, सुनो, ग्यारसीलाल जी, मैं बता दूंगा एक-एक को। जब आपने बोला, आप सुनो तसल्ली से। (व्यवधान) मेरा मामला है, मैं बोलूंगा। आप अपने बोलो। मैं भी डिस्टर्ब करना जानता हूं, बोलना जानता हूं।

श्री हनुमान बेनीवाल (खींवसर): आपको भी नहीं बोलने देंगे, नहीं तो।

श्री हेमसिंह भड़ाना (थानागाजी): हां, मैं इतना कमजोर नहीं जितना आप समझ रहे हो। (व्यवधान) लेकिन एक बात आपको बताऊं। पिछले दिनों 20 दिसम्बर को आंदोलन चालू हुआ, और मैं तो माननीय मुख्य मंत्रीजी की इतनी श्रद्धा रखता हूं, मुख्य मंत्रीजी अशोक महान, अशोक गहलोत लेकिन मैंने देखा कि मुख्य मंत्रीजी जैसे व्यक्ति जो कि 6 करोड़ इस राजस्थान की जनता का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, बयान दे रहे हैं कि गुर्जर आंदोलन का वसुंधराजी ने गडकरीजी की लड़की की शादी में षड्यंत्र रचा। इसलिए पिछली भारतीय जनता पार्टी की सरकार में किस कांग्रेसी बेटे के यहां पर षड्यंत्र रचा गया, आप इस बात को दिमाग में रख लो। आंदोलन चाहे समाज का हो, कोई

(श्री हेमसिंह भड़ाना)

कर्मचारी का हो, किसी की मांग का होता है, आंदोलन जनता की आवाज होता है। आंदोलन असंतोष उत्पन्न होता है उसकी आवाज होता है। आंदोलन एक मांग होती है, किसी व्यक्ति की। किसी राजनीतिक पार्टी के कहने से कोई आंदोलन नहीं होता है। बड़े शर्म की बात है। हमने वादा किया, पाँच परसेंट लागू किया। आपने जो समझौता किया, किसानों से 11-सूत्रों पर सहमति बनी, हमारी मूल मांग थी 5 परसेंट अति विशेष पिछड़े वर्ग का लागू किया जाए, जो हमने नहीं किया। हमने यहां पर विधान सभा में धरना दिया, आपने दस्तखत नहीं कराये। मैं और भवानी सिंह राजावतजी ...(व्यवधान) सभापतिजी, बोलने दो, दो मिनट। (व्यवधान) आपको सच्चाई सुननी पड़ेगी। मैंने बहुत सुन लिया है इस बात को, मैं अपनी बात कहना चाहता हूं, मैं भी सदन का माननीय सदस्य हूं।...(व्यवधान)... यहां पर आपने कहा, 285 करोड़ रुपये हमारी सरकार ने वादा किया, देवनारायण योजना के अन्दर वित्तीय वर्ष के अन्दर दिये। आपकी सरकार ने आते ही 285 करोड़ का बजट खतम कर दिया। आपने कौन सी बात कही थी? 70 मौतों पर 64 व्यक्तियों को नौकरी का जो वादा किया था सिर्फ 4 व्यक्ति रह गये जिनके कि या तो वारिमान तय नहीं हो पाये या उनकी विरासत तय नहीं हो पाई। प्रत्येक मृतक का मुआवजा दिया गया और घायल प्रत्येक को दिया गया। जो व्यक्ति सरकारी अस्पताल में नहीं थे उन व्यक्तियों को छोड़कर, सब घायलों को मुआवजा दिया गया है। आपने क्या किया? आपने तीन बार समझौता हुआ, गांधीवादी तरीके से हटा दिया। समझौता कोई नहीं हुआ है और न समझौता कभी था। व्यक्तियों से समझौता कर सकते हो, समाज से कभी समझौता नहीं होता है। मैं तो सभापति महोदय सोचता हूं कि इन माननीय मुख्य मंत्रीजी का दिवालिया निकल गया। बार-बार एक ही रट लगाये जा रहे हैं कि, साहब, भारतीय जनता पार्टी के लोग आंदोलन करा रहे हैं, भारतीय जनता पार्टी के लोग आंदोलन करा रहे हैं। हम भारतीय जनता पार्टी के सिपाही हैं लेकिन जहां समाज की बात आती है, समाज के हकों के लिए लड़ते हैं। भारतीय जनता पार्टी पर इस तरह से आंदोलन का आरोप लगाकर ...(व्यवधान)

श्री सभापति: श्री गोपाल मीणा। (व्यवधान)

श्री हेमसिंह भड़ाना (थानागाजी): और आप लोग हमारा कोई बचाव नहीं कर सकते ...(व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य, विराजें।

श्री हेमसिंह भड़ाना (थानागाजी): माननीय सभापति महोदय, आप लोगों ने उन लोगों को 20-20 मिनट दिये और 27 के बाद कोई कांग्रेसी नहीं है ...(व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य, विराजें।

श्री हेमसिंह भड़ाना (थानागाजी): बार-बार आप घंटी बजा रहे हो ...(व्यवधान) इसलिए मैं सदन से यह कहना चाहूंगा, आपने हर बार, हर व्यक्ति ने, अच्छा किसने कहा है, आप लोगों का पाप का घड़ा भर चुका है, +++ इतनी बड़ी कौम के साथ अन्याय कर रहे हो ...(व्यवधान) आप गुर्जरों को कुछ नहीं दे रहे हैं, इस बात को राजस्थान की गुर्जर जनता जानती है, राजस्थान का पूरा समाज जानता है।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, विराजो।

श्री हेमसिंह भड़ाना (थानागाजी): आपने कोई समझौता नहीं किया और इस तरह से यह आप करते रहे। जो यह राज्यपाल का अभिभाषण है...

श्री सभापति: श्री गोपाल मीणा ...(व्यवधान) अंकित नहीं होगा, माननीय सदस्य। (व्यवधान) विराजो।

श्री हेमसिंह भड़ाना (थानागाजी): ×××

श्री गोपाल मीणा (जमवारामगढ़): माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से राजस्थान के महामहिम राज्यपाल द्वारा तेरहवीं विधान सभा के षष्ठ सत्र में दिये गये अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। आज तीन दिन हो गये इस अभिभाषण के वाद-विवाद पर। महामहिम ने अपने अभिभाषण में राजस्थान राज्य के चहुंमुखी विकास का उल्लेख किया है, वह स्वागत योग्य है। यह सब कुछ केन्द्र की यूपीए सरकार के प्रधान मंत्री माननीय डा. मनमोहन सिंह एवं यूपीए चेयरपर्सन आदरणीया श्रीमती सोनिया गांधी के सफल नीति-निर्देश एवं कुशल सरकार-संचालन का परिश्रम है, जिसकी रीति-नीतियों का संचालन राज्य के लोकप्रिय, संवेदनशील, गांव, गरीब, मजदूर, दलित और अल्पसंख्यकों के रहनुमा मुख्य मंत्री श्रीमान् अशोक गहलोत द्वारा किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं उल्लेख करना चाहता हूं कि अभिभाषण द्वारा जो लेखा-जोखा महामहिम द्वारा किया गया है, वह सत्य है, तथ्यों पर आधारित है तथा नये राजस्थान की कल्पना को साकार करने वाला है। यह सरकार पूरी तरह से उत्तरदायी एवं संवेदनशील है। जैसा कि हम जानते हैं, केन्द्र सरकार की नीतियों के कारण हम विश्वव्यापी आर्थिक मंदी से उबर रहे

(श्री गोपाल मीणा)

हैं। राज्य के वित्तीय संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए योजना आयोग ने 24 हजार 44 करोड़ 76 लाख रुपये का योजना प्रावधान मंजूर किया है, वह स्वागत योग्य है। यह राज्य विकास के रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ेगा। मैं आपके माध्यम से राज्य सरकार के द्वारा आयोजित प्रशासन गांवों के संग अभियान की शानदार उपलब्धियों पर बधाई देना चाहता हूं। मेरे साथी ने बताया कि प्रशासन गांवों के संग में अधिकारी नहीं गये, मैं कहना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी के समय में जब कैम्प लगे थे, उनमें नाच-कूद और खाना हुआ करता था, रात को नाचना, गाना। लेकिन राजस्थान के मुख्य मंत्री ने जब कैम्प लगाये प्रशासन गांवों के संग के, उनमें कोई खाना नहीं था और न ही कोई माला पहनाने का या स्वागत का कार्यक्रम था, वहां सिर्फ काम होते थे। आपने भी देखा होगा, राजस्थान के मुख्य मंत्री ने सख्त निर्देश दिये। राजस्थान की 6 करोड़ जनता में जाकर प्रशासन गांवों के संग का कार्यक्रम जिस प्रकार चला, हमने देखा है। आपने भी अपने मन में देख रखा है लेकिन आप यहां आकर दूसरी बात बोल रहे हैं, असत्य बात बोल रहे हैं। राजस्थान के मुख्य मंत्री अशोक गहलोतजी ने जिस प्रकार से इस कार्यक्रम को अंजाम दिया, खुद जाकर अंजाम दिया और जनता के बीच में जाकर उन लोगों के काम करवाये, आपको बता दूं, पिछले 5 साल में जो काम नहीं हुए, 50 साल में जो काम नहीं हुए, वे भी इस प्रशासन गांवों के संग के अभियान में हुए हैं। मैं इस माध्यम से यह कहना चाहूंगा कि सरकार का जो यह कार्यक्रम रहा और प्रशासन गांवों के संग में आम आदमी, गरीब आदमी का जो काम हुआ, वह एक सराहनीय बात है और अशोक गहलोतजी की बहुत बड़ी उपलब्धि है। राज्य की कानून व्यवस्था सामान्य रही है, अच्छी रही है। लोकतंत्र के तरीके से ही हुआ इसलिए मैं इस सरकार को धन्यवाद देता हूं। अभी थानागाजी से आने वाले माननीय सदस्य ने बताया कि राजस्थान के गुर्जर आरक्षण में इनको देखा नहीं गया। 6 करोड़ जनता ने दो साल पहले उन्हें शासन दिया, सब लोग यह सोच रहे थे कि यह आरक्षण पता नहीं क्या उगलेगा, मुख्य मंत्री ने गांधीवादी तरीके से, लेकिन सूझ-बूझ से इसे अंजाम दिया और गुर्जर आरक्षण को निपटाया, वह आप सबके सामने है। खुद हेमसिंहजी भी मुझे कह रहे थे कि सरकार ने बहुत अच्छा किया, लेकिन पार्टी से बंधे हुए हैं। इनकी पार्टी ने जो काम किया, इनकी पार्टी ने जो 70 लोगों की जान ली, उसको किस प्रकार से यह पार्टी के सामने रखें। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी) अभी तो बोला ही नहीं। एक मिनट और।

(श्री गोपाल मीणा)

गुर्जर आरक्षण का पटाक्षेप किया बिलकुल सीधे तरीके से, गांधीवादी तरीके से। न लाठी चलाई, न गोली चलाई और शांतिपूर्वक उसका समाधान किया। समाज के व्यक्तियों ने बैठकर समझौता किया है, पूरी 6 करोड़ जनता के सामने है। इसलिए कानून व्यवस्था भी हमारी सामान्य से और भी अधिक अच्छी रही है।

पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत बनाने के लिए पहले चरण में पांच विभागों के अधिकार पंचायती राज को दिये गये हैं, वो भी एक सराहनीय कदम है। पूजनीय महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज की परिकल्पना को पूरा करेंगे। गांधीवादी मुख्य मंत्री अशोकजी गहलोत के नेतृत्व में यह चीज हम हासिल करेंगे। साथ में शिक्षा में रिक्त पड़े 50 हजार पदों पर जिला परिषदों के द्वारा भर्ती की जाएगी। मैं बता देना चाहता हूं कि हमारी सरकार में ऐसा कोई काम नहीं किया जैसा पिछली सरकार में किया था। अशोकजी गहलोत के टाइम पर राजीव गांधी शिक्षा संकुल बना। बाद में जब बीजेपी की सरकार आई तब उसको राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल के नाम से परिवर्तन किया गया। उस समय आदरणीय अशोकजी गहलोत ने निवेदन किया कि आप ऐसा मत करो, लेकिन इनकी मुख्य मंत्री और शिक्षा मंत्रीजी बैठे हैं, दोनों ने मिलकर उसका नाम परिवर्तन किया। लेकिन सरकार कांग्रेस की फिर आई दो साल बाद में....

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समअप करो। समय की पाबंदी सब के लिए है।

श्री गोपाल मीणा (जमवारामगढ़): एक मिनट। पाबंदी कहां है, अभी तो बोला ही हूं।

श्री सभापति: नहीं, अब समअप करो।

श्री गोपाल मीणा (जमवारामगढ़): सरकार जब कांग्रेस की आई और इस बात को रखा गया कि इसका नाम परिवर्तन हो या नहीं हो, तब अशोक गहलोतजी ने एक बात कही कि हम नाम परिवर्तन नहीं करेंगे क्योंकि वो भी हमारे देश के राष्ट्रपति रहे हैं, इसलिए उन्हीं के नाम से रखा जाएगा। ऐसा काम हमारी सरकार नहीं करती। आप राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को झूठ का पुलिंदा बता रहे हैं, राज्यपाल महोदय ने यह जो आपके सामने, राजस्थान की 6 करोड़ की जनता के सामने जो अभिभाषण पेश किया है वह

(श्री गोपाल मीणा)

सत्य पर पेश किया गया है और सत्यता पर इस चीज को लागू करने के लिए हमारे आदरणीय मुख्य मंत्रीजी और राजस्थान की सरकार कटिबद्ध है।

श्री सभापति: माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, अब आप समअप कर दो। माननीय सदस्य, अब आप समअप कर दो।

श्री गोपाल मीणा (जमवारामगढ़): एक मिनट साहब। एक मिनट में कर रहा हूं।

श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा (चाकसू): अब विपक्ष को बोलने का मौका दो। आप तो टेबल बजाकर धन्यवाद दे दो।

श्री गोपाल मीणा (जमवारामगढ़): नहीं, ऐसी बात नहीं है। आप सिर्फ बोलने की बात कर रहे हैं, मैं कहना चाह रहा हूं कि हमारे समय में, आपके समय में....

श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा (चाकसू): विपक्ष गिनाएगा कमजोरियां, आप तो धन्यवाद दीजियेगा बस। आपका काम धन्यवाद देने का है।

श्री सभापति: माननीय सदस्या, आप तो विराजो।

श्री गोपाल मीणा (जमवारामगढ़): बिजली विभाग में आदरणीय मुख्य मंत्रीजी ने दो साल में 2 हजार मेगावाट बिजली से अधिक बिजली पैदा की जबकि पिछली सरकार में केवल 1700 मेगावाट बिजली पैदा की।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब विराजो। अब विराजो आप। श्री मोहनलालजी गुप्ता। माननीय सदस्य, विराजो। (व्यवधान)

श्रीमती कमसा मेघवाल (भोपालगढ़): माननीय सभापति महोदय, एक मिनट बोलना चाह रही हूं, सिर्फ एक मिनट।

श्री सभापति: मैंने आपका नाम नहीं पुकारा, माननीय सदस्या, आप विराजें। आप विराजो। मैंने मोहन लालजी गुप्ता का नाम पुकारा है, आप विराजो।

श्रीमती कमसा मेघवाल (भोपालगढ़): अंकित मत करवाना, एक मिनट में बात कहना चाह रही हूं।

श्री सभापति: अब, माननीय सदस्य, अंकित नहीं होगा, आप विराजो।

श्री गोपाल मीणा (जमवारामगढ़): ×××

श्रीमती कमसा मेघवाल (भोपालगढ़): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (तारानगर): ×××

श्री सभापति: आप विराजो। अंकित नहीं हो रहा है, माननीय सदस्य।

श्री गोपाल मीणा (जमवारामगढ़): ×××

श्री सभापति: आप विराजो। श्री मोहनलाल गुप्ता। आप विराजो।

श्रीमती कमसा मेघवाल (भोपालगढ़): ×××

श्री सभापति: आप विराजो। श्री मोहन लाल गुप्ता, आप तो शुरू करें। आप विराजो।

श्रीमती कमसा मेघवाल (भोपालगढ़): ×××

श्री सभापति: आप विराजो, माननीय सदस्या। अंकित नहीं हो रहा आपका। बिलकुल अंकित नहीं हो रहा। श्री मोहन लालजी गुप्ता।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): माननीय सभापति महोदय, सरकार का अभिभाषण महामहिम राज्यपाल महोदय ने पढ़ा और उसमें राज्य की विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई। पक्ष के लोग इसे बहुत बड़ी बात बता रहे हैं और विपक्ष के लोग झूठ का पुलिंदा बता रहे हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि यह कोई झूठ का पुलिंदा है। ये राजस्थान सरकार की उपलब्धियां हैं, लेकिन क्या इन उपलब्धियों पर हम गर्व कर सकते हैं? क्या ये उपलब्धियां गरीब, गांव और किसान तक पहुंच गईं और उनके दुःख दर्द को दूर किया? यह हम अपना सैल्फ असैसमेंट कर लें। सत्ता पक्ष वाले माननीय सदस्य कहते हैं कि हमने बहुत बड़ी उपलब्धियां कर दीं। क्या ये योजनाएं, क्या ये आंकड़े जिनके माध्यम से हम उपलब्धियां बता रहे हैं, उन्होंने उस गरीब के आसूं पोंछे जिस गरीब के आसूं आज दिख रहे हैं? आप चलिये जयपुर शहर की कच्ची बस्तियों में, जयपुर शहर राजस्थान की राजधानी है, राजधानी में आजादी के इतने वर्षों बाद भी गरीब के घर में यदि आप जाकर देखेंगे तो किस प्रकार से वह जीवन व्यतीत कर रहा है, यह देखें। क्या वह बच्चे को दूध पिला रहा है? वह पौष्टिक आहार ले रहा है? वह बिजली का बिल चुका पा रहा है क्या? वह अपने घर में सही ढंग से पानी पी रहा है क्या? उसको सही ढंग से पानी मिल रहा है क्या? इस बात का असैसमेंट हमने किया है क्या? जयपुर शहर की अनुसूचित जाति की बस्तियों में जाकर देखिये, जोधपुर की अनुसूचित जाति की बस्तियों में जाकर देख लीजिये, गांवों

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

की अनुसूचित जाति की बस्तियों में जाकर देख लीजिये। क्या अनुसूचित जाति या जनजाति के व्यक्ति के आसूं इस राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के माध्यम से पोंछे गये हैं? नहीं पोंछे गये हैं। उसके घर में लैट्रिन भी नहीं है। जयपुर शहर की अनुसूचित जाति की कच्ची बस्तियों के लोगों के घरों में सार्वजनिक शौचालय हैं? हम असैसमेंट करके देखें कि हम कच्ची बस्ती में, अनुसूचित जाति के लोगों की बस्ती में लोगों के घरों में हम शौचालय भी नहीं पहुंचा सके। आप चलिये मेरे साथ में। यह एक असैसमेंट किया है, पानी पहुंचा सके क्या? बिजली पहुंचा सके क्या? क्या उसको घर दे सके?

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): पूरा भाषण लेट्रीन पर बोलो आज। टट्टी तो आप ही देखो जाकर, मैं नहीं देखूंगा।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): क्या उसको घर दे सके? उसके घर का सपना भी अभी पूरा नहीं हुआ है, मकान का सपना भी अभी पूरा नहीं हुआ। एक परिवार, 5-6 आदमी का परिवार 10 गज जमीन में किस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। यह बात अभिभाषण में व्यक्त नहीं होती है। केकड़ी से आने वाले माननीय सदस्य बड़े संवेदनशील हैं, चलकर देख लें मेरे साथ में।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): टट्टी तो आप ही देखो जाकर, मैं नहीं देखूंगा।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): आप भी जाकर देख लें। जिस प्रकार की स्थिति मैं बता रहा हूं, आप चलकर देखें कि किस प्रकार से जयपुर शहर का रिक्शा वाला, जयपुर शहर का...

श्री सभापति: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, आपस में बात नहीं करें। विराजिये, आप विराजिये।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ...जयपुर शहर का तांगे वाला, जयपुर शहर का रिक्शे वाला, जयपुर शहर का फुटपाथ व्यवसायी किस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करता है।

डा. रघु शर्मा (केकड़ी): सभापति महोदय, यह मुझे टट्टी दिखाने ले जाना चाहते हैं, मैं इनको कह रहा हूं, मुझे माफ करो।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): इसका मतलब हमें शर्म आनी चाहिए कि हम संवेदनशील नहीं हैं गरीब व्यक्ति के प्रति। क्या उनको शिक्षा मिल रही है, आज सरकारी स्कूलों में जाकर देखिये। सरकारी स्कूलों में जो

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

बच्चे पढ़ रहे हैं, क्या वे अपनी ड्रेस भी खरीद सकते हैं? क्या वे अपनी स्कूल का बैग भी खरीद सकते हैं? आज हम सर्वशिक्षा अभियान की बात करते हैं, रेलवे स्टेशन पर जाकर देखिये, होटलों और ढाबों पर काम करने वाले मजदूरों को जाकर देखिये, क्या उन तक शिक्षा पहुंची है? क्या उनको शिक्षा प्राप्त हुई है? क्या वह अपने हस्ताक्षर स्वयं कर सकता है? सर्वशिक्षा अभियान की बात हम कर रहे हैं, लोगों को घर-घर तक हम शिक्षा दे रहे हैं और हम लोगों से यह कहते हैं कि आप स्कूल जाओ, स्कूल में पढ़ो लेकिन क्या उन लोगों तक शिक्षा पहुंची है? नहीं पहुंची। असैसमेंट करके देखो। मैं कहना चाहूंगा कि आज कितने लोग बेरोजगार हैं, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। आप जाकर देखिये, किसी बंगाली के घर में जो जयपुर शहर में आये हैं, बिहारी के घर पर जाकर देखिये, 5-5, 7-7 लोग रहते हैं। किस प्रकार से एक कमरे में, अंधेरे में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। क्या हम संवेदनशील नहीं हैं कि हम उनको मकान मुहैया करा सकें, उनको शिक्षा मुहैया करा सकें, उनको रोजगार मुहैया करा सकें। आज वे लोग बेरोजगार हो गये।

कहते हैं, हम अल्पसंख्यकों के बहुत काम कर रहे हैं, उनके लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं ला रहे हैं। अल्पसंख्यकों के घर पर आप जाकर देखो कि किस प्रकार से वे जीवन यापन कर रहे हैं। सारा ज्वैलरी व्यवसाय ठप्प पड़ा है, हजारों लोग बेरोजगार हैं, क्या उनके लिए सोचा? क्या कारपेट वाले लोगों के लिए सोचा? क्या दिन भर मजदूरी करने वाले, गोटा-किनारी वाले लोगों के लिए सोचा, ताले-कूंची वाले लोगों के लिए सोचा? राज्यपाल का अभिभाषण हो गया, हमने बड़ी-बड़ी बातें कर दीं, हमने यह कर दिया, हमने वह कर दिया, लेकिन असैसमेंट नहीं किया। मैं कहना चाहता हूं, माननीय सभापति महोदय, यह अभिभाषण है, यह ठीक है कि सरकार के आंकड़े हैं, लेकिन इसका सोशल आडिट भी होना चाहिए...

श्री सभापति: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ...इसका सोशल आडिट भी होना चाहिए। ये जो सी.ए.जी. होते हैं, उसके आधार पर सरकार का आकलन नहीं किया जा सकता है। आंकड़ों का सोशल आडिट होना चाहिए कि किस प्रकार से आम आदमी तक यह योजना पहुंचे, उनको क्या-क्या दिक्कतें आईं और उन दिक्कतों का हम क्या-क्या सोल्यूशन कर सकते हैं।

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

माननीय सभापति महोदय, आज जयपुर शहर में जिस प्रकार की स्थिति है, बेरोजगार लोग रोजगार की तलाश में हैं और हमने अतिक्रमण के नाम पर लोगों को उजाड़ दिया। उनको बसाया नहीं, उनको किसी प्रकार की कोई मजदूरी नहीं दी। मैंने स्थगन प्रस्ताव के माध्यम से यह मामला उठाया था, आज तक उन फुटपाथी व्यवसायियों को कहीं भी चिह्नित नहीं किया गया। वे दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर हैं। माननीय सभापति महोदय, यह तो केवल फुटपाथी व्यवसायियों की बात कर रहा हूं। लेकिन या तो हमारे जयपुर शहर में हमारे मंत्रीजी की नहीं चलती है। जयपुर शहर के एकमात्र मंत्री, वह मेयर के पास जाते हैं...

श्री सभापति: माननीय सदस्य, सम-अप करो आप अब। माननीय सदस्य, अब सम-अप करें आप।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मेयर उनकी सुनती नहीं है। यह क्या मंत्री हैं? राजस्थान सरकार के केबिनेट के मंत्री और उसकी मेयर सुनती नहीं। इस प्रकार की बात है। यह बहुत बड़ी शर्म की बात है। मैं समझता हूं कि जब हमारे मंत्री की नहीं सुनी तो फुटपाथी व्यवसायियों की यह सरकार क्या सुनेगी?

माननीय सभापति महोदय, हमने प्रशासन शहरों के संग अभियान चलाया, हमने प्रशासन गांवों के संग अभियान चलाया, मैं पूछना चाहता हूं कि इस प्रशासन शहरों के संग अभियान के दौरान कितनी कच्ची बस्ती वालों को आपने पट्टे दिये?

श्री सभापति: माननीय सदस्य, सम-अप करो आप।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): कितने गृह निर्माण सहकारी समिति वालों को पट्टे दिये आपने? कितने लोगों को आपने फायदा पहुंचाया?

सभापति महोदय, हम बी.पी.एल. के लोगों की बात करते हैं। आज भी जयपुर शहर में 50,000 से ज्यादा मामले लम्बित हैं बी.पी.एल. परिवारों के कि हमारे बी.पी.एल. के कार्ड बनाये जाएं। बी.पी.एल. के कार्ड उनके नहीं बने।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, सम-अप करो आप।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): माननीय सभापति महोदय, मैं दो मिनट में अपनी बात खतम करना चाहता हूं। आपका आशीर्वाद चाहूंगा गरीबों के लिए, दो मिनट।

श्री सभापति: मैं आपको एक मिनट देता हूं।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): माननीय सभापति महोदय, मैंने कलक्टर के यहां से आंकड़े निकलवाये, उन्होंने यह कहा कि बी.पी.एल. लोगों के 50,000 से ज्यादा मामले यहां पैंडिंग हैं। उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। दर-दर चक्कर खा रहे हैं, कभी कलेक्ट्रेट में, कभी नगर निगम में, कभी इधर-उधर। उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। तो क्या हम बी.पी.एल. लोगों को वास्तव में लाभ पहुंचा पा रहे हैं? वास्तव में अगर यह संवेदनशील सरकार है, माननीय स्वायत शासन मंत्रीजी बैठे हैं, आप जरा नगर निगम के आंकड़े उठाकर देख लीजिये, प्रशासन शहरों के संग अभियान के आंकड़े उठाकर देख लीजिये। कलक्टर से पूछिये कि भाई, इन बी.पी.एल. परिवार के लोगों को क्यों नहीं अधिकार मिल रहे हैं, उनकी सुनवाई क्यों नहीं हो रही है। कानून के तहत सुनवाई का अधिकार है लेकिन एस.डी.एम. साहब कहते हैं कि मामला नगर निगम में पैंडिंग है।

माननीय सभापति महोदय, आप राजस्थान में कानून व्यवस्था की बात कर रहे हैं, कल का ही एक मामला पैंडिंग है। उस आधार पर माननीय गृह मंत्रीजी, यदि उनमें नैतिकता शेष बची है तो किरोड़ी लाल मीणाजी जिस प्रकार से तीन विधवाओं को लेकर आये हैं, उनके बच्चों को लेकर आये हैं, नैतिकता के आधार पर त्याग-पत्र देने के लिए केवल एकमात्र यही मामला पर्याप्त सिद्ध है कि कानून व्यवस्था की स्थिति क्या है।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब सम-अप करो। माननीय सदस्य।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): यह कानून व्यवस्था की स्थिति है कि एक विधवा राजस्थान की राजधानी जयपुर में सड़क पर बैठी है, हमारे सांसद बैठे हैं और उनको किसी प्रकार से कोई न्याय नहीं मिल रहा है। डकैत को हम नहीं पकड़ पा रहे हैं और हम कहते हैं कि कानून व्यवस्था की स्थिति बहुत अच्छी है। जयपुर शहर में दुकान लुट रही है, मकान लुट रहे हैं, वृद्ध दम्पत्तियों की हत्या करके लोग-बाग़ भाग रहे हैं, बैंक लुट रहे हैं, दिन-दहाड़े लुट रहे हैं और हम कहते हैं कि कानून व्यवस्था की स्थिति बहुत ठीक है। कहां से कानून व्यवस्था की स्थिति ठीक है? कानून व्यवस्था की स्थिति इस राज में जर्जर हो चुकी है। इस प्रकार की कोई बात है तो, माननीय गृह मंत्रीजी...

श्री सभापति: माननीय सदस्य। श्री मदनलाल वर्मा। श्री मदनलाल वर्मा।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): आज इस पर एक बहस करा लें। माननीय सभापति महोदय, दो सुझाव देना चाहूंगा, काम सब सरकारें करती हैं, केवल दो-तीन बातें हैं...

श्री सभापति: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, अब आप विराजें। मंत्रीजी कराते रहेंगे, अब आप विराजें। माननीय सदस्य, विराजें।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ...कि आप एएजी की आडिट करवाते हैं, एक सोशल आडिट करवाकर...

श्री सभापति: माननीय सदस्य, मैं नाम पुकार चुका हूं। माननीय सदस्य।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): आपने एक अफोर्डेबल हाउसिंग का काम किया, यह बहुत अच्छी बात है। अफोर्डेबल हाउसिंग योजना लाये हैं, गरीबों के लिए लाये हैं, लेकिन यह अफोर्डेबल हाउसिंग, वह दूर जाकर बस रहे हैं लोग-बाग़, दूर-दूर, 20-20 किलोमीटर दूर। कच्ची बस्तियों की कुछ जमीन आइडेंटिफाई कीजिये, उन लोगों को वहां पर बसाइये। अफोर्डेबल हाउसिंग दीजिये और उनका भला कीजिये। गरीबों का भला कीजिये, तब जाकर आपकी संवेदनशील सरकार का फायदा होगा, गरीबों के लिए फायदा होगा, उसमें आम आदमी को बसाइये। इस प्रकार की योजना लाइये। मैं कहना चाहूंगा कि जयपुर शहर में सब गरीब लोगों को बसाइये, उनके लिए जगह दीजिये, उनके रोजगार की व्यवस्था कीजिये। मुख्य मंत्री रोजगार योजना के तहत आपने पिछली बार बहुत सारी थड़ियां बसाई थीं लेकिन थड़ियों का लाभ नहीं मिला... (व्यवधान)

श्री सभापति: श्री मदनलाल वर्मा।

श्री शांती कुमार धारीवाल (गृह मंत्री): अफोर्डेबल हाउसिंग की पालिसी पढ़ी भी है आपने? वह कहां से लाये हैं?

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): पढ़ी है, साहब, बहुत अच्छी है। यह अच्छी है, मैं स्वागत करता हूं।

श्री शांती कुमार धारीवाल (गृह मंत्री): अफोर्डेबल हाउसिंग में एक मकान सब्सिडी देने के बाद 2.40 लाख रुपये का है, क्या वह कच्ची बस्ती वाले दे सकेंगे? कच्ची बस्ती वालों के लिए एक अलग स्कीम है। जरा थोड़ी-सी जानकारी लीजिये, थोड़ा होमवर्क करो।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं कह रहा हूं, सर, कि उनको भी दीजिये, कच्ची बस्ती वालों को भी दीजिये। मैं यह कह रहा हूं कि उनको

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

दीजिये। उनको वहां बसाओ मत। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आप मेरे मुंह से कहलवाना चाहते हैं, यह अच्छी बात है। यह बहुत अच्छी बात है, लेकिन कच्ची बस्ती वालों को लीजिये अफोर्डेबल हाउसिंग में।

श्री सभापति: गुप्ता साहब, विराजिये। कृपया विराजिये। मोहन लाल जी गुप्ता, विराजिये। श्री मदनलाल वर्मा।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): और मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि आप संवेदनशील बनें।

श्री सभापति: अब अंकित नहीं होगा, माननीय सदस्य, अब अंकित नहीं होगा। आप विराजिये।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

श्री मदनलाल वर्मा (डग): माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा 15 फरवरी को पढ़े गये अभिभाषण पर प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव के समर्थन में मुझे बोलने का समय दिया, मैं आपका आभारी हूं। माननीय सभापति महोदय, किसी भी दल की सरकार हो और कोई भी राजनैतिक दल हो, जनता के समक्ष हम वादे करके आते हैं। सत्ता में बैठते हैं तो गांव के गरीब, किसान, मजदूर, महिलाएं, नौजवान, बेरोजगार, वृद्ध, विकलांग, निःशक्तजन, जो भी समाज के व्यक्ति हैं, वे सरकार से अपेक्षा रखते हैं। सरकार उनकी अपेक्षाओं पर कैसे खरा उतरे और उन तक सरकार की सहायता कैसे पहुंचे, यह बात महामहिम ने अपने भाषण में कही और मैं इसके लिए हमारे राजस्थान के मुख्य मंत्री आदरणीय अशोकजी गहलोत साहब को धन्यवाद देना चाहता हूं। आपने राजस्थान के विकास के लिए जो प्रयास किये हैं और जो नीतिगत फैसले लिये हैं, वह निश्चित ही राजस्थान के भविष्य के लिए बहुत अच्छी बात है। राजस्थान का गरीब किस तरह से उसका जीवन स्तर उठे, राजस्थान के किसान को किस तरह आर्थिक मजबूती मिले, राजस्थान के मुख्य मंत्री ने इस सरकार में फैसले लिये हैं। इस भाषण को किसी ने मिथ्या बताया, किसी ने असत्य बताया, किसी ने इसको झूठ का पुलिंदा बताया। परन्तु माननीय सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि रोटी-कपड़ा और मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी और सिंचाई, ये सारी सुविधाएं हमारे विकास की मूल धारणा हैं। हमें इन सुविधाओं की जरूरत है और ये सुविधाएं हमें मिल रही हैं। प्रशासन गांव के संग अभियान चला, लगभग 52 दिन के इस अभियान में सरकार के 18 विभागों ने लगातार गांव

(श्री मदनलाल वर्मा)

के गरीब तक पहुंचने का प्रयास किया। तीन-तीन दिन से लगाकर आठ-आठ दिन तक गांव में नि:शक्त, गरीब, विधवा और अनाथ कहां-कहां पर हैं, कैसे हैं, किस हालत में हैं, उनकी क्या हम सहायता कर सकते हैं, किस नियम के तहत उनको हम सरकार की मदद दे सकते हैं, उनको चिह्नित करके अभियान में उन लोगों की मदद की। यह निश्चित है, यह सत्य है। राजस्थान में गरीबों ने सरकार को जो वोट दिये, यह सोचकर वोट दिये कि सरकार हमारी सहायता करेगी। राजस्थान का मजदूर पलायन करता था, आज इस नरेगा के चलने के बाद मजदूरों का पलायन रुका है, मजदूर की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। एक मजदूर का जीवन स्तर ऊंचा उठा है इसके तहत। आज गरीब मजदूर इस बात को विचार कर रहे हैं।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, पीछे। पीछे, माननीय सदस्य, माननीय सदस्य।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): राजस्थान के किसान को बिजली की जरूरत थी, उसको बिजली कनेक्शन की जरूरत थी, उसको सिंचाई के पानी की जरूरत थी, इसके लिए मुख्य मंत्री महोदय द्वारा जो फैसले लिये गये हैं, राजस्थान में विद्युत उत्पादन में बड़े-बड़े जो पावर प्लांट आये, उसके बाद विद्युत प्रसारण तंत्र को जिस प्रकार से गांव तक पहुंचाने का, खेत तक पहुंचाने का मुख्य मंत्रीजी ने जो फैसला लिया है, यह एक अनूठी मिसाल है। 33 केवी जीएसएस, ग्रामीण फीडर, पंचायत फीडर के माध्यम से गरीब किसान के खेत तक बिजली पहुंचाने का जो लक्ष्य राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी ने लिया, निश्चित रूप से इसके अच्छे परिणाम आ रहे हैं, हमारा किसान एक मजबूत स्थिति में होगा।

दूसरी बात, आज राजस्थान में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत फैसले लिये गये हैं कि निश्चित समय में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की दुकान खुले और गांव के गरीब को वितरण प्रणाली का फायदा मिलना चाहिए। आज 36 लाख परिवारों को दो रुपये किलो गेहूं उपलब्ध कराया जा रहा है। इससे राजस्थान के गरीब में यह आशा बंधी है कि राजस्थान की सरकार हमारी सेवा कर रही है। राजस्थान के वे हजारों अनाथ बच्चे जिनके माता-पिता नहीं हैं पालनहार योजना में 675 रुपये प्रति माह की मदद उनके घर तक पहुंचाने का सरकार ने प्रयास किया ताकि उन अनाथ बच्चों का पालन हो और वे अपनी शिक्षा-दीक्षा कर सकें।

श्री सभापति: माननीय सदस्य।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): माननीय सभापति महोदय, थोड़ा कम से कम...

श्री सभापति: बस, माननीय सदस्य, अब सम-अप, सम-अप।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): मैं तो अभी पूरा ही नहीं कर पाया। कुछ तो बोलने दीजिये।

श्री सभापति: नहीं, अब बस। एक लास्ट जो आपको बोलना है, फटाफट खतम करो।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): अभी कर रहा हूं। माननीय सभापति महोदय, राजस्थान की सरकार ने समाज के हर वर्ग तक पहुंचने का प्रयास किया है। इसमें उन भाइयों को भी नहीं छोड़ा गया जो समाज में अपने आप को उपेक्षित महसूस कर रहे थे, हमारे अल्पसंख्यक भाई। राजस्थान में अल्पसंख्यक विभाग का अलग गठन करके उनकी जो पीड़ा है या उनकी जो कमियां हैं या उनके विकास में जो दिक्कतें आ रही थीं, उनको भी दूर करने का प्रयास किया है। एक और राजस्थान में....

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब आप सम-अप करें। निवेदन है, निवेदन है। आप विराजें।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): थोड़ा बोलने दें, माननीय सभापति महोदय।

श्री सभापति: विराजें, विराजें। श्री बनवारी लाल सिंघल । माननीय सदस्य, अब सम-अप करें।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): सभापति महोदय, एक मिनट तो और दे दो।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब बस।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): एक मिनट और दे दो, साहब।

श्री सभापति: बोलिये।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): माननीय सभापति महोदय, एक बात और यहां पर आई, अनुसूचित जाति, जनजाति और ओबीसी की जो छात्राएं थीं, ऊंची कक्षा में पढ़ने के लिए राजस्थान के मुख्य मंत्री ने उनकी तरफ ध्यान दिया और उनको भी सहायता का कह दिया। उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति देकर उनको आगे प्रोत्साहन दिया है। इस तरह से उस गांव की, उस गरीब तक....

श्री सभापति: चलिये। श्री बनवारी लाल सिंघल। अब विराजिये। माननीय सदस्य, अब विराजिये।

श्री मदनलाल वर्मा (डग): सरकार ने पहुंचने का प्रयास किया है। माननीय सभापति महोदय, मैं राज्यपाल के इस भाषण का पुरजोर समर्थन करता हूं। धन्यवाद, जय हिन्द।

श्री बनवारीलाल सिंघल (अलवर शहर): माननीय सभापति महोदय, राजस्थान के महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा राजस्थान की सरकार ने 15 फरवरी, 2011 को राजस्थान की विधान सभा में असत्य पर आधारित जो अभिभाषण पढ़वाया, मैं उसका पुरजोर शब्दों में विरोध करता हूं। अभिभाषण में अंकित कुछ तथ्यों पर मैं अपनी बात रख रहा हूं। अभिभाषण में अंकित बिन्दु संख्या दो में माननीय राज्यपाल महोदय के द्वारा कहा गया-प्रदेश में सत्तासीन सरकार द्वारा पारदर्शी और संवेदनशील शासन। प्रदेश के थानों में मुकदमे दर्ज नहीं होते बड़े से बड़े अपराध के। अपराधियों को अप्रत्यक्ष रूप से संरक्षण देने का काम प्रदेश सरकार कर रही है। एफआईआर लाज नहीं होती, इसलिए वर्तमान के आंकड़े घटाकर राजस्थान को अपराधमुक्त बनाने की बात कर रहे हैं। राजस्थान सरकार के माननीय गृह मंत्रीजी बैठे हैं, आप एक बार सच्चे मन से आदेश जारी करें कि राजस्थान में कोई भी अपराध घटित होता है, उसकी एफआईआर होगी, जांच के परिणाम कुछ भी हों। तो अगले वर्ष आपकी सरकार में कितने अपराध घटित हो रहे हैं, इसके आंकड़े आपके और सारे राजस्थान की जनता के सामने होंगे।

राष्ट्रीय जनगणना 2011 का जिक्र अभिभाषण में किया गया है, सभापति महोदय, जनगणना शुरू हो गई है। छह वर्ष से कम के बच्चों को जनगणना के प्रपत्र में...(व्यवधान) अनिताजी। राष्ट्रीय जनगणना के प्रपत्र में छह वर्ष से कम के बच्चों को निरक्षर दर्ज किया जा रहा है, बहुत महत्वपूर्ण बिन्दु की ओर आपका ध्यान आकर्षित कर रहा हूं, सभापति महोदय, जबकि ढाई से तीन वर्ष का बच्चा आज स्कूल में जाता है, चाहे वह किसी ढाणी का हो, शहर की तो बात छोड़ दीजिये आप। जनगणना का काम छह महीने बाद पूरा हो जाएगा, आने वाले दो साल में सम्पूर्ण साक्षरता मिशन के नाम पर अरबों-खरबों का बजट आएगा और राजस्थान की भ्रष्ट मशीनरी साक्षरता के नाम पर इसको चट कर जाएगी। राजस्थान की सरकार के द्वारा किये गये कामों को इस अभिभाषण में बताया गया कि प्रदेश सरकार ने विद्युत उत्पादन की दिशा में बहुत काम किया है। अलवर में 16 जनवरी, 2011 को दो 33/11

(श्री बनवारीलाल सिंघल)

केवीए सब स्टेशनों का उद्‌घाटन हुआ। सरकार ने बढ़-चढ़ कर इसका श्रेय लेने का प्रयास किया, अपने नुमाइंदों के द्वारा इनका उद्‌घाटन करवाया। लेकिन यह भूल गये कि 27.8.2008 को वसुंधराजी ने इन दोनों स्टेशनों को मंजूरी दी थी, आपने केवल उनका क्रियान्वयन किया है। आपने उनकी कोई मंजूरी नहीं की। आपने जल संसाधनों के बारे में बहुत बड़ी-बड़ी बात अभिभाषण के माध्यम से कही। मैं आपके माध्यम से बता देना चाहूंगा कि अलवर में मेरे विधान सभा क्षेत्र में, नौ ओवरहैड सर्विस रिजर्वर, दो ग्राउंड रिवर्जर, 85 किलोमीटर पानी की लाइन आरयूआईडीपी के माध्यम से जनवरी, 2008 और मार्च, 2008 में मंजूर की गई थी जिसका कार्य अब कार्यान्वित हो चुका है, राज्य की सरकार अपने अभिभाषण में, अपने बजट घोषणा पत्र में इसको शामिल करके झूठी वाहवाही लेने का काम कर रही है। पिछले दो वर्ष में कितने काम सरकार ने पानी और बिजली में अलवर विधान सभा क्षेत्र में किये, यह जांच का विषय है, इसको भी सदन के पटल पर रखने का काम करें। आपने 52 दिन के प्रशासन गांव के संग अभियान के लिए बहुत बड़ी-बड़ी वाहवाही लूटी है, आंकड़े प्रस्तुत किये हैं कि हमने इतने बड़े-बड़े काम कर दिये। माननीय सभापति महोदय, आपने स्वयं अपने अभिभाषण में कहा कि राजस्थान में एक भी प्रदर्शन नहीं हुआ। मेरे विधान सभा क्षेत्र में 26 नवम्बर, 2010 को दिवाकरी ग्राम पंचायत मुख्यालय पर प्रशासन गांवों के संग अभियान में जोरदार प्रदर्शन हुआ, अधिकारियों के भागने की स्थिति आ गई। मैं आपको यह बात बता देना चाहता हूं, एक अकाट्य प्रमाण है एक भी नामान्तरकरण उस दिन उस कैंप में नहीं दर्ज किया गया। आप इसकी जांच कराएं और सदन के पटल पर रखें। जब मैंने वहां के एसडीएम को कहा कि कितने नामान्तरकरण उस दिन दर्ज किये गये, उनकी कापी भिजवाएं। तो पटवारी से लेकर एसडीएम तक सारे लोगों के मेरे पास फोन आये और केवल एक ही बात आई, एमएलए साहब, माफ करें, गलती हो गई होगी।

नि:शुल्क बाल शिक्षा का अनिवार्य अधिनियम, 2009, आपके पास आधारभूत ढांचा नहीं, आपको 96 हजार कमरे चाहिए राजस्थान में। भवनरहित विद्यालय चल रहे हैं, 46 हजार कमरे चाहिए। सवा दो लाख आपको टीचर चाहिए, 14 हजार करोड़ रुपए जैसी भारी भरकम राशि चाहिए। इन सब की व्यवस्था किए बिना आपने शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 अप्रैल से लागू कर दिया। अभिभाषण में वाहवाही लूट रहे हो, बजट के भाषण में

(श्री बनवारीलाल सिंघल)

वाहवाही लूट रहे हो। ऐसी वाहवाही लूटने से राजस्थान में शिक्षा का भला नहीं होने वाला है। राजस्थान की जनता का बिलकुल भी भला नहीं होने वाला है। राजस्थान का अवैध खनन माफिया, राजस्थान का गो-तस्करी माफिया, यह हालत हो गई है कि अलवर जिले में आमने-सामने गोली चल रही है, पुलिस छिप जाती है। काला मेव नाम का एक व्यक्ति और भागते-भागते उसके पीछे मेव जाति का ही एक कानिस्टेबल दोनों कुएं में गिर गए और पुलिस को पीछा छुड़ाना पड़ा। आपने आईपीएस अधिकारी सहित अन्य पुलिस अधिकारी और कर्मचारियों के खिलाफ 302 में मुकदमे दर्ज किए, तब जाकर वहां लोगों ने उस लाश का अंतिम संस्कार करने दिया। आमने-सामने मेरे जिले में गोलियां चल रही हैं अवैध खनन माफिया और गो-तस्कर के माफियों के द्वारा और सरकार कह रही है कि हमने कानून-व्यवस्था को बहुत दुरुस्त कर दिया। आईपीएस के खिलाफ मुकदमे कर-करके आप पीछा छुड़वा रहे हो, ऐसी दुरुस्त कर दी आपने व्यवस्था?

मुख्य मंत्री अन्न सुरक्षा योजना, माननीय अमरारामजी इसका जिक्र कर चुके हैं इसलिए इस बात को मैं अपनी तरफ से नहीं रख रहा हूं। आप बिन्दु संख्या-49 देखें जिसमें आपने शुद्ध के लिए युद्ध अभियान की बात कही है। सभापति महोदय, आपके माध्यम से मैं बताना चाहता हूं...

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

मैं बिन्दुवार बात कर रहा हूं, कोई टाइम जाया नहीं कर रहा हूं सदन का। केवल अभिभाषण की बात कर रहा हूं, कोई फालतू बात नहीं कर रहा हूं।

श्री सभापति: समय की सीमा है।

श्री बनवारीलाल सिंघल (अलवर शहर): बिन्दु सहित बात कर रहा हूं। शुद्ध के लिए युद्ध की बात आपने की है, आप चल प्रयोगशालाओं का श्रेय ले रहे हैं मैं आपको एक जिक्र कर देना चाहता हूं चल प्रयोगशाला की जांच पर राजस्थान की सरकार को भरोसा नहीं है। माननीय अल्लाउद्दीनजी जहां से आते हैं, सवाई माधोपुर में दिवाली से पहले एक देशी घी का सैंपल भरा गया, व्यापारी का मैं नाम नहीं जानता, चल प्रयोगशाला में उस देशी घी के सैंपल की जांच की गई। वह सैंपल पास हुआ किन्तु उस सैंपल के पास होने के पश्चात् भी उसके 500 घी के टिन इसलिए जब्त किए गए कि बड़ी प्रयोगशाला में जांच करेंगे। जब आपको अपनी चल प्रयोगशाला का भरोसा नहीं

(श्री बनवारीलाल सिंघल)

है तो किसलिए आप इसका ढिंढोरा पीट रहे हैं? किसलिए आप इसको जनता में घुमा रहे हो? केवल इसलिए कि चल प्रयोगशाला के नाम पर आपके अधिकारी मंथली बांध लें? आपके रसद विभाग के अधिकारी, आपके मेडिकल के अधिकारी मोटी-मोटी मंथली बांधकर इन व्यापारियों को परेशान करें?

अभी एक बहुत बड़ी बात अभिभाषण में कही गई है बिन्दु संख्या-82 पर कि भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र में लगभग दो हजार करोड़ रुपए की लागत से एक होण्डा कार का कारखाना आपने लगा दिया, राजस्थान के वर्तमान मुख्य मंत्री ने लगा दिया। आपकी जानकारी दुरुस्त कर लें, इस कारखाने का उद्‌घाटन राजस्थान की पूर्व मुख्य मंत्री माननीय वसुंधराजी ने कर दिया था, वह भूमि पूजन करके आई थीं, आपने इसका श्रेय लेने का झूठा प्रयास किया है। चुनावी घोषणा पत्र 2008 जो कांग्रेस का अब सरकारी दस्तावेज बन चुका है इसमें आपने कहा, 'कृषि भूमि के अधिग्रहण के समय किसानों की भूमि अधिग्रहीत किए जाने से पहले हरियाणा की तर्ज पर किसानों को मुआवजा देंगे, उसको किराया देंगे।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

आज तक आपने 26 महीने में क्या कर दिया? आपने भाजपा पर आरोप लगाया था कि भाजपा राज में किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं, मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि भाजपा के राज में किसानों ने आत्महत्या नहीं की लेकिन वर्तमान राज में किसान निश्चित रूप से आत्महत्या करेगा।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, सम-अप करें आप।

श्री बनवारीलाल सिंघल (अलवर शहर): मैं दो मिनट और लूंगा अपनी बात के लिए।

श्री सभापति: दो मिनट नहीं, सिर्फ एक मिनट। सिर्फ एक मिनट में आप समाप्त कर दें।

श्री बनवारीलाल सिंघल (अलवर शहर): अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों की जमीनों से प्रभावशाली लोगों के कब्जे छुडवाने की बात आपने की थी, सरकार ने कितने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों की जमीनों से प्रभावशाली लोगों के कब्जे छुड़वा दिये, यह बता दें? सभापति महोदय, बस दो मिनट और लूंगा।

श्री सभापति: दो मिनट नहीं, सिर्फ यह जो बोल रहे हैं वह बोल दें। अब बिलकुल नहीं। अभी पूरा बजट सेशन चलेगा उसमें बोल लेना।

श्री बनवारीलाल सिंघल (अलवर शहर): बजट भाषण 2010-11 में राजस्थान सरकार ने, माननीय सभापति महोदय, रिवोकेबल पावर आफ एटोर्नी पर, आप जरा ध्यान दें मेरी बात पर, रिवोकेबल पावर आफ एटोर्नी पर दो प्रतिशत स्टाम्प ड्यूटी को घटाकर 0.2 प्रतिशत किया था। सदन की क्या मान्यता रह गई, जब राजस्थान का एक आईजी (स्टाम्प) आज तक इसका परिपत्र निकालने के नाम पर सदन की, हाउस की घोषणा को, बजट की घोषणा को रोककर बैठा हो? वह स्टाम्प ड्यूटी जिसको आपने कहा है अपनी घोषणा में कि हमने स्टाम्प ड्यूटी को घटाकर राजस्थान की जनता को लाभ दिया है। रिवोकेबल पावर आफ एटोर्नी पर घोषणा की गई 2 प्रतिशत के स्थान पर 0.02 प्रतिशत की, पर बजट घोषणा को आज तक लागू नहीं किया गया।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

अभिभाषण के बिन्दु संख्या 92 में आपने कहा है, मास्टर प्लान में सुझाव मांगे जा रहे हैं। कहां से मांगे जा रहे हैं? जनता के प्रतिनिधि चुने हुए 200 विधायकों को पता नहीं कौन मास्टर प्लान बना रहा है। आपकी प्राइवेट एजेंसियों, ठेकेदार लोग मास्टर प्लान बना रहे हैं, राजस्थान सरकार की कोई एजेंसी मास्टर प्लान नहीं बना रही है।

नौजवानों को रोजगार की बात करते हैं। जितने भी आप उद्योग लगा रहे हो या पूर्व के उद्योग हैं, उनमें सब में बाहर बोर्ड लगे हुए हैं कि राजस्थान के लोगों को किसी प्रकार का कोई रोजगार नहीं। स्थानीय लोगों को यह सरकार रोजगार न तो सरकारी स्तर पर दे रही है और न प्राइवेट स्तर पर दे पा रही है।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समाप्त करें। श्री लालशंकर घाटिया।

श्री बनवारीलाल सिंघल (अलवर शहर): इस अभिभाषण की कठोर शब्दों में मैं निंदा करता हूं।

श्री सभापति: श्री लालशंकर जी घाटिया। (अनुपस्थित)

श्री मदन प्रजापत।

श्री मदन प्रजापत (पचपदरा): माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल जी के अभिभाषण में हो रहे वाद-विवाद में मैं इस अभिभाषण का समर्थन करता हूं। विपक्ष की ओर से हमारे साथी बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे मुझे

(श्री मदन प्रजापत)

ऐसा महसूस हुआ कि सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को। मारवाड़ी में एक कहावत है डोइल्यो भी डांकणी न मैणो देय। मुझे बड़ा अफसोस है। मैं यह कहना चाहता हूं कि बार-बार बड़ी-बड़ी और खोखली बातों से क्यों ललित मोदी को याद करवा रहे हो इस सदन में? माननीय सभापति महोदय, मैं नहीं चाहता कि कोई व्यक्तिगत बात कहूं, पर विपक्ष का दायित्व बनता है कि जो हकीकत है उसकी बात करे। हम विपक्ष की कर रहे हैं और विपक्ष हमारी कर रहा है। सदन में, माननीय सभापति महोदय, बार-बार शब्द आ रहा है पोपाबाई का राज। अभी पोपाबाई की बात अमरारामजी ने भी कही और कल भी बात हो रही थी। गत सरकार में भी बात हो रही थी। मैं पूछना चाहता हूं, पोपाबाई कौन थी, पोपाबाई कहां रहती थी और कहां शासन करती थी, इसका भी कृपया खुलासा हो। पूर्ववर्ती सरकार ने जयपुर में, आज बड़ी बातें कर रहे हैं लेकिन भूमाफियाओं को बढ़ावा देकर पूरे जयपुर की जमीन बेच दी और इस सरकार ने जो किया वह अपन सभी जानते हैं। राजस्थान में वसुंधराजी की सरकार में पुलिस मंत्री को नहीं पहचाने और मंत्री को कार्यक्रम से बाहर निकाल दे, इससे बड़ी शर्म की क्या बात हो सकती है? इस सरकार में जो हो रहा था, वह किसी से छिपा हुआ नहीं है। जो कह रहे हैं कि यह योजना हमारे समय की है, यह काम हमारे समय का है। मैं पूछना चाहता हूं, आजादी के बाद में मात्र 12-13 बार राज किया है, आपकी योजना क्या हो सकती है? आपकी योजना किसी से छिपी हुई नहीं है। आपकी व्यक्तिगत योजना थी। माननीय स्वर्गीय राजीव गांधीजी के जमाने में कम्प्यूटर का विरोध करने वाले विकास और योजना की क्या बात कर सकते हैं? उस समय आपने कम्प्यूटर का विरोध किया, आप विकास की बात नहीं कर सकते। माननीय सभापति महोदय, कभी राम के नाम पर, कभी गौ-माता के नाम पर, कभी जाति के नाम पर, कभी किसी के नाम पर, इस प्रकार राज भले कर लिया हो लेकिन विकास की बात ये नहीं कर सकते। मैं अभिभाषण की बिन्दुवार चर्चा कर रहा हूं। माननीय सभापति महोदय, झूठी वाहवाही लेकर झूठे उद्घाटन किये गये, सिर्फ चुनरियां ओढ़ी गई। बालोतरा दलाऊ में सागर कल्याणपुर, उम्मेद-पोकरण, फलसूड़ बालोतरा योजना के झूठी वाहवाही के लिए दुबारा शिलान्यास किये गये। बीस साल तक जनता को गुमराह किया बीस साल तक सत्ता में रहने के बावजूद वो वहां के नुमाइंदे विधायक पानी तक नहीं ला सके। मैं माननीय लोकप्रिय मुख्यमंत्रीजी और सदन में विराजमान माननीय जलदाय मंत्री महीपालजी का आभार व्यक्त करता हूं कि आपने उन योजनाओं को हकीकत में बदला और बालोतरा में गंगा

(श्री मदन प्रजापत)

का और हिमालय का पानी लाकर यह साबित कर दिया कि पानी लाने में अगर कोई सरकार है तो वो कांग्रेस सरकार है आज एक 976 करोड़ की योजना और एक 362 करोड़ की योजना दोनों योजनाओं का कार्य प्रगति पर है और मुझे पूरा यकीन और विश्वास है कि आने वाले इसी साल में नहर का मीठा पानी समस्त बाड़मेर जिले को मिलेगा।

साथ ही जो बिजली की बात कर रहे थे, आज जो गरीब घर में बैठा है, ढाणियों में बैठा है, गांव में बैठा है वो खुशी महसूस कर रहा है कि राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना के तहत बाड़मेर जिले में 209 करोड़ के बजट और केन्द्र सरकार के सहयोग से ढाणियां बिजली से जुड़ रही हैं गांवों में खंभों की गाड़ियां खाली पड़ी हैं, आप देख सकते हैं। राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना के तहत गरीब आदमी को नि:शुल्क बिजली मिल रही है। इन योजनाओं ने साबित कर दिया कि गरीबों की हितैषी अगर कोई सरकार है तो कांग्रेस पार्टी है। ग़रीबों का भला अगर कोई कर सकता है तो माननीय मुख्य मंत्री अशोक गहलोत जी कर सकते हैं। साथ ही, माननीय सभापति महोदय, विपक्षी बार-बार कह रहे हैं कि काम नहीं हो रहा है। जगह-जगह सड़कों का जाल बिछ रहा है, आप अगर कोई साथ चलें तो मैं जाकर उनको हकीकत में बता सकता हूं। सड़कों के बारे में जो काम हो रहा है सीमावर्ती जिले में आप देख सकते हैं। नरेगा की जो बात है पचास हजार टांकें बना कर दिये पूरे भारत में। राजस्थान में हमारा जिला नरेगा में जो प्रथम रहा है, दिल्ली सरकार ने जिसे सम्मानित भी किया है। नरेगा का काम किस तरीके से होता है जो रोजगार के लिए दर-दर भटकते थे, बाहर जाना पड़ता था, आज गांव में रोजगार मिल रहा है। अगर मजदूरों का कोई भला किया है और आगे भी कर सकता है तो वो मात्र कांग्रेस सरकार कर सकती है, और कांग्रेस ने करके दिखाया है।

माननीय सभापति महोदय, आज किसानों की बात करते हैं, मैं हकीकत बात बता सकता हूं कि दो साल पहले एक साथ क्रांतिकारी कदम उठाते हुए 73 हजार करोड़ का कर्जा माफ करके, इस साल 93 प्रतिशत फसल बीमा माफ करके और कृषक जीवन साथी योजना के तहत पचास हजार से राशि बढ़ा कर एक लाख करके यह साबित कर दिया कि किसानों की अगर कोई हितैषी पार्टी है तो वो कांग्रेस पार्टी है, किसानों का अगर कोई भला कर सकती है तो वो कांग्रेस सरकार कर सकती है। यह क्रांतिकारी कदम किसानों के हित में उठाया है, किसानों के लिए किया है।

(श्री मदन प्रजापत)

माननीय सभापति महोदय, बार-बार सभी साथियों ने प्रशासन गांवों के संग अभियान का जो जिक्र किया, मैं उस बारे में दो बात बताना चाहता हूं। मैं निवेदन करता हूं कि सरकार बाप का मुकाबला तो नहीं कर सकती, लेकिन जो अनाथ बच्चा जिसके मां नहीं है, जिसके बाप नहीं है, उसको अगर याद आए कि अगर मेरा बाप होता तो मुझे भी खर्ची मिलती, पालनहार योजना के तहत माननीय मुख्य मंत्री जी के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार ने जो पूरा सात सौ रुपये प्रति माह देकर हजारों को पालनहार योजना के तहत जो पेंशन स्वीकृत की है। उससे इन गरीबों का जो भला हुआ है गरीबों को जो मदद मिल रही है इनसे साफ जाहिर होता है कि प्रशासन गांवों के संग में जो काम हुआ है वो किसी से छिपा हुआ नहीं है। अपन सभी जानते हैं जो गरीबों का भला हुआ है, पांच सौ की पेंशन, सात सौ की पेंशन सम्पन्न आदमी महसूस नहीं कर सकता, संपन्न आदमी के लिए पांच सौ रुपये मायना नहीं रखता लेकिन जो गरीबी में गुजरता है जिसने गरीबी के हालात देखें हैं व्यक्ति पहचान सकता है कि पांच सौ रुपये की कीमत क्या है, पांच सौ रुपया कितना मायना रखता है।

माननीय सभापति महोदय, विशेषकर मेरे भाई भडाना जी को यह बात अखर रही थी कि गुर्जरों की बात क्यों कर रहे हैं ये क्या हो गया वो क्या हो गया। मैं उनको पूछना चाहता हूं, माननीय सभापति महोदय, कि सदन तो क्या, आने वाली सात पीढ़ी नहीं भूल सकती। सत्तर लोगों की गला घोंट कर जान लेने वाली सरकार, उसको आने वाला समय माफ नहीं करेगा। उसको आने वाला समय नहीं भूलेगा जो सत्तर लोगों की जान ले। बात सुनने की उनमें क्षमता नहीं। वो बात सुनना उनको दिमाग में अलग-सा महसूस होता है जो सत्तर लोगों की जान लेता है, उसको दुनिया माफ नहीं करेगी, आने वाली पीढियां नहीं भूलेगी, आने वाला समय माफ नहीं करेगा।

माननीय सभापति महोदय, आज जो ये हालात बने यह माननीय मुख्य मंत्री जी की कार्यशैली है। मुख्य मंत्रीजी ने करके दिखाया कि राजस्थान में शांति व्यवस्था कायम रखने की अगर किसी की क्षमता है तो गांधीवादी और लोकप्रिय मुख्य मंत्री अशोक गहलोत जी की है। आज अन्न सुरक्षा की बात करके ये हिसाब मिला रहे हैं कि 35 किलो मिलता था अभी पच्चीस किलो मिल रहा है। माननीय सभापति महोदय, मात्र दो रुपये किलो गेहूं देकर ये साबित कर दिया कि गरीबों के दिल का अगर दर्द किसी के दिल में है तो

(श्री मदन प्रजापत)
वो माननीय मुख्य मंत्री अशोक गहलोत जी के है और ये अंदाजा लगाया जाए कि दो रुपये में मिट्टी का कट्टा भी नहीं आ सकता। दो रुपये में रेत का कट्टा भी नहीं मिल सकता और राजस्थान की कांग्रेस सरकार गेहूं दे रही है, क्योंकि वो जानती है कि गरीब का दर्द क्या है, गरीब की पीड़ा क्या है। आज महंगाई के जमाने में गरीब आदमी अपने घर का गुजारा सही तरीके से नहीं चला सकता। किसी न किसी मार्फत उनको फायदा मिले ताकि वो बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान दे सके। माननीय मुख्य मंत्री जी की मंशा और भावना गरीबों के प्रति है। पश्चिमी राजस्थान में जो डोडापोस्त का सेवन करता है, हम समझते हैं वो खराब है, नहीं लेना चाहिए। लेकिन जो आदी हैं उनके लिए लोकप्रिय माननीय मुख्य मंत्री अशोक गहलोत जी ने जो रेट घटा कर एक हजार से कम कर जो पांच सौ रुपये कर दी। पांच सौ रुपये करके ये साबित कर दिया कि गरीबों का अगर कोई भला कर सकता है तो माननीय मुख्य मंत्री अशोक गहलोत कर सकते हैं।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, सम अप करो अब।

श्री मदन प्रजापत (पचपदरा): जो आज बात कर रहे हैं, उनकी सरकार की हालात क्या थी? शराब संस्कृति वो रात को भूल जाते थे। कहीं 8 पीएम की बातें आईं, कहीं ललित मोदी की आईं और वो बातें कर रहे हैं ईमानदारी की, भ्रष्टाचार की और बड़ी-बड़ी बातें। दुनिया जानती है, आप बात करने के लायक भी नहीं हो, आपकी सरकार में क्या कारनामे हुए। माननीय कटारिया जी, माननीय वरिष्ठ सदस्य तिवाड़ी जी के मन में दर्द था भावना थी। वो सच्चाई को कहने के लिए थे लेकिन कुछ मजबूरियां होती हैं, वो नहीं कह सके। लेकिन उनको दर्द था, इस बात की मैं तारीफ करता हूं। माननीय कटारिया जी की तारीफ करता हूं लेकिन जो वो चौकड़ी थी, उस चौकड़ी ने जयपुर की चारों तरफ की रोड़ें और जमीनें बेच दीं। कल मेरे भाई बिड़ला जी बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, सम अप करें।

श्री मदन प्रजापत (पचपदरा): एक बात करके मैं स्थान ग्रहण करता हूं। माननीय सभापति महोदय, वो इतनी बड़ी बात करते हैं, मैं नहीं चाहता कि व्यक्तिगत बात कहूं, लेकिन मैं बिड़ला जी को सदन के मार्फत पूछना चाहता हूं कि कोटा में आटा पीसने का ठेका किसका है, कोटा में पोषाहार का ठेका किसका है? अगर इसमें सच्चाई है तो सदन में खुलासा करें मेरे बड़े भाई ओम बिड़ला जी।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समाप्त करो। श्री सूरजभान धानका।

श्री मदन प्रजापत (पचपदरा): दो-दो ठेके लेने वाले, हजारों गरीबों की जमीन के ऊपर कब्जा करने वाले और वो पारदर्शिता की बात कर रहे हैं, ईमानदारी की बात करते हैं।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, आप विराजो। मैंने नाम पुकार लिया।

श्री मदन प्रजापत (पचपदरा): माननीय सभापति महोदय, मैं इस अभिभाषण की भारी शब्दों से तारीफ करता हूं, समर्थन करता हूं। जो उन्होंने पढ़ा है, वास्तविक हकीकत है। यह मुख्यमंत्री अगर लागू हो रहा है, राजस्थान का रूप चेंज होगा। राजस्थान के माननीय अशोक गहलोत जी के नेतृत्व में जो सरकार काम कर रही है वो जनता बिलकुल समझ चुकी है।

श्री सभापति: विराजिये, माननीय सदस्य।

श्री मदन प्रजापत (पचपदरा): आपने मुझे समय दिया, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द। जय भारत।

श्री सभापति: श्री सूरजभान धानका।

श्री सूरजभान धानका (राजगढ़-लक्ष्मणगढ़): सम्माननीय सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद। मैं तीन दिन से जो अभिभाषण पर प्रतिक्रिया देख रहा हूं, यह लोकतंत्र की स्वस्थ परम्परा नहीं है। मैंने कुछ गिने-चुने ही आदमी देखे जिन्होंने एक स्वस्थ, सकारात्मक, तथ्यपरक विरोध करके उसमें खामियां ढूंढने की कोशिश की। महामहिम राज्यपाल जी ने अभिभाषण पढ़ा, यह तो सत्य है कि बिलकुल तथ्यहीन भी नहीं है कुछ खामियां जरूर रहती हैं, हमें उस पर विश्लेषण करना चाहिए। स्वास्थ्य में जो 108 एम्बुलेंस चलाई जा रही

(समय : 14.00 बजे)

है, यह निश्चित ही जीवनदायिनी सिद्ध हुई है। सीएचसी लक्ष्मणगढ में भी इस चीज की कमी है मैं सरकार से गुजारिश करूंगा कि वहां भी हमें 108 एम्बुलेंस देकर लाभान्वित करें। डाक्टरों की भी कमी है, जहां 4 डाक्टरों की जरूरत है वहां एक डाक्टर काम कर रहा है, कहीं नर्स नहीं है, इसलिए स्टाफ की पूर्ति होनी चाहिये। बीपीएल में जो मुफ्त इलाज हो रहा है उसके अलावा जो बीपीएल में नहीं हैं, जिनके पास धन सुविधा नहीं है, उनका भी मुख्य मंत्री सहायता कोष से इलाज कराया जा रहा है जिससे काफी लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

(श्री सूरजभान धानका)

शिक्षा के क्षेत्र में जो सर्व शिक्षा अभियान चलाया है अच्छी पहल है कि हमारे राज्य का कोई भी बच्चा अनपढ़ नहीं रहे । इसमें जो अनिवार्य शिक्षा की है वह अच्छा है, लेकिन इसमें अध्यापकों की कमी है, इसको पूरा किया जाए। स्कूलें बगैर अध्यापकों के चल रही हैं। जहां चार अध्यापकों की आवश्यकता है वहां एक अध्यापक ही है। दूसरा, जो 8वीं बोर्ड को खतम किया है इससे निश्चित रूप से शिक्षा में गिरावट आएगी क्योंकि जब हमारी नींव ही कमजोर होगी तो आगे उस पर मकान बढ़िया नहीं बनेगा। मेरे ग्राम पिनाल में आसपास की ढाणियों में लगभग 20 हजार की आबादी है वहां गर्ल्स की मिडिल स्कूल है, लड़िकियां दूर जाने में कतराती हैं, मेरी गुजारिश है कि ग्राम पिनाल में सैकण्डरी स्कूल खोलने की व्यवस्था करें।

कानून व्यवस्था में अपेक्षाकृत सुधार आया है। अख़बारों में पढते हैं 28-28, 30-30 साल के फरारी वारंटी पकड़े जा रहे हैं और थानों को आनलाइन कर दिया गया है लेकिन कुछ कमियां हैं। जैसे हमारी पुलिस के पास नये हथियार, नई गाड़ियां नहीं हैं जैसी कि असामाजिक तत्वों के पास है। मैं कहना चाहता हूं कि पुलिस को नये हथियार देकर सक्षम करें ताकि असामाजिक तत्वों पर पकड़ कर सके। पुलिस थाने ओन लाइन कर रहे हैं जिसकी मोनेटरिंग स्वयं मुख्यमंत्री जी करेंगे, इससे बड़ी घबराहट भी आई है लेकिन चेचट थाने में जो घटना हुई उसकी पुनरावृत्ति न हो उसके लिये सख्ती से पेश आये। मैं तो यह कहूंगा कि अगर कानून व्यवस्था को सुधारना है तो बिना भेदभाव, अपराधी कितना ही बड़ा हो उसको सज़ा जब तक नहीं मिलेगी, तब तक पुलिस का भी मनोबल नहीं बढ़ेगा और अपराधियों में, असामाजिक तत्वों में भय व्याप्त नहीं होगा।

श्री सभापति: समाप्त करो, माननीय सदस्य ।

श्री सूरजभान धानका (राजगढ़-लक्ष्मणगढ़): एक मिनट। मुझे कम से पांच मिनट तो दे दो, साहब, जो दिया है उसमें भी काट रहे हो।

बिजली के क्षेत्र में हालांकि विचाराधीन है, तीन पंचायतों के बीच में एक जीएसएस खोला जा रहा है, अच्छी उपलब्धि है। लेकिन अभी किसानों को बिजली पूर्णतः नहीं मिल रही है, इसके लिए उत्पादन में वृद्धि करें। दूसरा, डीज़ल और शराब पर पड़ौसी राज्यों में वैट कम है, टैक्स कम है, वहां कम पैसों में उपलब्ध होती है इसलिए राजस्थान में उनको गैर कानूनी तरीके से

(श्री सूरजभान धानका)

लाया जा रहा है जिसमें जहरीली शराब भी आती है। इससे हमारे राजस्थान को वित्तीय घाटा होता है, क्योंकि सस्ता डीज़ल हरियाणा में भरा लाते हैं। सबको मालूम है, हरियाणा जा रहे हैं सस्ती मिलेगी, शराब सस्ती आएगी। सस्ती शराब के चक्कर में हमारे यहां मौतें बढ़ रही हैं, इसलिए इस पर वैट दर घटाएं।

प्रशासन गांवों के संग एक बहुत अच्छी उपलब्धि रही है। एक प्रमाण पत्र बनाने के लिये जो आदमी कई दिन घूमता था- कहीं पटवारी नहीं मिला, कहीं तहसीलदार नहीं मिला। 18 विभागों को एक जगह करके उनको राहत दी गई। बंटवारा, जाति प्रमाण पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र, नि:शक्तजन आस्था कार्ड, वृद्धावस्था पेंशन, सभी प्रकार की सुविधाएं वहां उपलब्ध हुई। इसमें सरपंच कह रहे थे कि कैम्प तो लगा दें पर कोई ऐसा वित्तीय साधन नहीं दिया जिससे हमारे जो टैन्ट, माइक, लाइट लगी है उसकी व्यवस्था कैसे होगी? वृद्धावस्था पेंशन है पडौसी राज्य हरियाणा, दिल्ली में सभी को 60 साल से ऊपर मिलती है, यहां केवल बीपीएल वगैरह को ही मिलती है। वह सबको मिले क्योंकि वृद्ध आदमी भी यह चाहता है कि मैं सम्मान से जीऊं, कोई बहन-बेटी आए तो उसको दूं। आये दिन पढ़ रहे हैं कि उसने बाप को घर से निकाला, मां को घर से निकाला, इसलिए सम्मान के साथ जीने के लिये यह आवश्यक है।

सडकों में अभी काफी सुधार की आवश्यकता है। कई गांव ऐसे हैं जहां अभी आवागमन के साधन नहीं हैं, सड़क नहीं हैं। मैं खुद इस चीज का भुगतभोगी हूं। मेरे गांव में मेरे घर से भी आगे लेकड़ी से घाट तक चार किलोमीटर का टुकड़ा ऐसा है जिसमें गाड़ियां नहीं चलती। लोग परेशान हैं, ताने देते हैं कि अब तो एमएलए बन गये कम से कम अब तो सड़क बनवा लो।

श्री सभापति: अब समाप्त करो, माननीय सदस्य।

श्री सूरजभान धानका (राजगढ़-लक्ष्मणगढ़): ...(व्यवधान) मैं किसी की आलोचना नहीं कर रहा। स्वस्थ तरीके से अगर कमी है तो कमी गिना रहा हूं और अच्छा काम किया है तो अच्छा है। नरेगा में कच्चे काम करवाये जा रहे हैं, उसके बजाय अगर पक्के काम हों तो निश्चित रूप से वह टिकाऊ होंगे। सड़क पर मिट्टी फैलाना बारिश आई और वह बह गई, उससे कोई फायदा नहीं होगा। मजदूरों को भी काम मिला, पहले बाहर पलायन करके जाया करते थे, आज घर बैठे मजदूरी मिल रही है। बहुत बहुत धन्यवाद अभिभाषण की मैं प्रशंसा करता हूं।

श्री सभापति: श्री रमेश चन्द्र मीणा। सदस्य संख्या तो 15 प्रतिशत भी नहीं है।

श्री देवी सिंह भाटी (कोलायत): सदन में कोरम का अभाव है इसलिए सदन की कार्यवाही आप स्थगित कीजिए। 20 ही नहीं हैं।

श्री सभापति: 15 प्रतिशत हैं।

श्री रमेश चन्द मीणा (टोडाभीम): सभापति महोदय, माघ बारस, शक संवत् 1932 को राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री शिवराज जी पाटील का तेरहवीं राजस्थान विधान सभा के षष्ठम सत्र में अभिभाषण हुआ। उस अभिभाषण में उन्होंने आखिर में यह लिखा है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

अभी माननीय सदस्य ने कोरम का प्रस्ताव उठाया। लेकिन यह एक संयोग का विषय है कि अभी जिनका नम्बर आया वहां पर सदस्य संख्या कम है।

श्री सभापति: आप तो बोलो।

श्री देवी सिंह भाटी (कोलायत): बोलें कैसे साहब? सुनने में लोगों की रुचि नहीं है। चीफ व्हिप को प्रयास करके पूरा कोरम करना चाहिए।

श्री रमेश चन्द मीणा (टोडाभीम): राजस्थान विधान सभा के इस प्रांगण में आपके सामने हम सब हैं जो राजस्थान की 6 करोड़ जनता की तरफ से हम बोल रहे हैं। इस अभिभाषण में राजस्थान के लिये सबसे महत्वपूर्ण जीवन रेखा है कृषि है उस कृषि को केवल 52वें, 53वें और 54वें पैरा में 16 पंक्ति में समेट दिया गया है, इसको बहुत कम महत्व दिया गया है। लक्ष्य इन्होंने रखा है कि गांव, गरीब और किसान, इनकी उन्नति होगी। जब तक कृषि की उन्नति नहीं है तो इनकी उन्नति कैसे सम्भव है। मुझे ध्यान है, सिविल लाइन्स से आने वाले माननीय सदस्य ने उस समय कहा था कि अगले वर्ष राजस्थान में बरसात अच्छी होने वाली है। यह एक संयोग की बात है कि बरसात अच्छी हो गई है परन्तु उस बरसात के कारण कृषि का कितना उत्पादन बढ़ेगा और उस उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ में सरकार की जिम्मेदारी क्या बनती है, वह कितनी निभाई है, यह आज ही प्रकाशित खबरों से कि लगातार बीज की और अन्य अव्यवस्थाएं हो रही हैं पता चल गया है। सरकार को यह भी पता नहीं चला कि इतनी जब बरसात हुई है तो उसके लिये कितना खाद चाहिएगा, किस प्रकार का बीज चाहिएगा और किसानों को कैसी-

(श्री रमेश चन्द मीणा)

कैसी व्यवस्था करनी है अपने लिये। इसका परिणाम है कि करौली जिले में, सवाईमाधोपुर जिले में, दौसा में धौलपुर में, बल्कि सम्पूर्ण राजस्थान में खाद की अपर्याप्त आपूर्ति रही है। इसके लिये सरकार ने कोई व्यवस्था नहीं की। राजस्थान में कृषि ईश्वर की एक देन है लेकिन जब सरकार की बारी आती है तो सरकार अपने फ्रण्ट पर असफल रही है और किसानों को घोर अव्यवस्था का सामना करना पड़ा है। एक-एक खाद के कट्टे पर दो-दो सौ रुपये तक किसानों को काला बाजारी का सामाना करना पड़ा, ब्लैक में पैसा देना पड़ा है। इसलिये इस अभिभाषण में जो लिखा है, उसे असत्य का पुलिंदा अगर किसी ने कहा है तो कोई इसमें अतिशयोक्ति नहीं है।

विद्युत उत्पादन को प्राथमिकता दी जाएगी। लेकिन विद्युत उत्पादन को प्राथमिकता के साथ में अभी राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना में जितना बड़ा घोटाला हुआ है, वह सम्पूर्ण राजस्थान में सबको पता है। खम्भे गाड़ने से लेकर और मीटर लगाने तक, उपभोक्ता को सी.एफ.एल. बल्ब देने तक इस प्रकार का घोटाला हुआ है कि जितना बजट एलोकेट हुआ है उसमें से 50 प्रतिशत बजट किसी न किसी की जेब में चला गया है, गरीब तक नहीं पहुंचा है। उसका प्रमाण यह है कि करौली जिले में 41472 कनेक्शन थे, उनमें 72,22,501/- रुपये की एम.एस. राड देनी थीं कंज्यूमर्स को। जब हमने वहां पर वैरिफिकेशन किया तो यही प्रमाण मिला कि कहीं पर भी अर्थिंग एम.एस. राड लगाये नहीं गये हैं। अकेले करौली जिले में 77 लाख 52 हजार से ऊपर का यह घोटाला हुआ है। यह तो केवल अर्थिंग राड का है। इसके साथ में अभी प्रश्न उठाया था, उस प्रश्न के जवाब में यह कहा गया था कि कंज्यूमर वैरिफाई करेगा तब सी.एफ.एल. बल्ब देंगे। लेकिन अभी जितने भी बल्ब दिये गये हैं वे खाली कागजों में हैं, एक भी बल्ब करौली जिले में तो दिया नहीं गया है। टोडाभीम विधान सभा क्षेत्र के साथ-साथ हिण्डौन, सपोटरा और दूसरे विधान सभा क्षेत्र जो आसपास आते हैं, वहां भी देखा है तो वहां भी सी.एफ.एल. बल्ब एक भी नहीं दिया गया है। इसके साथ में दूसरा बल्ब है 40-60 वाट का, वह भी नहीं दिया गया है। पोल्स जो दिये गये हैं, उसमें भी घोटाला है। बिजली के उत्पादन के साथ-साथ में जब राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण जैसी परियोजना में इस तरह का घोटाला है, इसलिए मैंने निवेदन किया था कि इसका सामाजिक अंकेक्षण होना चाहिए, वह बात भी अभी तक स्वीकार नहीं की गई है। ऐसा क्या कारण है कि आप स्वीकार नहीं कर रहे? 4-4 बार पत्र

(श्री रमेश चन्द मीणा)

लिखा है मैंने, व्यक्तिगत रूप से बात की है। आप अभी तक उसका अवलोकन करने को तैयार नहीं हैं। यानी कुछ न कुछ इस तरह की गड़बड़ है जिसमें सरकार पूरी तरह से शामिल है। जल नीति बनाई है।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब आप समाप्त करें।

श्री रमेश चन्द मीणा (टोडाभीम): जल संसाधन के समुचित उपयोग के लिये जो जल नीति आपने बनाई है, उस जल नीति में लिखा है कि पहला लक्ष्य मनुष्य को पानी, दूसरा पशुओं को, तीसरा कृषि के लिये पानी और चौथा पर्यावरण के लिये पानी। अभी तक 10 हजार हैक्टेयर में सिंचाई होती है पांचना परियोजना से, उसका कोई भी पानी किसी अन्य काम के लिये काम में नहीं आया। 10 हजार हैक्टेयर में राजस्थान का उत्पादन बढ़ता, उस उत्पादन की अवहेलना करके आपने किसानों के साथ अन्याय किया है राजस्थान में।

श्री सभापति: समाप्त करें आप।

श्री रमेश चन्द मीणा (टोडाभीम): अगर यही मापदण्ड रहा , अगर बीसलपुर परियोजना का इसी प्रकार से पानी रोक दिया किसानों ने तो आपके हर-एक घर में और जयपुर में क्या हालत होगी, आप यह कल्पना कर सकते हैं। इसलिये जो अन्याय हो रहा है पांचना के किसानों के कमाण्ड एरिया के क्षेत्र में, पानी नहीं देकर, लगातार उपेक्षा करके...

श्री सभापति: श्री विट्ठल शंकर अवस्थी। अब आप समाप्त करें।

श्री रमेश चन्द मीणा (टोडाभीम): सरकार उस पर इतने जो समझौते कर रही है, वह बहुत गलत है, अन्याय है। इसी बिन्दु पर मैं इस अभिभाषण की आलोचना के साथ-साथ इसके विपक्ष में बात कहता हूं। धन्यवाद।

श्री सभापति: श्री विट्ठल शंकर अवस्थी।

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): सभापति महोदय, गत तीन दिनों से महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण पर वाद-विवाद चल रहा है। अभिभाषण की जो पुस्तक है उसमें सरकार द्वारा मंजूर किया हुआ भाषण राज्यपाल के श्रीमुख से हमने सुना। अभिभाषण में सरकार ने दो साल में क्या-क्या उपलब्धियां प्राप्त कीं और आगे आने वाले समय में क्या-क्या उनकी योजनाएं हैं, इसका कथन होता है। आगे आने वाले समय में ये क्या करेंगे, यह तो, सभापति महोदय, भविष्य के गर्भ में छिपा है। लेकिन इन्होंने पिछले

(श्री विट्ठल शंकर अवस्थी)

दो-ढाई सालों में जो किया है, उसका लेखा-जोखा मेरे भीलवाड़ा जिले का मैं आपके समक्ष रखता हूं। सभापति महोदय, हां-पक्ष के सभी मेरे साथी बहुत गदगद हैं, अभिभूत हैं कि हमने दो साल में गरीबों को बहुत आगे बढ़ाया। पिछली पंक्ति में बैठे हुए व्यक्ति को हमने सबसे आगे ले जाकर बैठाया है। यह पैसा उसी गरीब का है, सभापति महोदय। योजनाएं सरकार बनाती है, कागजों में लिखती है, पैसा विभाग में जाता है लेकिन वहां जाने के बाद उस पैसे का क्या हश्र होता है वह किसकी जेब में जाता है, इस पर इस सरकार की नजर नहीं है। सभापति महोदय, इसी सदन में पिछले बजट सत्र में मैंने मेवाड़ मिल का मुद्दा उठाया था और मुख्य मंत्री महोदय ने स्वयं अपने श्रीमुख से यहां जवाब दिया था कि मैं इसकी जांच कराऊंगा। पूरा एक साल बीत गया, सभापति महोदय, उस जांच का क्या हुआ, आज तक पता नहीं है। इस संवेदनशील सरकार को पता नहीं है, जवाबदेही किसकी है। 142 करोड़ रुपये की नीलामी बोली सरकार ने तय की थी और उसको 125 करोड़ में छोड़ा गया। यह राजस्थान का ऐसा पहला अवसर था। जिस बहाने से उस मिल को बेचा गया है, माननीय सभापति महोदय, वह बहाना था कि 1200 मजदूरों का पैसा पन्द्रह-बीस सालों से अटका पड़ा है, इसीलिए इसको बेच कर मजदूरों का भुगतान किया जाएगा। माननीय सभापति महोदय, वह जमीन तो प्रभावशाली लोगों ने सरकार से मिलीभगत करके ले ली लेकिन उन 1200 मजदूरों को, एक फूटी काड़ी का भुगतान नहीं किया गया है। यह इनकी संवेदनशीलता है। माननीय सभापति महोदय, उन 1200 मजदूरों में से कई मजदूर मर चुके हैं, उनके बाल-बच्चे दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर हैं। पूरा एक साल हो गया है, मेरी इस सदन में आपके माध्यम से मुख्य मंत्री से मांग है कि उन मजदूरों का तत्काल भुगतान कराया जाए और मेवाड़ मिल के घोटाले की पूरी जांच इस सदन के समक्ष रखी जाए।

माननीय सभापति महोदय, जब इस सरकार ने सत्ता सम्भाली तो चम्बल परियोजना की घोषणा की कि हम पहले तो भीलवाड़ा शहर को और फिर पूरे भीलवाड़े जिले के समस्त गांवों को चम्बल से पानी पिलाएंगे। माननीय सभापति महोदय, पहले बजट में इन्होंने घोषणा की, दूसरे बजट में भी घोषणा की और यह तीसरा बजट आने वाला है, अभी तक इनकी डी.पी.आर. का पता नहीं है। अब इनको बचे-खुचे ढाई साल बचे हैं। इसी तरह के झांसे देकर जनता से इन्होंने वोट ले लिए, आज तक उस चम्बल

(श्री विट्ठल शंकर अवस्थी)

परियोजना का ही पता नहीं। कोटा के माननीय सांसद उस परियोजना का विरोध कर रहे हैं, सरकार की तरफ से आज तक कोई बयान नहीं आया कि यह परियोजना लागू होगी कि नहीं होगी।

माननीय सभापति महोदय, भीलवाड़ा बहुत बड़ा जिला है, उसमें आठ तहसीलें हैं। वहां हमारे जिला अस्पताल में 80 डाक्टर्स की पोस्ट्स स्वीकृत हैं। पहले बजट में मैंने चिकित्सा की मांग पर कटौती प्रस्ताव में मांग रखी थी कि हमारे डाक्टर्स की पोस्ट्स भरी जाएं। तो जवाब आया कि शीघ्र भर दी जाएगी। गए बजट में फिर मैंने डिमांड रखी तो वहां हालत यह हुई कि भरने के बजाए पाँच पोस्टें उन्होंने और घटा दीं। आज 80 डाक्टर्स में से वहां पर 35 डाक्टर्स हैं, जनता दर-दर भटक रही है। रेडियोलाजिस्ट की एक पोस्ट के अभाव में करोड़ों रुपयों की मशीनें बेकार पड़ी हैं, लोग बाहर जाकर प्राइवेट अस्पतालों में लुटने-पिटने को मजबूर हो रहे हैं। 100 रुपये की जांच का 500-500 रुपये प्राइवेट अस्पताल लेकर फिर उनकी जांच करते हैं। यह संवेदनशीलता इस सरकार की है।

माननीय सभापति महोदय, एन.सी.डी. प्रोग्राम के तहत केन्द्र सरकार का पैसा आता है। हमारा पायलट जिला है, पूरे एक साल में उसका करोड़ों का बजट है। आज तक एक भी पैसा उस योजना का नहीं लगा है। यह इनकी पारदर्शिता और जवाबदेही है।

माननीय सभापति महोदय, भीलवाड़ा डेयरी, किसानों की संस्था, हजारों किसानों का दूध वहां पर आता है। सन् 2001 से लेकर आज तक, मैं आरोप लगाता हूं कि आडिट आक्षेप निकले करोड़ों रुपए के, करोड़ों रुपए के उन आडिट आक्षेपों की जांच बार-बार बदली जा रही है। किसके दबाव में बदली जा रही है? वह करोड़ों रुपया कहां गया, इसका जवाब देना चाहिए इस सरकार को, आज तक उसका जवाब नहीं मिला। पांच वर्षों से जांच अधिकारी बदल-बदल कर जांच दबा रखी है।

माननीय सभापति महोदय, हमारे यहां बागवानी मिशन में सामुदायिक पौंड का निर्माण सरकार करवाती है, दस लाख रुपये एक पौंड में दिया जाता है। वह पौंड एक एनिकट में बनवाए जाते हैं जिसमें पहले से सरकार का 46 लाख रुपया लगा हुआ है। 10 लाख रुपये का सामुदायिक पौंड बनवा कर उसमें मछलीपालन किया जाता है। जिस पैसा का बागवानी में उपयोग होना चाहिए,

(श्री विट्ठल शंकर अवस्थी)

निजी उपयोग हो रहा है। माननीय सभापति महोदय, कलक्टर ने जांच की, कलक्टर ने दोष साबित कर दिया लेकिन दोषी व्यक्तियों को आज तक दंड नहीं मिला। (व्यवधान)...

श्री सभापति: अब आप समाप्त करो, माननीय सदस्य।

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): पांच मिनट।

श्री सभापति: नहीं, अब आप समाप्त करो। समय सीमा सबके साथ है। पांच मिनट मैं आपको नहीं दे सकूंगा। (व्यवधान)

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): माननीय सभापति महोदय, दो सालों से हमारे जिले में सड़कों पर लगातार खड्डे खोदे जा रहे हैं। पेड़ लगाये जा रहे हैं एवं उनकी सुरक्षा के लिए पट्टियां खड़ी की जाती हैं। हर साल उन्हीं रोड्स पर खड्डे खोदने का पैसा पास होता है, हर साल उन्हीं रोड्स पर पेड़ लगाने का पैसा पास होता है। उनकी सुरक्षा का पैसा पास होता है। मैं दावा करता हूं। वन मंत्री महोदय से कि हरित राजस्थान के नाम पर यह जो घोटाला हो रहा है, उसकी आप स्वयं जांच करें कि पौधे कितने जीवित हैं। अगर आप दस परसेंट पौधे भी जीवित बता दें तो आप और हम साथ चलकर जांच कर लें।

'शुद्ध का युद्ध', माननीय सभापति महोदय, मंथली बांधने का युद्ध है यह। जो आयल मिल मंथली बांध देती है, जो मसाला फैक्ट्री मंथली बांध देती है, जो मावे का और मिठाई का दुकानदार मंथली बांध देता है, वह शुद्ध बाकी का युद्ध। यह एक तरह का नाटक चल रहा है शुद्ध के युद्ध का। जो डी.एस.ओ. ऊपर पैसा पहुंचाता है वह शुद्ध और बाकी के खिलाफ युद्ध। (व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब आप समाप्त करें। नहीं, बस आप संक्षेप में करो, बिलकुल संक्षेप में करो। समाप्त करो। (व्यवधान)

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): माननीय सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि इन कागजी शेरों को आप समझाओ। अपने माध्यम से समझाओ कि केवल लिखने से काम नहीं होता। सारा पैसा भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रहा है। मेरे भीलवाड़ा शहर में आठ किलो कागज की रद्दी इकट्ठी हो गई है, केवल मीटर चेंज करने की। फ्लैट रेट के नाम से मीटर का पैसा लिया जा रहा है। एक साल हो गया, आपने बिजली में आत्मनिर्भर बना दिया? क्या-क्या कर दिया? क्या-क्या आपने यहां सदन में बोला है? लेकिन आठ किलो कागज इकट्ठे हो चुके हैं एक शहर में कि हमारे मीटर बदले जाएं। डिस्प्लेबल मीटर

(श्री विट्ठल शंकर अवस्थी)

की रीडिंग नहीं आती है। इतने नकली मीटर हैं, मेरा आरोप है कि इस मीटर की खरीद की जांच की जाए।

श्री सभापति: अब आप समाप्त कर दो।

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): माननीय सभापति महोदय, मैं समाप्त करने के लिए लास्ट में एक मिनट आपसे और मांगता हूं।

श्री सभापति: कई माननीय वक्ताओं को और बोलना है, मैं समय सबके साथ में एक ही ...(व्यवधान) बस अब अंतिम बोल दो आप।

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): सबसे अन्त में। जब अभिभाषण समाप्त किया इस सदन में राज्यपाल महोदय ने यह लिखा था- 'सर्वे भवन्तुः सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' तो मैं आपसे निवेदन करता हूं इस सरकार की दो साल की उपलब्धियां, पहला ...(व्यवधान)

श्री सभापति: श्री शंकर सिंहजी रावत।

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): माननीय सभापति महोदय, एक मिनट। पहली उपलब्धि है आपकी कि आप अवैध खनन के मामले में पूरे देश में प्रथम हैं, दूसरी उपलब्धि है आपकी कि आप एस.सी., एस.टी. अत्याचार के मामले में देश में दूसरे नम्बर पर हैं। जिस तरह से मुख्य मंत्री ने, राजस्थान के खिलाड़ियों ने नाम किया था तब उनको इनाम दिया था, इन दोनों मंत्रियों को, मैं मांग करता हूं कि इनाम दिया जाए।

श्री सभापति: श्री शंकर सिंहजी रावत, आप शुरू करें।

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): माननीय सभापति महोदय, अन्त में मैं एक निवेदन करना चाहता हूं। (व्यवधान)

श्री सभापति: अब नहीं, अब अंकित नहीं होगा। अब, माननीय सदस्य, अंकित नहीं होगा। अब अंकित नहीं होगा। आपने बोल दिया। (व्यवधान)

श्री विट्ठल शंकर अवस्थी (भीलवाड़ा): ×××

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): माननीय सभापति महोदय, इस सदन में दिए गए माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के विरोध में मैं अपनी बात कहना चाहता हूं। सरकार ने जो यह अभिभाषण पढ़ा उसमें आपकी कृपा होगी तो कहने को बात तो मेरे पास बहुत है। मेरा निवेदन है इस सरकार से कि पेंशन की योजना जो आपने चालू की है, उसमें जिस गरीब को आप

(श्री शंकर सिंह)

फायदा पहुंचाने जा रहे हैं, उसको फायदा नहीं पहुंच पा रहा है। 58 साल के वृद्ध और 55 साल की महिला वृद्ध जो हैं, उनको वृद्धावस्था पेंशन स्वीकृत की जाती है। लेकिन वृद्ध होने के बाद भी उनको बालिग पुत्र का हवाला होने की वजह से पेंशन नहीं मिल पाती है। मेरा सरकार से निवेदन है कि जिन वृद्धों के लड़के 18 साल से बड़े हो जाते हैं, शादीशुदा होने के बाद अपने बीवी बच्चों का ध्यान रखते हैं और मां-बाप का ध्यान नहीं रखते हैं। मां-बाप बूढे होने के बाद दर-दर की ठोकरें खाते फिरते हैं और वो मौत के घाट पहुंच जाते हैं।

लेकिन सरकार का उस ओर ध्यान नहीं जाता है। कि वृद्धावस्था पेंशन के ऊपर मेरे कांग्रेस के भाई ने भी इस बात को उजागर किया है, मैं उनका समर्थन करता हूं, इसमें सुधार होना चाहिए ताकि वद्ध माता और पिता बुजुर्ग को पेंशन मिल सके।

इसके अलावा विधवा पेंशन है। जो माता विधवा हो जाती है, उसकी समझ लीजिए, जीवन की सारी खुशियां समाप्त हो जाती हैं। ऐसी माता को भी बालिग पुत्र होने के कारण शन नहीं मिल पाती है। मेरा सरकार से निवेदन है कि उसमें संशोधन कर बालिग पुत्र का हवाला हटाया जाए।

विकलांग पेंशन के अन्दर भी इस प्रकार की लापरवाही बरती गयी है। जो आदमी विकलांग हो जाता है, उसका भी इस दुनिया के अन्दर सब कुछ लुट जाता है। स्वस्थ व्यक्ति के शरीर को देखकर और अपने को देखकर वह अपनी जिन्दगी के ऊपर आंसू बहाता है क्योंकि वह विकलांग हो गया है। ऐसे विकलांग और असहाय व्यक्ति के बारे में वर्तमान में उनके भाई का ब्यौरा जोड़कर और परिवार के किसी मैम्बर की आय को जोड़कर पटवारी की रिपोर्ट जो दी जाती है, उसके ऊपर उसका फार्म कैंसिल हो जाता है। डाक्टर उसको रिपोर्ट दे देता है कि चालीस परसेंट वह विकलांग है उसके बावजूद भी परिवार की आय को जोड़ने से उसका पेंशन का फार्म कैंसिल हो जाता है। मेरा निवेदन है कि इसके अन्दर सुधार किया जाए। (व्यवधान)

श्री देवी सिंह भाटी (कोलायत): सभी को जाना पड़ेगा। यह कोई बड़ी और नयी बात थोड़े ही है। (व्यवधान) समय पर जाएंगे।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): सभापति महोदय, अभी सत्ता पक्ष के भाइयों ने सरकार की वाहवाही लूटने का काम किया, उनको पता ही नहीं लग रहा है कि वाहवाही में हम कहां हैं। मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं, अभी सरकार के पास में जो कार्य था, आपके अधीनस्थ जो कार्य था, सरकार

(श्री शंकर सिंह)

उसे हटाने जा रही है। नगर परिषद, नगर निगम और नगरपालिकाओं में भूमि परिवर्तन की जो कमेटी है, उसके अन्दर इस सदन के सदस्य को रखा गया था, लेकिन यह सरकार आपके इस अधिकार को हटाने जा रही है। मेरा आपसे निवेदन है कि विधायक को भू-परिवर्तन कमेटी के अन्दर निश्चित रूप से रखा जाए।

मैं ब्यावर की बात कर रहा हूं, माननीय स्वायत्त शासन मंत्री महोदय विराजे हुए हैं, ब्यावर आज राजस्थान का सबसे सुन्दर शहर बसा हुआ है, लेकिन दो सालों के अन्दर भू-माफियाओं ने छोटे-छोटे खेतों को खरीदकर उनकी कालोनियां काट दीं एक कालोनी का मुंह उत्तर की ओर और दूसरी कालोनी का मुंह दक्षिण की ओर। इस प्रकार उस शहर की हालत खराब हो रही है। पहले चौड़ी-चौड़ी सड़कें बनी हुई थीं, अब वहां बीस-बीस फुट की गलियों की कालोनी पास करवा कर ले जा रहे हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि कहां तो गाड़ियां निकलेंगी। कहां कालोनी पास होगी। इससे सारा सत्यानाश हो रहा है। ऐसी छोटी-छोटी जो कालोनियां कट रही हैं, इनमें लोग कैसे बसेंगे? हालत यह है कि गरीब आदमी मकान बनाता बहुत दूर है लेकिन वहां पट्टे खरीद नहीं सकता है।

श्री सभापति: अब आप समाप्त करो, माननीय सदस्य।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): सभापति महोदय, मेरा तो बड़ी मुश्किल से नम्बर आता है और आप तलवार लगाकर बैठे रहते हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि आप मेरी बात को सुनें। दस हजार और बारह हजार रुपये प्रति वर्ग गज में भूमि वहां पर मिल रही है, कैसे वे मकान खरीदेंगे और कैसे अपना जीवन का गुजारा करेंगे?

सरकार द्वारा शुद्ध के लिए युद्ध अभियान चलाया जा रहा है, उसके अन्दर मेरे से पहले वाले भाई ने बता दिया है। पहले आटे में मिलावट नहीं हो रही थी, मात्र आटा ही बचा था, अब उसके अन्दर भी मिलावट चालू हो गयी है। बाकी मिलावट की बातें तो कह दी गयी हैं, मैं उन बातों को दोहराना नहीं चाहता।

ब्यावर के अन्दर पत्थर पीसने की जो फैक्ट्री लगी हुई है, वह मौत का कारखाना है। उस फैक्ट्री के अन्दर मजदूरी करने वाला वही व्यक्ति जाएगा जिसको कोई मजदूरी नहीं मिल पाती है और ऐसे मजदूर को टी बी जैसी खतरनाक बीमारियां ग्रसित कर लेती हैं और उसको जीवन के साथ समझौता करना पड़ता है। इसलिए मेरा निवेदन है कि वहां जिला क्षय रोग कार्यालय स्थापित है, उसको नहीं हटाया जाए।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब आप समाप्त करो। आप विराजो, माननीय सदस्य। अंकित नहीं होगा।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): ×××

श्री सभापति: अब अंकित नहीं हो रहा है आपका। श्री मान सिंह। आपका अंकित नहीं हो रहा है। आप बैठो। श्री मान सिंह।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): ×××

श्री सभापति: अंकित नहीं हो रहा है आपका। आप विराजें।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): ×××

श्री सभापति: शंकर सिंहजी रावत, विराजो आप। पूरा बजट सत्र है। अभी तो अभिभाषण चल रहा है। विराजो, अंकित नहीं हो रहा है। शंकर सिंहजी, आप विराजो। माननीय सदस्य, अंकित नहीं हो रहा।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): ×××

श्री सभापति: माननीय सदस्य, आप विराजो। मान सिंहजी, आप नहीं बोलना चाहते क्या? खड़े होइए, माननीय सदस्य। यह तो नहीं रुक रहे हैं, आप बोलिए। मान सिंहजी, आप बोलना चाहते हैं या नहीं? केवल आपका ही अंकित होगा।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): ×××

श्री अलाउद्दीन आजाद (सवाईमाधोपुर): ×××

श्री सभापति: अंकित नहीं होगा। आपका भी नहीं और आपका भी नहीं। कुछ भी अंकित नहीं हो रहा।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): ×××

श्री सभापति: शंकर सिंहजी रावत, आप विराज जाओ।

श्री शंकर सिंह (ब्यावर): ×××

श्री सभापति: श्री मान सिंह।

श्री मानसिंह (परबतसर): सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के माध्यम से सरकार व मुख्य मंत्रीजी ने एक जादुई आंकड़ों का पुलिन्दा आपके सामने रखा कि नीति बनाएंगे, हम राहत देंगे। ऐसे अनेक सपने इस सरकार ने दिखाये हैं। सभापति महोदय, इस सरकार के दो साल के जो कार्य हैं, सिर्फ चेपा-चापी करके चलने वाली सरकार दिख रही है।

(श्री मानसिंह)

इस सरकार ने दो सालों में कोई विकास का कार्य नहीं किया। यहां तक कि प्रशासनिक क्षमता भी खो दी है। पिछली सरकार में और माननीय मुख्य मंत्रीजी में कोई प्रशसनिक क्षमता दिखती थी। परन्तु इन दो सालों में वह प्रशासनिक क्षमता भी इनके पास नहीं रही है। आप देखेंगे कि कर्मचारियों और अधिकारियों का जो हाल है, कर्मचारी समय पर आफिस में नहीं पहुंचते हैं, और जो अधिकारी अच्छा कार्य कर रहे हैं उनको पुरस्कृत करने के बजाय उनका स्थानान्तरण कर दिया जाता है। नागौर जिले के, चित्तौड़ जिले के और झुन्झुनूं जिले के कलक्टर्स का ट्रांसफर का आपके सामने उदाहरण है कि वहां से अच्छे कार्य करने वाले जिलाधीशों को हटा दिया गया है।

माननीय सभापति महोदय, इस सदन में इस सरकार ने प्रमुख कार्य के रूप में प्रशासन गांवों के संग अभियान को बताया है। प्रशासन गांवों के संग अभियान में इस सरकार ने बताया कि 87 लाख लोगों को राहत दी, यह आंकड़ा गलत है। माननीय सभापति महोदय, इन आंकड़ों का अगर पूरे का जोड़ लगाया जाए तो 57,61,594 कार्य होते हैं। 29 लाख 85 हजार ऐसे कौन से कार्य किये हैं? अगर किये हैं तो इस अभियान में उसका पूरा विस्तार से वृत्तांत क्यों नहीं दिया गया? इसकी पूरी जानकारी इस अभिभाषण में सरकार को देनी चाहिए थी, वो इस अभिभाषण में नहीं दी गयी। यही इनके आंकड़ों में असत्य है, इनके जो कार्य किये गये हैं उनमें भी असत्य है। यह सारा जैसा घनश्याम जी भाई साहब ने कहा, निष्प्राण अभिभाषण है, तो यह निश्चित ही एक निष्प्राण अभिभाषण है।

माननीय सभापति महोदय, जो प्रशासन गांवों के संग अभियान था, इस अभियान का पूरा कांग्रेसीकरण हुआ है। इस अभियान में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने वार्ड पंच से लेकर विधायक तक के चुनाव का आपसी विद्वेष निकाला है। इसमें अधिकारियों के ऊपर दबाव बनाया है, वो दबाव बना कर वह कार्य नहीं हो, ऐसा उन्होंने कार्य किया है।

माननीय सभापति महोदय, मेरे परबतसर विधान सभा क्षेत्र के कई कार्यकर्ताओं के काम नहीं हुए। इसके लिए मैं लक्ष्मण मेघवाल की पत्नी के स्वास्थ्य कार्ड का उदाहरण देना चाहूंगा, इस कार्ड को बनाने के लिए एस.डी.एम. ने पहले सुबह लक्ष्मण मेघवाल को स्वीकृति दे दी, शाम को उसको मना कर दिया। मैंने एस.डी.एम. से पूछा तो कहा कि यहां पर अभी आपसी

(श्री मानसिंह)

लड़ाई-झगड़ा हो जाएगा तो इसको बाद में बना देंगे। ऐसा प्रशासन गांवों के संग अभियान में काम हुआ है।

माननीय सभापति महोदय, राजस्थान प्रदेश में हमेशा बात होती है डार्क जोन की, खारे पानी की, फ्लोराइडयुक्त पानी की। जल संकट की स्थिति को देखते हुए गहलोत सरकार ने इस अभिभाषण में बताया है कि 63 योजनाओं को स्वीकार किया। सरकार ने माना कि 22 पूरी हो चुकी हैं, 35 योजनाओं का कार्य प्रगति पर है, इस तरह से 57 योजनाएं होती हैं। 6 योजनाएं कहां गयीं, वो कौनसी योजनाएं हैं, 6 योजनाओं का इसमें कोई हवाला नहीं दिया गया है। यह बात भी यहां असत्य साबित होती है।

माननीय सभापति महोदय, नागौर जिले में डार्क जोन है, पानी खारा है, फ्लोराइडयुक्त है लेकिन अच्छे पानी के लिए सरकार ने कोई योजना नहीं बनायी है। भा.ज.पा. सरकार के समय राजस्थान नहर से पानी लेने के लिए योजना बनी, नागौर जिले तक पानी पहुंचा दिया। पिछले बजट में माननीय मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की थी कि हम उसके द्वितीय फेज का काम करने के लिए कुछ व्यवस्था करेंगे, लेकिन, माननीय सभापति महोदय, एक साल बीत गया अभी तक इसकी कोई व्यवस्था नहीं की गयी, वो सारा प्रशासनिक प्रक्रिया में अटका हुआ है।

माननीय सभापति महोदय, भारतीय जनता पार्टी के समय में राजस्थान में 36 हजार गांवों को 24 घंटे बिजली दी जाती थी लेकिन इस सरकार ने आते ही उन गांवों को पुरस्कृत करने के बजाय उन गांवों के ऊपर दण्ड लगा दिया, उनको बिजली कम कर दी क्योंकि वहां 25 परसेंट से कम छीजत थी। कम छीजत की वजह से जिन 36 हजार गांवों को भा.ज.पा. सरकार ने पूरे 24 घंटे बिजली देना चालू कर दिया था, बिजली दे रही थी, कांग्रेस सरकार के आते ही उन 36 हजार गांवों की दण्ड स्वरूप में बिजली की कटौती कर दी, बिजली कम कर दी।

माननीय सभापति महोदय, गांवों में जो बिजली के हालात हैं, अखबारों में आता रहता है। आपने देखा होगा, अभी कांग्रेस सरकार द्वारा गांवों को रात को बिजली दी जा रही है। कृषि कार्य के लिए किसानों को रात का ब्लाक है, रात को 8 बजे से लेकर सुबह 5 बजे के बीच में बिजली दी जाती है, इस कारण किसानों को भरी सर्दी में रात को भी पिलाई करनी पड़ी। इसमें भरतपुर

(श्री मानसिंह)

में भी किसान मर गया। सिर्फ दण्ड की वजह से कांग्रेस सरकार ने बिजली का ऐसा कृत्य किया है।

माननीय सभापति महोदय, मुख्य मंत्रीजी की हमेशा प्रेस विज्ञप्तियां आती रहती हैं कि राजनीतिक नियुक्तियों का दौर प्रारम्भ करेंगे। मुख्य मंत्रीजी दिल्ली जाते हैं, वहां पर सोनिया जी से मिलते हैं, ऊर्जा, जल, ग्रामीण विकास, पैट्रोलियम मंत्रीजी से मिलते हैं, ये राजनीतिक खबरें फैला कर प्रदेश की जनता, कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को गुमराह किया जाता है। लेकिन वहां जाने से होता क्या है? ढाक के तीन पात। पैट्रोलियम मंत्री से मिलते हैं तो पैट्रोल के भाव बढ़ जाते हैं और ऊर्जा मंत्रीजी से मिलते हैं तो राज्य को कोयला नहीं मिलता है। कोयला नहीं मिलने के कारण आज राज्य की 34 में से 22 इकाइयां बंद पड़ी हुई हैं। बात करते हैं विद्युत उत्पादन की, बिजली देने की, (समय-समाप्ति-सूचक घंटी) केन्द्र में भी कांग्रेस की सरकार, राज्य में भी कांग्रेस की सरकार है, कोयला नहीं देने से 22 इकाइयां बंद पड़ी हैं।

माननीय सभापति महोदय, वसुन्धरा जी ने पूरे पांच साल तक बिजली भी दी है और पैसा भी नहीं बढ़ाया। कांग्रेस सरकार ने अपने बजट भाषण में बताया था कि हम बिजली पर कोई पैसा नहीं बढ़ाएंगे, लेकिन इन्होंने 10 पैसा प्रति यूनिट वाटर कन्जरवेशन सैस लगा कर और 10 पैसा अरबन सैस लगा कर दर बढ़ाने का काम किया है जो कि बजट भाषण के वितरित है। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी) इससे भी यह साबित होता है कि यह अभिभाषण झूठ का पुलिंदा है।

श्री सभापति: सम अप करो, माननीय सदस्य।

श्री मानसिंह (परबतसर): माननीय सभापति महोदय, शिक्षा के सार्वजनीकरण की देश में कई योजनाएं शुरू की गयी थीं ना कि दूर-दराज में बैठे हुए बालक को प्राथमिक शिक्षा मिल जाए। राइट आफ एजुकेशन की बात हुई थी, उसमें चाहे पिछली सरकार ने 22 हजार राजीव गांधी पाठशालाएं खोली थीं, लेकिन हमारी सरकार में माननीय वसुन्धरा जी ने क्रमोन्नत कर उनको प्राथमिक शाला बना दिया और एक किलोमीटर की परिधि में प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए प्राथमिक शालाएं खोलीं। कांग्रेस सरकार ने आते ही उन शालाओं को बंद करने का कृत्य किया है। (समय-समाप्ति-सूचक घंटी) बात करते हैं राइट आफ एजुकेशन की और प्राथमिक शालाएं बंद की जा रही हैं। वहां न अध्यापक हैं और न वहां पर विषय के अध्यापक हैं। विषय के

(श्री मानसिंह)

अध्यापक नहीं होने की वजह से छात्र निजी विद्यालयों में पढ़ने को जा रहे हैं, मजबूरन किसानों को अपनी जमीन गिरवी रख कर उनको निजी विद्यालयों में पढ़ाना पड़ रहा है।

श्री सभापति: सम अप करो, माननीय सदस्य।

श्री मानसिंह (परबतसर): माननीय सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि सरकार ऐसे कार्य करे जिससे गरीब किसानों के बच्चों को, मजदूरों के बच्चों को निजी विद्यालयों में नहीं जाना पड़े।

श्री सभापति: सम अप करो अब आप, बहुत हो गया। (व्यवधान)

श्री मानसिंह (परबतसर): माननीय सभापति महोदय, एक बात और कहना चाहूंगा। कांग्रेस सरकार गांधी जी के सपनों को नहीं राहुल गांधी और सोनिया गांधी के आदेशों को मानने का कार्य कर रही है।

श्री सभापति: चलिये, अब आप सम अप करो।

श्री मानसिंह (परबतसर): गांधी जी का सपना था कि दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में बैठे हुए, झोंपड़ी में बैठे हुए व्यक्तियों को शिक्षा मिले, पूरी सुविधा मिले। जयपुर शहर में जो करोड़ों रुपये की मैट्रो परियोजना लाये हैं, वो कांग्रेस सरकार लायी। मैट्रो रेल नहीं मैट्रो प्लेन लाएं, लेकिन इससे पहले किसान और मजदूर के बेटे को गांवों में पूरी शिक्षा, स्वस्थ वातावरण, रहने के लिए मकान, रास्ता और गंदगी के वातावरण से हटाना होगा तभी जाकर आप मैट्रो रेल और मैट्रो प्लेन की बात कर सकते हैं, विकास की बात कर सकते हैं। माननीय सभापति महोदय, इसलिए मेरा इस अभिभाषण के प्रति पुरजोर विरोध है कि यह अभिभाषण झूठ का पुलिंदा है।

श्री सभापति: विराजिये। श्री ग्यारसा राम जी।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): माननीय सभापति महोदय, दिनांक 15 फरवरी को राजस्थान के महामहिम राज्यपाल महोदय से यह असत्य तथ्यों का संकलन भरा अभिभाषण पढ़वाया गया, बड़ी वाहवाही लूटी गयी, बड़ी उपलब्धियों की गिनती हुई और लगातार तीन दिनों से सत्ता पक्ष के भाइयों की तरफ से बड़ी प्रशंसा की जा रही है। लेकिन यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि वास्तविकता कुछ और है।

(श्री ग्यारसा राम कोली)

माननीय सभापति महोदय, वाहवाही लूटी जा रही है बिजली के बारे में, ऊर्जा के बारे में। लेकिन आप देखिये कि ऐसा कौनसा जिला है, कौनसा कस्बा है, कौनसा गांव है जो बिजली से पीड़ित नहीं हो? सत्ता में बैठे हुए भाइयों से मैं पूछना चाहता हूं, अगर ऐसा है तो फिर आप क्यों रोते हो? ट्रांसफार्मर कहां नहीं बेचे जा रहे हैं? किस किस मीटर पर बी पी एल सिस्टम में पैसे नहीं लिये जाते? कहां-कहां पूरे सामान डिस्ट्रीब्यूट हो रहे हैं? यह किसी से छिपा नहीं है। पेयजल समस्या के बारे में बड़ी योजनाएं बनाईं, क्या आप बता सकते हैं कि जयपुर में भी पानी समुचित रूप से मिल रहा है? यह कैपीटल है, जब यहां का आदमी इतना त्रस्त हो सकता है तो डूंगरपुर और धौलपुर के आदमी से पूछिए कि वहां पानी की क्या अव्यवस्था होगी। कहते हैं बारिश हो गयी, बारिश आपके प्रयासों से नहीं हुई। यह तो आपका सौभाग्य है कि ऐसा सशक्त प्रतिपक्ष आपके सामने बैठा है जो देवताओं की सन्तान है और देवताओं की सन्तान के तपोबल, वसुन्धरा राजे के तपोबल से यह बारिश हुई है। हमारे शासन में कभी ऐसा आपातकालीन समय नहीं आया और ऐसा बारिश का अभाव नहीं रहा है। उसी की पुनरावृत्ति में भगवान ने हमारी बातों को सुना, जिसका श्रेय आप लूटने की कोशिश कर रहे हैं। (व्यवधान) मंहगाई की तरफ देखो। हम देवता पुत्र हैं, आप अपने को देखो, आप किसके पुत्र हो सकते हो ...(व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सदस्य, विराजें।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): मंहगाई रोक नहीं सकते, घोटालों का अंबार हो रहा है- चाहे वह आबकारी विभाग का हो, चाहे खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग का हो और चाहे वन विभाग का हो, चाहे किसी भी विभाग का हो। आप मंहगाई नहीं रोक सकते। कानून-व्यवस्था की तो अजीबो गरीब हालत है। गृह मंत्रीजी बड़ी शांति से बैठ जाते हैं और ऐसा करते हैं कि प्रदेश में कोई समस्या ही नहीं है।

मैं उनका ध्यान दिलाना चाहूंगा और यह मांग भी करना चाहूंगा कि आप अपने सिस्टम को सुधारें और प्रदेश में देखें कि महिलाओं के साथ क्या क्या अत्याचार होता है। थानों में बलात्कार, महिला घूमने जाती है तो चेनों को तोड़कर ले जाना सरेआम। धौलपुर जैसे जिले में आपके सामने आज जीता-जागता उदाहरण है। डाक्टर किरोड़ीलाल जी बैठे हैं, इनके बारे में थोड़ी-सी शर्म

(श्री ग्यारसा राम कोली)

करो, आप कानून व्यवस्था को सुधारने की तो कोशिश करो। थोथी वाहवाही करने से और कागजी कार्यवाही करने से काम नहीं चलता।

बेरोजगारी का आलम देखिये, दो साल या सवा दो साल हुए हैं, कितने बच्चों को आपने रोजगार दे दिया? मैं इस तरह की बात नहीं कहता, कोई बात हो मुझे बताइये, मैं उसको असैप्ट करूंगा। क्या आपने अपने बच्चों को भी नौकरी दे दी? फिर गरीब किसान के बच्चे को, व्यापारी के बच्चे को, कर्मचारी, अधिकारी के बच्चे को आप क्या दे पाएंगे? आपका इस तरफ कोई ध्यान ही नहीं है।

भ्रष्टाचार का तो आपने बिलकुल पिटारा खोल दिया है, कांग्रेस पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है और देती आयी है। पैंतालीस साल में आपने कुछ नहीं किया, सिर्फ भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया और उसी की आप सन्तान हो। आपको भ्रष्टाचार बढ़ाने के अलावा कोई काम नहीं। विकास की तो आप धारा देखते ही नहीं और विकास को समझते ही नहीं... (व्यवधान) तस्करों और भू-माफियाओं को खुली छूट, सीमाएं सुरक्षित नहीं। जिस देश में कश्मीर का मुख्य मंत्री यह कह दे कि अभी आंशिक विलय हुआ है और देश का प्रधान मंत्री चुपचाप बैठा रहे.......

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): सभापति महोदय, मैं आपका ध्यान प्रक्रिया के नियम 272 के(7) की ओर आकृष्ट करना चाहूंगा...

श्री सभापति: माननीय सदस्य।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): कोई भी माननीय सदस्य जो अपनी ओर से बात कर रहे हैं, ऐसा कोई शब्द इस्तेमाल नहीं करेंगे जो कि मानहानिकारक हो। यह स्पष्टतया अपने वक्तव्य में क्या-क्या शब्द कह रहे हैं, मैं आपसे निवेदन करूंगा, उनको न सिर्फ सदन की कार्यवाही से निकाला जाए, बल्कि माननीय सदस्य को भी पाबन्द किया जाए।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): सड़कों की बद हालत,...(व्यवधान) प्रदेश की प्रत्येक सड़क को देखिये।

श्री देवी सिंह भाटी (कोलायत): बोलकर बताओ, क्या शब्द कहा है। ऐसा कुछ कहा ही नहीं ...(व्यवधान) ऐसा कुछ कहा ही नहीं।

एक माननीय सदस्य: कौनसा शब्द बोला है ऐसा?

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): नई सड़क बनाना तो दूसरी बात रही, आप उनका पैचवर्क भी नहीं करा सकते, उनको सुधार भी नहीं सकते।

श्री देवी सिंह भाटी (कोलायत): आया है तो आप हमको बताइये, क्या शब्द है ऐसा।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): आपको याद दिलाता हूं, वाजपेयी सरकार में हमने डीजल और पैट्रोल पर एक रुपया बढ़ाकर देश में सड़कों का जाल बिछा दिया था, आपकी कैपेसिटी प्रदेश में वो भी नहीं है कि उनकी मरम्मत करा सकें।

श्री सभापति: मानहानिकारक जो भी है उसको देखकर...(व्यवधान) मानहानिकारक, असंसदीय जो भी होगा उसको देखकर, एक्सपंज कर दूंगा। कर देंगे एक्सपंज जो भी मानहानिकारक है ...(व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): पाबन्द कर दें सदस्य को।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): किसान विरोधी सरकार, किसान भूखे मर रहे हैं। विगत तीन दिन पहले ओलावृष्टि हुई है, ओलावृष्टि के बारे में इस सदन में काफी बताया गया है, सरकार का बिलकुल ध्यान नहीं है। गरीब किसान ने आपको और हमको यहां भेजा है, यह ध्यान रहे, यदि किसान की आपने परवाह नहीं की तो आने वाले समय में यह किसान, यह मजदूर आपको माफ नहीं करेगा। आपको समय है और आपको आगाह भी करते हैं कि यह हमारे प्रदेश की व्यवस्था का सवाल है, आप इसमें रुचि लें और किसान विरोधी अपनी हठधर्मिता को छोड़ें।

प्राकृतिक आपदा के मामले में आपका कोई ध्यान नहीं है, ब्यूरोक्रेसी अनियंत्रित। जब आपकी बात ब्यूरोक्रेसी नहीं मानती, आप क्या करोगे और आपसे क्या अपेक्षा की जा सकती है। यह आपके कांग्रेस का घोषणा पत्र ....

श्री सभापति: अब आप विराजो।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): घोषणा पत्र में आपने कहा था, पैट्रोल, डीजल और घरेलू गैस पर स्थानीय करों में रियायत।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब आप विराजो। श्री छोटू सिंह जी।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): यदि सही बात हो तो उसको बंद करवा देना। यह कोई नैतिकता की बात नहीं होती है। आप यह देखिये, आप ही वहां खड़े-खड़े कह रहे थे- अपने से अपने को निकाल कर देख, हर श्वास

(श्री ग्यारसा राम कोली)

को मौत पर उछाल कर देख। हर दिल पर तुमसी गुजरती है दोस्त, हर बात को अपने पर डाल कर देख । अब यह कह रहे थे समय दीजिए और अगर कोई सही बात आ रही है तो आप उसको बोलने का समय नहीं दे रहे।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब आप विराजें।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): यह कांग्रेस का मिथ्याभाषी घोषणा पत्र इसका विरोध है। जो अपनी बात पर साबित नहीं हो, कहते हैं ये कहावतें, मैं अपनी तरफ से नहीं कह रहा, यह मैं आपके घोषणा पत्र के लिए कह रहा हूं कि जो अपनी बात को नहीं मानता +++ आपने पैट्रोल और डीजल पर यह कहा था।

श्री सभापति: एक्सपंज करिये। (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): सभापति महोदय, यह क्या कह रहे हैं? क्या कह रहे हैं? (व्यवधान) कुछ शालीनता रही ही नहीं क्या? आप उस कागज को टेबल करिये, क्या कहना चाहते हैं।

श्री सभापति: एक्सपंज कर दीजिए। (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): ऐसे कुछ तो गरिमा का खयाल करवाएं। (व्यवधान)

श्री सभापति: अब अंकित नहीं होगा, कुछ भी अंकित नहीं होगा, माननीय सदस्य। (व्यवधान)

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): ×××

श्री सभापति: अंकित नहीं हो रहा आपका।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): सभापति महोदय, क्या कहा जा रहा है, इस पर तो विचार फर्माएं, आप क्या कहलवाना चाह रहे हैं।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, आप कुछ सीमाएं तो रखें कम से कम। कुछ परम्पराएं हैं, मर्यादाएं हैं सदन की। एक्सपंज करिये इसको। (व्यवधान) आप विराज जाइये।

श्री मदन प्रजापत (पचपदरा): ×××

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): ×××

श्री सभापति: कुछ अंकित नहीं हो रहा, विराज जाइये आप।

श्री छोटू सिंह भाटी (जैसलमेर): माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण का उनके श्रीमुख से पाठन हमने सुना। हमने आगे से पक्ष और ना पक्ष को बड़ी अच्छी तरह से सुना। जिस क्षेत्र से मैं जीतकर आया हूं वह सीमावर्ती क्षेत्र है, उसकी समस्या कुछ भिन्न ही है। जिस जैसलमेर क्षेत्र में पूरे प्रदेश के लिए बिजली पैदा हो रही है, जिस जैसलमेर क्षेत्र में आई जी एन पी नहर से पांच-सात जिलों को पानी दिया जाता है, वहां पिलाई की व्यवस्था की जा रही है, उस जैसलमेर की जनता पानी से त्रस्त है, वहां के लोगों

(समय : 15.00 बजे)

को मीठा पानी उपलब्ध नहीं हो रहा है। लेकिन महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं है कि जैसलमेर की जनता को मीठा पानी कब उपलब्ध होगा। माननीय सभापति महोदय, ठीक इसी तरह से वहां पर पवन ऊर्जा के द्वारा बिजली पैदा होती है और पूरे प्रदेश को दी जा रही है, लेकिन जैसलमेर की जनता को केवल पांच और छह घंटे मिल पाती है। यह प्रशासन का दोष है, यह मॉनिटरिंग का दोष है। यह ऊर्जा विभाग का दोष है। मेरा क्षेत्र ऐसा है जो त्रस्त है बिजली से, पेयजल से। ऊर्जा विभाग ने किसानों को कनेक्शन देकर उनके साथ सचमुच धोखा किया। उनको बिजली के वोल्टेज नहीं मिल रहे हैं, उनकी फसल बर्बाद हुई है। इसी प्रकार पेयजल में केवल पांच और छह घंटे बिजली दे रहे हैं। जैसलमेर की समस्या इस प्रकार की है कि 20 और 30 किलोमीटर हर जी एल आर पर पाइप लाइन की दूरी है, वहां चार घंटे तो केवल रास्ते में पानी को जाने में लगते हैं और दो घंटे पानी पेयजल में आता है। यह तो कुदरत खुश हुई, परमात्मा की मेहरबानी हुई और पानी इतने दिन तालाबों में था। किन्तु अब भविष्य में विकट समस्या आने वाली है। लेकिन इस अभिभाषण में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं है कि जैसलमेर की जनता को पानी कैसे देंगे। बहुत कुछ बताया गया कि हो रहा है, होगा, लेकिन यह नहीं बताया गया है कि हो गया।

जैसलमेर में प्रशासन की ओर से शिविर बहुत लगे, 52 दिन तक लगातार शिविर लगे और तकरीबन हर शिविर में मैं गया ही गया। उन शिविरों में केवल मूल निवास प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र और मृत्यु प्रमाण पत्र बने। ये तो अमूमन ग्राम सेवक और पटवारी से लिये जाते हैं। इसके बारे में निवारण नहीं था। ज्यादा से ज्यादा वारिस नामान्तरण जरूर हुए। इसमें कोई उल्लेख नहीं है। हमारी समस्या जमीनी समस्या थी, पूरे जैसलमेर की जनता की थी। जनता की अपेक्षा थी, आशा थी कि इस प्रशासन शिविर में सब कुछ

(श्री छोटू सिंह भाटी)

होगा। हमारे माननीय मुख्य मंत्रीजी भी रात को 9 बजे आये, मैं खुद वहां मौजूद था। हमारी बहुत-बहुत आशाएं थीं कि जैसलमेर के तकरीबन सब काम होंगे। पर होने वाले कौनसे थे और हुए कौनसे। हम नहीं चाहते थे मेडिकल के हों, लेकिन जमीनी मामला हो। हम चाहते थे, गोचर के हों, खातेदारी के हों, कृषि के हों। पुराने निजी कुओं का नियमितिकरण हो, जो कि जरूरी था। हमारे पूर्वजों ने वे खुदाये थे। लेकिन किसी प्रकार का काम नहीं हुआ। अफसरों ने खाली टालमटोल और बातों-बातों में सारा समय निकाल दिया और गांव के लोगों का सही मायने में शोषण हुआ। थाली बजाई पहले, इसलिये बजाई कि प्रशासन गांवों के संग में अच्छा काम होगा। बाद में तो थाली भी उठाकर फेंक दी कि कुछ भी नहीं हुआ।

माननीय सभापति महोदय, कानून व्यवस्था के बारे में कहें। यह कानून व्यवस्था इसलिये कह रहा हूं कि जैसलमेर में तो सक्षम है फिर भी कमी है। जैसलमेर का बच्चा, एक घटना बता रहा हूं आपको, माननीय गृह मंत्रीजी विराजे हुए हैं, एक हमारा बच्चा सिविल इंजीनियरिंग में पढ़ता था, उस बच्चे को 14 जुलाई, 2010 को पता नहीं किसने गायब किया, उसका आज तक पता नहीं चला। बहुत फरियाद हुई, चारों तरफ लोगों ने बात की, पुलिस विभाग को रिपोर्ट कराई। 14 जुलाई, 2010 को वह बच्चा गया है, उसका आज तक पता नहीं। वह अजमेर के आदर्श नगर थाने की पंचवटी कालोनी में रहता था और सिविल इंजीनियरिंग कर रहा था। माननीय गृह मंत्रीजी, छह महीने हो गये हैं, उस बच्चे का आज तक किसी प्रकार का पता नहीं चला। वह मां-बाप का इकलौता बेटा था, हताश होकर वह परिवार रह गया है। नांदना गांव का वह रहने वाला है। 14 जुलाई, 2010 को वह गायब हुआ है, उस बच्चे का आज तक पता नहीं लगा है। वह होशियार बच्चा था, इंटेलीजेंट था। किसने गायब किया, किसने नहीं किया, वह पंचवटी कालोनी में किराये के मकान में रहता था, उसका आज तक पता नहीं चला।

इसी प्रकार से मैं निवेदन करना चाहता हूं महानरेगा के बारे में। महात्मा गांधी ग्रामीण रोजगार योजना बहुत बड़ी योजना है, इसमें हमारे जिले के 1 लाख 13 हजार 149 रोजगार कार्ड हैं। लेकिन इस साल की प्रोग्रेस मीटिंग में जब हमारे प्रभारी मंत्री माननीय गिर्राज सिंहजी आये, लेख लिया तो उसमें 4084 परिवारों को रोजगार 11 महीने में मिला है। मतलब साढ़े तीन परसेंट।

(श्री छोटू सिंह भाटी)

यह बहुत बड़ी योजना है, इसके अन्दर साढ़े तीन परसेंट रोजगार। बहुत बड़ी वाहवाही आयी कि बाड़मेर जिले में इतने टांके बने, लेकिन मेरे जिले की हालत है कि साढ़े तीन परसेंट रोजगार दिया। बहुत बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि इसमें राजनीतिकरण किया गया है। मैं तो कभी बुराई नहीं करता, मैं हमेशा पारदर्शिता के साथ जाता हूं, संवेदनशीलता के साथ जाता हूं, लेकिन विरोध की जगह विरोध करता हूं कि जैसलमेर की गरीब जनता के साथ इस सरकार ने घोर अन्याय किया है।

वाटर वर्क्स के बारे में कहूं, वाटर वर्क्स की जो भी योजनाएं हैं वे जैसलमेर में बिलकुल ठप्प हैं। हमारे अधीक्षण अभियन्ता के पद पर एक साल में चार-चार अभियन्ता चेंज हो गये। माननीय मंत्री महोदय बैठे हैं, कोई बैठना नहीं चाहता। कारण क्या है? कोई योजना नहीं। कई अधिकारी ऐसे बैठे हैं जो जे.ईएन. वहां बने, ए.ईएन. वहां बने, एक्स.ईएन. वहां बने, उनका तो कभी ट्रांसफर ही नहीं हुआ। क्या कारण है इसका? इतना भ्रष्टाचार हो रहा है कि मैंने प्रश्नकाल में प्रश्न भी किया था। माननीय सभापति महोदय, आज सदन को मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रकार का अन्याय हमारे साथ हो रहा है। किसी प्रकार की पेयजल योजना हमारे यहां नहीं है, किसी भी प्रकार की कोई स्कीम नहीं है।

चिकित्सा के क्षेत्र में जाओ, जब शिविर लगे थे तो कई मनोरोगी आये लेकिन मनोरोगियों का डाक्टर शिविर में नहीं आया। आप लेख लिख सकते हो, जिलाधीश कार्यालय से इसकी रिपोर्ट मंगवा सकते हो। खाली चार-पांच प्रमाण पत्र-नामान्तरण, जन्म प्रमाण पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र के अलावा किसी भी प्रकार की शिविरों में प्रोग्रेस हो तो आप ला सकते हो। मंगवा सकते हो, यह मैं क्लीयर कहता हूं। आज के इस भाषण में किसी प्रकार का असत्य वाचन नहीं है। यह जो राज्यपाल महोदय का अभिभाषण है, यह खाली लेखन है। करना क्या है, लिखना क्या है, वह अलग है, मेरा इसका पुरजोर विरोध है। जो भी दिया गया है वह बिलकुल असत्य आश्वासन है, गलत है इसलिये मैं इस अभिभाषण का पुरजोर विरोध करता हूं। धन्यवाद।

श्री सभापति: श्री लालशंकर घाटिया।

श्री लालशंकर घाटिया (डूंगरपुर): परम सम्माननीय सभापति महोदय, दिनांक 15 फरवरी को जो महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा अभिभाषण दिया

(श्री लालशंकर घाटिया)

गया, मैं उसके धन्यवाद प्रस्ताव के पक्ष में समर्थन करते हुए यह कहना चाहूंगा कि राजस्थान की सरकार ने जो काम किये हैं, वे अविस्मरणीय हैं, उनको कभी भूल नहीं सकते हैं। हमारे एक विधायक साहब ने कहा था कि अशोक गहलोत के राज में बरसात नहीं होती, लेकिन, सभापति महोदय, मैं इस मंच पर कहना चाहूंगा कि जिस दिन विधान सभा चालू हुई और हम हमारे गांव से आ रहे थे तो जमकर बरसात बरसी। विधान सभा का सत्र चालू हुआ, इस मौके पर यदि बरसात चालू होती है तो उसको बहुत ही शुभ माना जाता है। हमारे महामहिम राज्यपाल ने जो अभिभाषण पढ़ा, बहुत ही सराहनीय है, मैं इसकी प्रशंसा करता हूं। कभी भी कोई आदमी अपनी गलती को स्वीकार नहीं करता है। आपने अशोक गहलोत जी का राज देखा है और आपका राज भी हमने देखा है। आपने पांच साल के राज में यदि सही काम किये होते तो प्रशासन गांवों के संग अभियान की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन आपने किसी का काम नहीं किया। आपका राज देखो तो एक प्रकार से डिक्टेटरशिप का राज था। मैं इस मौके पर कहना चाहूंगा कि बोलने के लिए तो कई अपने-अपने तरीके से बातें बना लेते हैं। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि हमारी पूर्व मुख्य मंत्री मैडम वसुन्धरा राजे सिंधिया का जब राज था, उस समय मुकदमे ही दर्ज नहीं होते थे। सभापति महोदय, मैं आपको उदाहरण के तौर पर कहना चाहूंगा कि हमारे बिच्छीवाड़े थाने में एफ.आई.आर. नं. 170 दिनांक 9.07.2006 में एक आदिवासी लड़का था, उसने एट्रोसिटी एक्ट का मुकदमा किया था। उसका बाप भी एस.टी. का था, उसकी जमीन पर सवर्ण कास्ट ने कब्जा कर लिया। उस पर कोई मुकदमा दर्ज नहीं हुआ। मजूबर होकर उसने अदालत के दरवाजे खटखटाये तो 156 (सी) में मुकदमा दर्ज कराया। मामला थाने में गया तो उस पर एफ.आर. लग गयी। उसके फर्जी दस्तखत कराकर बैंक से पैसा उठा लिया। उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। किसी भी आदिवासी की जमीन सवर्ण कास्ट के नाम पर नहीं जा सकती है। उसके दो-दो बेटे जीवित थे, लेकिन फर्जी वसीयतनामा लिखकर वह जमीन सवर्ण कास्ट के खाते में चली गयी। उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई।

सभापति महोदय, आज हमारे अशोक जी गहलोत के राज में लोग कितने सुखी हैं, आज आपका काम हो रहा है। अभी प्रशासन गांवों के संग अभियान चलाया, जो काम बहुत लम्बित थे, आपके समय से लम्बित थे- चाहे वह नामान्तरण का हो, चाहे वह खातेदारी का हो, चाहे वह बंटवारे का हो, चाहे

(श्री लालशंकर घाटिया)

वह अलाटमेंट का हो, चाहे वह रेगुलराइज का हो, चाहे विधवा पेंशन हो, चाहे वृद्वावस्था पेंशन हो, चाहे विकलांग पेंशन हो, चाहे नि:शक्तजन हो उनके कार्ड बनाये और उसके आधार पर बसों में जाने के पास भी बनाये। ऐसा सराहनीय काम किया है जो कि आपने कभी नहीं किया था। हमने जो किया है वह आपके सामने है।

सभापति महोदय, हमारा डूंगरपुर क्षेत्र उदयपुर संभाग में आता है, वहां पर बीपीएल परिवार को 2 रुपये किलो गेहूं दिये गये, स्टेट बीपीएल मानते हुए गेहूं देने का किया है। हमारे लोकप्रिय मुख्य मंत्री ने मक्का का बीज दिया था और उसके साथ में खाद भी दिया था, उससे जो भुट्टे पैदा हुए उससे लोगों को बहुत बड़ी राहत पहुंची। मैं इस मौके पर यह भी कहना चाहूंगा कि अभी रबी की फसल में टीएसपी एरिये में चने का बीज दिया गया, उसके साथ में कृषि यंत्र भी वितरित किये गये। जो लोगों में कांग्रेस के प्रति विश्वास है, उस विश्वास पर कांग्रेस खरी उतरी है।

सभापति महोदय, मैं इस मौके पर एक बात और कहना चाहूंगा कि डूंगरपुर विधान सभा क्षेत्र में कई प्रकार के विकास के काम हुए- चाहे वह काम 'ए' श्रेणी का हास्पिटल क्रमोन्नत करने का हो, चाहे वह सीएचसी का हो, चाहे वह पीएचसी खुलने का हो, चाहे वह कृषि विभाग का हो, हमने हर प्रकार के काम किये हैं।

सभापति महोदय, हमारी सरकार ने जो फैसले लिये हैं, वे बहुत ही सराहनीय फैसले हैं। राज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण पढ़ा, वह प्रदेश के और जन-जन के हित में है और इससे राजस्थान का बहुत उत्थान होगा, लोगों को बहुत राहत मिलेगी। आप लोगों ने इसकी बुराइयां की हैं, लेकिन मैं कहना चाहूंगा कि दिल में आपके भी बात तो यही है कि गहलोत जी ने बहुत अच्छा काम किया है लेकिन आपकी मजबूरी है कि आप सच्ची बात नहीं कह सकते हैं।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब समअप करो।

श्री लालशंकर घाटिया (डूंगरपुर): मैं इस मौके पर एक पंक्ति कहकर इस बात को खतम करना चाहूंगा, मेरे विपक्षी भाई यह सोच लें, 'लगा सकें तो बाग़ लगाएं, आग लगाना न सीखें।'

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समअप करो। श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा।

श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा (चाकसू): सभापति महोदय, 15 फरवरी, 2011 को महामहिम राज्यपाल महोदय ने जो 20 पेज का अभिभाषण पढ़ा वह हमने सुना। (व्यवधान) दोनों फ्रंट गिनो तो 40 हैं, लेकिन पेज तो एक ही होगा न। मैं दोनों फ्रंट नहीं गिन रही हूं।

माननीय सदस्यों ने भी अभिभाषण को सुना। महामहिम जी ने अपना फर्ज पूरा किया क्योंकि उनको भाषण पढ़ना था। उनको जैसा लिखकर दिया गया वैसा उन्होंने पढ़ा। मैं इस सदन में यही कहना चाहूंगी कि जो अधिकारियों ने लिख दिया उसको पढ़ लिया, लेकिन कभी महामहिम राज्यपाल जी ने गांव में जाकर देखा भी है कि गांव की जनता का क्या हाल है? उस रोड पर चलकर भी देखा है जिस रोड पर लोग रोजाना आते-जाते हैं, अपना काम-धंधा शहर की तरफ आकर करते हैं, कि वह कैसी रोड है? क्या वे स्कूल भी देखे हैं जहां पर गरीब बच्चों को गरम-गरम पौष्टिक आहार मिलता है? ये अभिभाषण में लिख देते हैं और पढ़ लेते हैं और सत्ता पक्ष के लोग टेबल बजा-बजाकर धन्यवाद देते रहते हैं।

सभापति महोदय, मैं पूछती हूं, आप अपने अंर्तमन से कहना कि जो कांग्रेस की सरकार है उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है क्या? आपके विधान सभा क्षेत्र में किया है? हां, मैं कहती हूं, किया है, 8-8 स्कूलें खुलवायी हैं, जैसा कि एक माननीय सदस्य बोल रहे थे कि मेरे क्षेत्र में 8-8 स्कूलें खुले हैं। पर हमारे क्षेत्र में तो एक भी स्कूल नहीं खुला क्योंकि हम भारतीय जनता पार्टी के विधायक हैं।

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): शिक्षा में राजनीति की बात करते हो।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (मुख्य सचेतक): आपने सिखायी है।

श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा (चाकसू): हास्पिटल की बात करते हैं, चाकसू के हास्पिटल की दुर्दशा देखिये कि वहां मुर्दाघर तक नहीं है। एक खटारा बस के अन्दर डैड बाडी का पोस्टमार्टम होता है। दो साल बीत गये, पहले सत्र में ही मैंने यह कहा था कि वहां पर मुर्दाघर बनाया जाए लेकिन आज तक मुर्दाघर नहीं बना।

सभापति महोदय, पानी की बात करते हैं, बीसलपुर का पानी सैकिण्ड फेज में देने की बात कही थी जो कि आज तक नहीं पहुंचा है। एक माननीय

(श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा)

सदस्य कह रहे थे कि हमारे विधान सभा क्षेत्र में खारे पानी को मीठे पानी में बदलने की एक मशीन लगायी है। मैं कहती हूं, मंत्रीजी, ऐसे कितने विधान सभा क्षेत्र हैं जिनमें खारा पानी है? क्यों नहीं सभी विधान सभाओं में वे मशीनें लगायी गयीं? एक ही विधान सभा में क्यों वह मीठे पानी की मशीन लगायी गयी? क्योंकि वह कांग्रेस के थे और हम भारतीय जनता पार्टी के हैं। मैं पूछती हूं कि वोट तो जनता ही देती है तो फिर यह भेदभाव क्यों है?

सभापति महोदय, राज्य सरकार द्वारा 10 नवम्बर, 2010 से 52 दिन का जो प्रशासन गांवों के संग अभियान चलाया गया, उसमें आम जन की समस्याओं का पंचायत मुख्यालयों पर निपटारा किया गया, उसमें उनकी संख्या बतायी गयी कि 5 लाख 18 हजार 422 नामान्तरण खोले गये, मूल निवास प्रमाण-पत्र बनाये गये, जन्म, मृत्यु प्रमाण-पत्र बनाये गये। मैं पूछती हूं कि दो साल तक क्या किया उन अधिकारियों ने जो 52 दिन में उन्होंने यह काम किया? वह इसलिए नहीं किया दो साल तक कि फिर उनकी जेबें कैसे गरम होंगी? दु:खी आत्मा जो उनके पास काम लेकर आते हैं, उनको कैसे हम दौड़ाएं, उनको कैसे परेशान करें? वे थक-हारकर कुछ हमको दे जाएं जिससे कि हमारी जेबें गरम हो जाएं। क्या कर रहे थे वे अधिकारी दो साल तक जो आपने 52 डेज के अन्दर ही इतने सारे केसेज का निपटारा कर दिया? यह देख रहे थे कि दो साल तक तो हमने जेबें गरम कर लीं, 52 डेज के अन्दर जितने काम हो सकते हैं कर लेते हैं, बाकी तो 3 साल बाद भारतीय जनता पार्टी के राज में काम ही करना है।

मैं बात करती हूं कानून व्यवस्था की, बहुत अच्छी कानून व्यवस्था है। कभी किसी माननीय सदस्य को फरार घोषित करते हैं।

हर किसी ने गुर्जर समाज को एक मजाक बनाकर रख दिया। हर कोई माननीय सदस्य उठता है, कि गुर्जर समाज के लिए हमने यह किया, गुर्जर समाज के लिए हमने वह किया। लेकिन मैं पूछना चाहती हूं कि गुर्जर समाज के लिए किया क्या आपने? एक माननीय सदस्य बोले, दो माननीय सदस्य बोले लेकिन सबके मुंह पर गुर्जर समाज के आंदोलन की रट है। मैं तो आपसे यही कहूंगी कि आप लोगों को क्या एक टाइप किया हुआ पेपर दे दिया गया है कि आप सबको यही पढ़ना है और पढ़कर धन्यवाद देना है कि हम राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद देते हैं?

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समअप करें।

श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा (चाकसू): मैं एक बात और कहना चाहूंगी, एक पुरानी कहावत है, 'विष दे, विश्वास न दे'। यह कहावत पूरी तरह गुर्जर समाज को इंगित करती है, क्योंकि गुर्जरों को कुछ नहीं दिया। अगर विष दे देते तो कम से कम एक बार रो कर तो बैठ जाते, बार-बार रोना तो नहीं पड़ता उनको।

माननीय सभापति महोदय, मैं कानून व्यवस्था की बात करना चाहती हूं, इन्होंने लिखा है कि प्रशिक्षण के लिए 100 करोड़ रुपए सरकार देगी। किस बात का प्रशिक्षण? क्या पुलिस में भर्ती होने के लिए वे प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करते हैं? क्या उनकी ट्रेनिंग नहीं होती है? 100 करोड़ रुपए का आप जो बजट लेकर आए हैं प्रशिक्षण का, उसमें किस तरह का प्रशिक्षण होगा? उनका प्रशिक्षण तो पहले ही पुलिस फोर्स में हो जाता है। हां, प्रशिक्षण हो रहा है अधिकारियों को चाय बनाने का, कप प्लेट, बिस्किट, नमकीन उनके आफिस में पहुंचाने का, उनके घरों में साफ-सफाई करने का, उनके कपड़ों को प्रेस करके गाड़ी में ले जाने का, उनके बच्चों को घुमाने का। यह प्रशिक्षण तो आपके उसमें मिल रहा है।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समाप्त करें।

श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा (चाकसू): माननीय सभापति महोदय, कमाल है, मैं लास्ट वक्ता हूं और पुलिस प्रशिक्षण पर बोल रही हूं।

श्री नरपत सिंह राजवी (विद्याधर नगर): प्रशिक्षण बीच में रोक दिया फिर आधा अधूरा रह जाएगा काम, फिर धारीवालजी कैसे संतुष्ट होंगे?

श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा (चाकसू): मेरे विधान सभा क्षेत्र की बात कर रही हूं, वहां कुछ गुण्डे एक ही परिवार के आदमियों को मार-पीट कर चले जाते हैं और पुलिस उनको ढूंढ नहीं पाती है। उनका कसूर यह था कि एक गरीब चाय वाले से वे मारपीट कर रहे थे तो उन्होंने उसे बचाया था। उन गुण्डों ने उस चाय वाले को तो छोड़ा और उनके घर में घुस कर जितने भी आदमी औरतें थीं, उन सबको मारा पीटा। दो जनों के सिर में चोटें आईं, हाथों में चोटें आईं, एक का पैर फ्रैक्चर हो गया जो अब तक जयपुर हास्पिटल में पड़ा है। लोग बात कहते हैं कि यह सीआई जो चाकसू का है, गुण्डे डेली वहां नॉन वेज

(श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा)

वगैरह की पार्टी करते हैं, उनके क्वार्टर पर पार्टी की शोभा उन गुण्डों द्वारा बढ़ाई जाती है। तो इस तरह की है आपकी कानून व्यवस्था।

नरेगा की बात करें। नरेगा को मैं कहूंगी मरेगा। जो आदमी एक दिन में 150 रुपए कमाता था, उस आदमी को 20-20 रुपए मिलते हैं। घर के पास में उनको मजदूरी का मौका मिल जाता है, वे खुदाई करने जाते हैं जिसमें औरतें और आदमी दोनों होते हैं, आदमी तो ताश खेलने बैठ जाता है और औरत मिट्टी खोदती है। जब एमबी भरी जाती है, उसकी नाप होती है तो कम निकलती है, काम तो आदमी नहीं करता है और पैसे औरतों के कटते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि कभी 20 रुपए, कभी 30 रुपए मजदूरी उनको मिलती है। एक आदमी बाहर जाकर मजदूरी करता है तो एक दिन के 150-200 रुपए कमाता है। आप बताओ कि क्या 20 रुपए में वह खाएगा, क्या बच्चों का पेट पालेगा और क्या घर बनाएगा?

इतनी महंगी कर दी कि बिजली करंट मारती है। रात में बिजली देते हैं। खेतों में काम करने वाला व्यक्ति यदि रात को बिजली आएगी तो क्या होगा, अंधेरे में कोई गलत तार टच हो जाएगा तो करंट लगेगा और वहीं पर वह आदमी मर जाएगा। ऐसी घटना मेरे विधान सभा क्षेत्र चाकसू में हुई है क्योंकि अंधेरे में रात में बिजली देते हैं और वह भी एक-दो घण्टे।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अब आप समअप करें।

श्रीमती प्रोमिला कुण्डारा (चाकसू): ठीक है, माननीय सभापति महोदय, आप ज्यादा बोलने तो नहीं देंगे लेकिन अंत में मैं यह कहना चाहूंगी और धन्यवाद देना चाहूंगी महामहिम राज्यपाल महोदय को कि उन्होंने अभिभाषण पढ़ा और 20 पेज का अभिभाषण पढ़ा। उन्होंने जो टाइम लिया उसमें एक बार भी पानी नहीं पीया जबकि लास्ट में उनके गले में खराश हो गई थी उसके बावजूद भी पानी नहीं पीया क्योंकि उन्हें पता था कि राजस्थान में पानी की भयंकर समस्या है। धन्यवाद।

श्री सभापति: श्री बाबूलाल खराड़ी। (अनुपस्थित)

श्री पदमारामजी मेघवाल।

श्री पदमाराम (चौहटन): माननीय सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा 15 तारीख को जो अभिभाषण दिया गया है, उसके पक्ष

(श्री पदमाराम)

में मैं दो पंक्तियां बोलना चाहता हूं। आज से दो साल पहले राजस्थान में कांग्रेस की सरकार बनी, राजस्थान की जनता ने मुख्य मंत्री माननीय अशोक जी गहलोत साहब को बहुमत दिया और शासन की बागडोर उन्होंने सम्भाली। उन्होंने गांव, गरीब, किसान, अल्पसंख्यक, विधवा, नि:शक्त जन के लिए योजनाएं बनाईं। उनकी कार्य शैली है, आम जनता को सुविधाएं किस आधार पर मिलें, सर्व समाज का विकास हो, इसके लिए कार्य योजना बनाकर महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण को तैयार किया। विपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा इसे झूठ का पुतला बताया गया। असत्य बोलने के लिए मजबूर कर रहे हैं, यह बताया गया। परन्तु यह इनका धर्म है, इनको तो प्रशंसा करने की आदत नहीं होगी, कांग्रेस की प्रशंसा करेंगे तो इनको दु:ख होगा, जनता में जाकर क्या दिखाएंगे! यदि कांग्रेस की प्रशंसा होगी, अशोक जी गहलोत की प्रशंसा होगी तो इनको कौन पूछेगा इसलिए इनकी यह भावना है और यह इनका अधिकार भी है। इसे झूठ का पुतला कहें, कुछ भी कहें, पर राजस्थान की 6 करोड़ जनता देख रही है कि पिछले दो साल में राजस्थान का चहुंमुखी विकास हुआ है हर क्षेत्र में शांति रही है। हमारी बहन अभी फरमा रही थीं कि यहां से 30 किलोमीटर दूर चाकसू में मुर्दाखाना नहीं है। तो आपने पांच साल तक तो वाहवाही लूटी कि हमारी सरकार ने राजस्थान में विकास की गंगा बहा दी, राजस्थान में कोई चीज की कमी नहीं रही। आपके राज में कुछ कमी नहीं रही तो मुर्दाखाना भी नहीं बनाया, क्या किया आपने?

श्री रोहिताश कुमार (बानसूर): जरूरत ही नहीं थी।

श्री पदमाराम (चौहटन): जरूरत नहीं थी तो अब कहां जरूरत पड़ गई? पहले जरूरत ही नहीं थी तो अब कहां पड़ गई? दूसरे माननीय सदस्य फर्मा रहे थे कि रोडों की हालत इतनी दयनीय है कि हमारे यहां रोडें बिलकुल हैं ही नहीं। माननीय सदस्य राठौड़ साहब विराजे हैं, जब यह पीडब्ल्यूडी मंत्री थे, उन्होंने इनके क्षेत्र में तो रोडें बनाई होंगी। उनके अन्दर रोड्स की कोई कमी आई ही नहीं होगी परन्तु दो साल में रोड कहां गई? उसके अन्दर आपने गुणवत्ता का चैक नहीं किया। दूसरों के ऊपर दोष लगाना आपका परम धर्म है। आप तो प्रशंसा चाहते हैं, बहुत बड़ी प्रशंसा कर दी, चींटियों का विकास कर दिया, पूंजीपतियों का विकास कर दिया। हमेशा बात करते हो कि किसानों के साथ अन्याय हो रहा है, दलितों के साथ अन्याय हो रहा है, गरीबों के साथ अन्याय हो रहा है, आपने तो गरीबी देखी ही नहीं, क्या अन्याय होगा?

(श्री पदमाराम)

(व्यवधान) आपने गरीबी देखी ही नहीं है। आप महानुभाव यहां विराजमान हैं, उनमें से 50 परसेंट लोग गांवों के अन्दर जाते ही नहीं हैं, चुनाव के समय जाते हैं और अपने विशेष लोगों का दबाव डलवाकर जीतकर आ जाते हैं। आज गांव का गरीब, एक झोंपड़ी में रहने वाला आदमी, उसके साथ क्या समस्या है, उनका अधिकार किस तरह से होगा, उनको न्याय कैसे मिलेगा, ये हमारे दो भाई जो मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी वाले हैं, ये जरूर शोर करते हैं, पेमाराम जी हमेशा चिल्लाते हैं कि गरीबों के साथ अन्याय हो रहा है, उनकी सेवा करें, पर आपको तो आपकी वाहवाही लूटनी है कि हमने यह कर दिया। आपको अभी तक जो राजभोग की, कुर्सी की इच्छा है, अभी तक आपके दिल से गई नहीं। (व्यवधान) मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे राज के अन्दर आम जन, गरीब को किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं है। मैं मेरे क्षेत्र की बात कर रहा हूं। आपके यहां तो हमेशा डाके लगते होंगे, झगड़े होते होंगे। हमारा क्षेत्र तो पाकिस्तान की बार्डर पर ही है, यहां से साढ़े सात सौ किलोमीटर है, वहां का हर किसान, हर गरीब सुखी है, किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं है। किसी प्रकार का दो साल के अन्दर कोई झगड़ा नहीं है, कोई टंटा नहीं। आपका रवैया ही यही है कि झगड़ा टंटा कराएं, सरकार को बदनाम करें और सरकार का लोगों के अन्दर यह मैसेज जाए, यह आतंक जाए कि वापस जनता कांग्रेस से रूठ जाए और हमारे पास आ जाए। विद्युत के क्षेत्र में हमारे विपक्ष के माननीय सदस्य महोदय यह कह रहे हैं कि हमारे यहां बिजली चार घंटे आ रही है, तीन घंटे आ रही है, रात को बिजली क्यों दें, रात को बिजली के लिए किसान को 24 घंटे वहां बैठना पड़ेगा, बिजली के पास बैठना पड़ेगा। मैं कह रहा हूं, मेरा क्षेत्र यहां से साढ़े सात सौ किलोमीटर है, वहां किसान को रात को सात घंटे और दिन को छह घंटे बिजली मिलती है, मैं दावे के साथ कह रहा हूं। दो सालों के अन्दर हमारे यहां दो सौ किसानों को कृषि कनेक्शन मिला है और सबसे ज्यादा अच्छी फसल हमारे क्षेत्र में हुई है। मैं यहां हमारे माननीय लोकप्रिय मुख्य मंत्री को धन्यवाद देना चाहता हूं कि कनेक्शन उन्होंने दिये हैं, समय पर सामान दिया है इसलिए आज लोगों के रोजगार का साधन बन गया है।

दूसरा मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे भाई, हमारे पड़ोसी छोटूसिंह जी, बाबूसिंह जी कह रहे थे, इनके दिल के ऊपर हाथ रखकर कहें कि प्रशासन गांवों के अन्दर काम नहीं हुआ, तो कुछ नहीं हुआ। परन्तु आपकी आत्मा सही कहने के लिए उचित ही नहीं है, मानती ही नहीं है। सही कह दोगे

(श्री पदमाराम)

तो आप क्या कहोगे जनता के अन्दर जाकर? सही बात आप हमारी प्रशंसा कर देंगे, हमारी सरकार की, माननीय लोकप्रिय मुख्य मंत्रीजी की प्रशंसा कर देंगे तो आप जनता में जाकर क्या कहेंगे, इसलिए आपका धर्म है कि जोरदार हमारा विरोध करो। आपके विरोध के अन्दर हम अच्छा काम करेंगे, आपकी यह सफलता है। लेकिन आप जो चाहते हो, वह हम आपको कभी हासिल नहीं करने देंगे। प्रशासन गांवों के संग में उन आदमियों का काम हुआ। वास्तव में, आप कह रहे हैं वह काम नहीं हुआ, यह मैं मानता हूं क्योंकि आपका तो काम था ही नहीं, आप तो बहुत पूंजीपति हो। पूंजीपतियों का गरीबों के अन्दर क्या काम होता है? प्रशासन गांवों के संग में क्या काम होता है? बलवान आदमी होता है, साधन सम्पन्न होता है, उसके तो काम हो जाते हैं। परन्तु आम जन, गरीब है, उसको तो एक चपरासी भी आफिस में ही नहीं घुसने देता है। आपका भी राज देख लिया......(व्यवधान) घंटी से आपको तकलीफ हो रही है तो मैं बैठ जाऊं? आप हमारे पड़ोसी हो, मैं कहता हूं कि आम जन है, गरीब आदमी है, उसका काम इन शिविरों के अन्दर बहुत हुआ है। (व्यवधान) बाबूसिंह जी यह कह रहे हैं। अभी छोटूसिंह जी फर्मा रहे थे कि कुछ काम नहीं है। प्रमाण पत्र बनाना, छोटूसिंह जी, एक गरीब आदमी के लिए बहुत मुश्किल है। हमारे लोकप्रिय मुख्य मंत्री ने प्रमाण पत्र के अन्दर जो स्टाम्प ड्यूटी थी, वह खतम की। नियमन का काम हुआ, बंटावारे का काम हुआ। कई सालों से पड़ा था, मेरे विधान सभा क्षेत्र में एक गांव कापरेन उसके अन्दर 150 आदमियों को हमने खातेदारी हक दिलाया। आज से पहले कभी नहीं मिला। हमारी बहन फरमा रही थीं जेब भरने के लिए, जेब तो पहले ही बहुत भरी हैं। आपके राज के अन्दर बिना पैसे कोई काम होता ही नहीं था, मैं दावे के साथ कह रहा हूं। गरीब आदमी का आपके पास आकर मिलना बहुत मुश्किल था, एक एमएलए के पास आदमी नहीं पहुंच सकता था तो मंत्री और मुख्य मंत्री के पास पहुंचने का सवाल ही नहीं। हमारे क्षेत्र के अन्दर सौतेला व्यवहार हुआ है आप शिक्षा के लिए, हमारे क्षेत्र के अन्दर ऐसी जगह है, एक मुसलमानों का गांव है, उसके अन्दर 10 सालों से पांचवीं स्कूल है, साढ़े चार सौ बच्चे आ रहे हैं। कई ढाणियां हैं जहां 10-10, 15-15 बच्चे हैं, वहां आठवीं तक स्कूलें कर दीं आपने, क्योंकि वे आपके चहेते थे, आपकी पार्टी के थे। हमारी पार्टी के अन्दर हमने कभी किसी से सौतेला व्यवहार नहीं किया। हमारे माननीय लोकप्रिय मुख्य मंत्रीजी आपकी बात हमेशा सुनते हैं, हमेशा प्रेम से आपके काम करते हैं ...... (व्यवधान)

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): उस समय कौन थे मुख्य मंत्री?

श्री पदमाराम (चौहटन): हां, जी।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): आज से सात साल पहले यही मुख्य मंत्री थे, उन्होंने तो भेदभाव नहीं मिटाया। (व्यवधान)

श्री पदमाराम (चौहटन): हम तो नये आये हैं, आप तो चार बार जीतकर आये हो तो आपका विकास कैसे नहीं हुआ? (व्यवधान)

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): ऐसी कोई बात नहीं है, ...(व्यवधान) अभी तो जेब नहीं भर रही है, अभी तो एक लाख 76 हजार करोड़ रुपये से कोल भर रही है।

श्री पदमाराम (चौहटन): परन्तु अभी मेरी विधान सभा क्षेत्र के अन्दर 29 ऐसी स्कूलें हुईं, जो अनुसूचित जाति ......(व्यवधान)

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): अब तो जेब नहीं भर रही है, अभी तो 1 लाख 76 हजार करोड़ से कोल भर रही है ......(व्यवधान)

श्री पदमाराम (चौहटन): उसी के स्थान पर हुई है।

श्री अमराराम (दांतारामगढ़): अब तो जेब नहीं भरती कांग्रेस, 1 लाख 76 हजार करोड़, दो लाख करोड़ से कोल भरती है। जेब नहीं भरती। (व्यवधान)

श्री पदमाराम (चौहटन): शिक्षा के अन्दर आप कह रहे हैं, स्कूलों के अन्दर मास्टरों की कमी है, स्कूलें हमारी खाली हो गईं। आपने स्कूलों के अन्दर मास्टर गांवों में छोड़े ही नहीं। शिक्षा के अन्दर अपने सगे संबंधियों को किसी भी आधार पर गांवों के अन्दर भेज दिया, एक ही स्कूल के अन्दर 27-27, 28-28 टीचर बैठे हैं। हमारे मंत्रीजी ने समानीकरण की योजना बनाई लेकिन क्योंकि वह एससी के हैं, हमेशा विरोध कर रहे हैं कि उन्होंने यह गलत काम कर दिया। भंवरलाल जी ने यह कर दिया। बाबूलाल नागर ने यह कर दिया। क्योंकि वे गरीब लोग हैं, उनका तो आप विरोध करोगे। आपने क्या किया? आपके राज के अन्दर आपने क्या किया? उसकी आप बात नहीं कर सकते हो क्योंकि आप पूंजीपति हो, आप सम्पन्न लोग हो। गरीबों के बारे में बोलने की आपकी हिम्मत नहीं होती है, गरीबों को बदनाम करने के लिए आपकी हिम्मत होती है। बाबूसिंह जी बोले कि हमारे क्षेत्र के अन्दर शराब का जाल बिछा दिया, शराबियों को पनपा दिया, बड़ी-बड़ी अवैध कम्पनियां लगा दीं। बाबूसिंह जी, बड़ी कम्पनी लगाने के लिए पैसों की जरूरत होती है और

(श्री पदमाराम)

पैसे तस्करों, गुंडा। और बदमाशों के पास होते हैं, गरीबों के पास नहीं होते हैं। कांग्रेसी सब गरीब हैं, उनके पास पैसे नहीं हैं। दो साल के अन्दर आपने शराब माफियाओं को पनपाया है, दो साल के अन्दर आपने जो फैक्ट्रियां लगाई हैं, उनको बंद करने में हमको समय लगेगा। हम कोशिश कर रहे हैं और आपको विश्वास दिलाते हैं कि आने वाले समय के अन्दर शराब से किसी की मृत्यु नहीं होगी ......(व्यवधान)...

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): ये तो मर जाएंगे, उसके बाद?

श्री पदमाराम (चौहटन): माननीय सभापति महोदय, मैं आपको नरेगा के अन्दर थोड़ा निवेदन करना चाहता हूं कि हमारा सीमावर्ती क्षेत्र है।

श्री हनुमान बेनीवाल (खींवसर): बहुत अच्छा बोल रहे हैं, बोलने दो इनको।

श्री पदमाराम (चौहटन): लोग बार्डर पर रहते हैं, गुजरात का बार्डर हमारे नजदीक है, एससी, एसटी और अल्पसंख्यक लोगों को हमेशा मजदूरी करने के लिए गुजरात जाना पड़ता है क्योंकि राजस्थान के अन्दर लगातार अकाल ही पड़ता है। अभी नरेगा योजना आई, लोगों की उम्मीद जगी और सब लोगों ने अपने घर में रहना स्टार्ट कर दिया। उन्हें घर के अन्दर मजदूरी मिलनी स्टार्ट हो गई। हमारे बाड़मेर के अन्दर 44 हजार टांके बने और आज की तारीख में 90 प्रतिशत भरे हुए पड़े हैं जिससे लोगों की पानी की किल्लत मिटी। भारत सरकार ने हमारे माननीय कलक्टर साहब को सम्मानित किया। नरेगा जो उद्देश्य लेकर आई थी, वह उद्देश्य साकार हो रहा है। हमारी माननीया सोनिया गांधी जी, राहुल गांधी जी और माननीय मनमोहन सिंह जी की भावना है, महात्मा गांधी जी ने जो सपना देखा था...

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): टांकों में कितने खाये और कितने लगाये, यह बताएं। (व्यवधान)

श्री पदमाराम (चौहटन): आप क्या फर्मा रहे हो, मुझे पूछो, मैं जवाब देता हूं आपको। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : राजा को भी सम्मानित किया है।

श्री पदमाराम (चौहटन): मैं निवेदन करना चाहता हूं कि नरेगा के अन्दर जो काम हुए हैं वो बहुत अच्छे हुए हैं, लोगों को रोजगार का अच्छा साधन मिला है।

(श्री पदमाराम)

अब मैं निवेदन करना चाहता हूं मुख्य मंत्री अन्न सुरक्षा योजना, जब इनका राज था, वितरण व्यवस्था के अन्दर गाड़ियां भर-भरकर गुजरात जा रही थीं, हम उधर देख रहे थे। केरोसिन के टैंक के टैंक बिक रहे थे, हम देख रहे थे, पर कोई सुनने वाला नहीं था। गरीब की हैसियत नहीं थी कि जाकर डीलर से कहे कि हमारी कंट्रोल हमें दे। यह पोजिशन थी। बाबूसिंह जी अपने सिर पर हाथ लगाकर, छाती के ऊपर हाथ लगाकर कहें, मैं सामने रहकर कहता हूं कि यह बात सच्ची है या झूठी है। हमारे लोकप्रिय माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो योजना चलाई....

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): छाती किसकी होती है और सीना किसका होता है, यह आप बताएं। (व्यवधान)

श्री पदमाराम (चौहटन): वह सीना हो या छाती हो, पर गलत है क्या? (व्यवधान) टेंशन मत करो। हमारे माननीय मुख्य मंत्रीजी ने गरीबों के उस दर्द को देखा, सुना और उनकी भावना हुई दो रुपये किलो गेहूं देने की। हर 15 तारीख से लेकर 21 तारीख तक दुकानें खुलनी स्टार्ट हो गई हैं, आज कालाबाजारी रुक गई है और हर गरीब के घर 25 किलो गेहूं 50 रुपये में जा रहा है। बहुत अच्छी योजना है, मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा।

बीपीएल योजना जो है, अभी माननीय सदस्य फर्मा रहे थे कि जयपुर के अन्दर कच्ची बस्तियों में एससी, एसटी का बुरा हाल है। अभी ये प्रशंसा कर रहे हैं, बात कर रहे हैं कि एससी, एसटी वाले वोट देंगे। आप मेयर थे उसी वक्त आपने उन गरीब बस्तियों में क्यों नहीं बनाया? पक्के मकान बना देते, उनको पट्टे दे देते। गरीब आदमियों की जमीन आपने कौड़ी के भाव खरीदकर उनको धकेल कर बाहर निकाल दिया। वो दिन आप क्यों भूल गये? आपके तो बंगले बन गये पर उन गरीबों के क्यों नहीं बने? 2002 के अन्दर बीपीएल का सर्वे हुआ था परन्तु उसका अनुमोदन 2004 के अन्दर हुआ, आपकी मेहरबानी हुई, आपके चहेतों के नाम लिखे। 300-300 बीघा जमीन वालों को चयनित किया और आम गरीब जो बिलकुल गरीब है जिसके बैठने के लिए घर नहीं है, जमीन नहीं है, उसको बीपीएल से वंचित कर दिया। (व्यवधान) सर्टिफिकेट देने का आपको अधिकार दिया इसलिए आपको सर्टिफिकेट मिल गया और मिलेगा। फिर हमारे माननीय मुख्य मंत्रीजी ने बीपीएल और स्टेट बीपीएल परिवारों के लिए मुख्य मंत्री जीवन सुरक्षा योजना लागू की। आज की तारीख में मैं आपको

(श्री पदमाराम)

विश्वास दिलाना चाहता हूं, यहां से साढ़े सात सौ किलोमीटर दूर मैं रहता हूं, वहां के 20 आदमियों का हार्ट का आपरेशन मुख्य मंत्री सहायता कोष से हुआ है और 60 हजार लोगों का इलाज हुआ है। एक लाख से लगाकर 5 लाख तक का खर्चा हमारी सरकार वहन कर रही है। आप कह रहे हैं कि यह तो कुछ ही नहीं है, यह तो होना ही नहीं चाहिए। आप अपने दिल पर हाथ रखकर आईने में झांककर देखो। हमारी सरकार प्रगति कर रही है, आमजन की सरकार है, किसानों की सरकार है, गरीब की सरकार है और हमेशा सब का हित किया है, हम किसी का बुरा नहीं चाहते। (व्यवधान)

श्री पवन कुमार दुग्गल (अनूपगढ़): फिर मुख्य मंत्रीजी के पास क्या रहेगा जवाब देने के लिए, सारा जवाब तो आप ही दे रहे हो।

श्री पदमाराम (चौहटन): हमारे जवाब देने के लिए, पवन जी, कुछ नहीं है। हम तो आपको सुना रहे हैं, आप तीन दिन से लगातार फरमा रहे हैं कि कुछ नहीं किया, झूठ का पुतला है। दूसरी बात, अभी माननीय सदस्य फरमा रहे थे....

श्री सभापति: समअप करो, माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, समअप करो।

श्री पदमाराम (चौहटन): गुर्जर आंदोलन, कुछ नहीं किया गुर्जरों ने। हेमसिंह जी फर्मा रहे थे कि हमारी सरकार ने गुर्जरों के लिए सब कुछ कर दिया। तो फिर आंदोलन करने की जरूरत ही क्या थी जब सब कुछ हो गया था, कुछ होना बाकी था ही नहीं? आपकी सब सुविधा मान ली, आपकी सब मांगें मान लीं तो 20 दिन तक....

श्री सभापति: अब आप समअप करो, माननीय सदस्य।

श्रीमती अनीता सिंह (नगर): माननीय सभापति महोदय, एक जाति को लेकर बात कर रहे हैं, आप इनको इस बात के लिए रोकिये।

श्री पदमाराम (चौहटन): बहन, आप भी दूसरी जातियों का, हमारी दूसरी जातियों का कहें तब आपको तकलीफ क्यों नहीं हुई? (व्यवधान)

श्रीमती अनीता सिंह (नगर): नहीं, आप इस तरह से नहीं बोल सकते। तकलीफ है, हम गुर्जर हैं इसलिए हमें तकलीफ है, आप नहीं समझ सकते इस बात को।

श्री पदमाराम (चौहटन): हम भी एससी, एसटी के हैं, हमको भी तकलीफ हुई। अभी ग्यारसाराम जी फरमा रहे थे....

श्रीमती अनीता सिंह (नगर): आप इस तरह से नहीं कह सकते, यह गलत बात है।

श्री सभापति: आप तो विराजो, माननीय सदस्या।

श्री पदमाराम (चौहटन): ...कि ये भ्रष्टाचार में बैठे हैं, उस समय आप क्यों नहीं बोले? (व्यवधान) ये सब बैठे हैं भ्रष्टाचार के....(व्यवधान) उस समय आप नहीं बोले।

श्रीमती अनीता सिंह (नगर): गुर्जरों के लिए नहीं बोलेंगे, और कुछ भी बोलें।

श्री पदमाराम (चौहटन): महिला कुछ भी बोल सके, यह इनको माफ है, कुछ भी कर सकते हैं।

श्री ग्यारसा राम कोली (बयाना): मैंने व्यक्तिगत कुछ नहीं कहा था, आपके सुनने में, आपके कान में यह बात आई तो सुधार कर लें अपने आपको। (व्यवधान)

श्री पदमाराम (चौहटन): ....इसलिए महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा जो अभिभाषण पढ़ा गया, इसकी पुरजोर शब्दों में मैं प्रशंसा करता हूं, धन्यवाद देता हूं। जय हिन्द।

श्री सभापति: सदन की बैठक बुधवार दिनांक 23 फरवरी, 2011 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही 15.46 बजे बुधवार, दिनांक 23 फरवरी, 2011 के 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)